



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गोवाद्रि

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

हमारा मध्य प्रदेश

“भारत का हृदय” नाम से सुप्रसिद्ध मध्य प्रदेश हमारे देश का एक अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। इस राज्य का इतिहास, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और यहाँ के लोग इसे भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थलों में से एक बनाते हैं। इसकी राजधानी भोपाल है, जो झीलों के शहर के नाम से प्रसिद्ध है। 1 नवंबर, 2000 तक मध्य प्रदेश क्षेत्रफल के आधार पर भारत का सबसे बड़ा राज्य था, जो छत्तीसगढ़ में बंटने के कारण वर्तमान में भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। यह भारत के उन चुनिंदा राज्यों में से एक है, जो चारों तरफ से दूसरे राज्यों से घिरा हुआ है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश है, पश्चिम में राजस्थान और गुजरात, दक्षिण में महाराष्ट्र और पूर्व में छत्तीसगढ़ है। खनिज संसाधनों से समृद्ध मध्य प्रदेश हीरे और तांबे का सबसे बड़ा भंडार है। राज्य का 30 प्रतिशत से अधिक भाग वन क्षेत्र के अधीन है। मध्य प्रदेश में छह लोक संस्कृतियों यथा निमाड़, मालवा, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, महाकौशल तथा ग्वालियर (चंबल) का समावेशी संसार है। राज्य में कुल 52 जिले हैं, जो विविधता में एकता का अनुपम उदाहरण है।

मध्य प्रदेश राज्य के भव्य स्वरूप को शब्दों में उतार पाना अत्यंत दुष्कर कार्य है। इसकी दिव्यता एवं विविधता शब्दों के संसार से परे है। तथापि देशवासियों के समक्ष इसके स्वरूप को प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयास आपके सम्मुख है जो निस्संदेह ही आपको मध्य प्रदेश खींच लाएगा। आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है, ‘भारत का हृदय’ मध्यप्रदेश एक नज़र में ...



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गोवाङ्गी

रजत जयंती विशेषांक 2020-21

संरक्षक

डी. साहू

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

मध्य प्रदेश, ग्वालियर



प्रकाशक

जितेन्द्र तिवारी

उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादक

स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

संजीव कुमार झांजी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

हरिओम कुमार

कनिष्ठ अनुवादक
हिंदी कक्ष

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं, उनसे कार्यालय अथवा संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

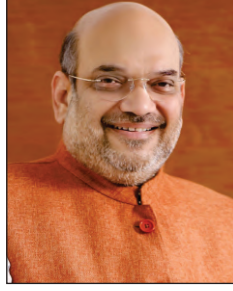
अपना लेख एवं सुझाव वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी कार्यान्वयन कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्य प्रदेश, ऑडिट भवन, झांसी रोड, ग्वालियर - 474002 को भेजें।

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना/लेख/व्यंग्य	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश		
2.	प्रकाशकीय		
3.	संपादकीय		
4.	लैंगिक समानता लाने में तकनीक का उपयोग	सुश्री मोना जैन	1
5.	शिक्षा दोहावली	श्रीमती मंजू पगारिया	3
6.	जिंदगी	अखिलेश चंद्र वाजपेयी	4
7.	आशाएं	कु. जानिशा साहा	5
8.	नारी	हरिओम कुमार	6
9.	मेरी प्यारी माँ	एन.के. त्रिपाठी	7
10.	भारत का हृदय-मध्य प्रदेश	अर्चना मानव	8
11.	सार्वजनिक दुराचार और अंतर्द्वन्द्व	दीपक पाठक	9
12.	ई-ऑफिस में हिन्दी में कार्य	धनंजय कुमार	10
13.	सफल जीवन के लिये 12 आदतें	प्रफुल्ल त्रिपाठी	12
14.	भोजपुर मंदिर (विशालतम शिवलिंग)	श्रीमती सारिका शर्मा	16
15.	दतिया का प्रसिद्ध सतखंडा महल और उससे जुड़ी कुछ रोचक बातें	अनुशील जौहरी	18
16.	ओरछा	शाहमीर खान	20
17.	तीर्थों का राजा चित्रकूट	सृष्टि सिंह	24
18.	पचमढ़ी “सतपुड़ा की रानी”	अभिषेक त्रिपाठी	28
19.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) ग्वालियर	-	30
20.	कल्याण शाखा की गतिविधियां	-	32

मध्य प्रदेश एक नजर में...

क्र.	जिला	पृष्ठ संख्या	क्र.	जिला	पृष्ठ संख्या
21.	बैतूल	- 34	50.	नरसिंहपुर	- 92
22.	भोपाल	- 36	51.	सिवनी	- 94
23.	हरदा	- 39	52.	अनूपपुर	- 96
24.	होशंगाबाद	- 41	53.	रीवा	- 98
25.	रायसेन	- 43	54.	सतना	- 100
26.	राजगढ़	- 45	55.	शहडोल	- 102
27.	सीहोर	- 47	56.	सीधी	- 103
28.	विदिशा	- 49	57.	सिंगरौली	- 104
29.	अशोकनगर	- 51	56.	उमरिया	- 105
30.	भिण्ड	- 52	57.	छतरपुर	- 107
31.	दतिया	- 54	58.	दमोह	- 109
32.	गुना	- 56	59.	निवाड़ी	- 111
33.	ग्वालियर	- 58	60.	पन्ना	- 112
34.	मुरैना	- 61	61.	सागर	- 114
35.	श्यामपुर	- 63	62.	टीकमगढ़	- 116
36.	शिवपुरी	- 64	63.	आगर मालवा	- 118
37.	अलीराजपुर	- 66	64.	देवास	- 119
38.	बड़वानी	- 67	65.	मंदसौर	- 121
39.	बुरहानपुर	- 68	66.	नीमच	- 123
40.	धार	- 70	67.	रतलाम	- 124
41.	इंदौर	- 72	68.	शाजापुर	- 126
42.	झाबुआ	- 75	69.	उज्जैन	- 128
43.	खंडवा	- 77	70.	सेवानिवृत्ति/नियुक्ति	- 130
44.	खरगोन	- 78		सारणी (2020-21)	
45.	बालाघाट	- 80	71.	आपके अभिमत, आपके पत्र-	131
45.	छिंदवाड़ा	- 82			
46.	डिंडोरी	- 84			
47.	जबलपुर	- 86			
48.	कटनी	- 88			
49.	मंडला	- 90			



गृह मंत्री
भारत सरकार

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र., ग्वालियर द्वारा अपनी कार्यालयीन पत्रिका “गोपाद्री” के रजत जयंती विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका के 25वें अंक को मध्य प्रदेश की स्थापत्य कला एवं ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहरों के साथ विषय आधारित करना सराहनीय पहल है। भारत विविधताओं का देश है। अतः भारत की विविध संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के मोतियों को एक सूत्र में पिरोने के लिए किसी एक भाषा को राज—काज की भाषा बनाना अनिवार्य था। इस कार्य के लिए किसी ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो अपने आप में देश की समग्र विविधताओं को समाहित कर सके। यही कारण था कि भारत के संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा का सम्मान प्रदान कर अंगीकार किया गया और हम इस उद्देश्य में सफल भी हो रहे हैं।

शासकीय कार्यालयों में हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी का प्रचार—प्रसार बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। कार्यालयीन पत्रिका किसी भी कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखन रचनात्मकता को प्रदर्शित करने का एक बहुमूल्य मंच प्रदान करती है, जिससे उनकी सकारात्मक विचारों की अभिव्यक्ति को बल मिलता है और साथ ही राजभाषा हिंदी के उत्थान का पथ भी प्रशस्त होता है।

मैं, प्रकाशक मंडल को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा कार्यालयीन पत्रिका “गोपाद्री” के रजत जयंती विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

मंगल कामनाओं सहित,



(अमित शाह)



शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

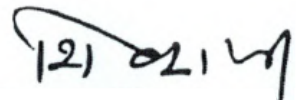
संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग, ग्वालियर द्वारा कार्यालयीन पत्रिका “गोपाद्री” के रजत जयंती विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का समावेश किया जा रहा है जो अनुकरणीय है।

राजभाषा हिंदी हमारे देश की गौरवशाली संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिंब है। राजभाषा हिंदी का सम्मान एवं उसके प्रति प्रेम की भावना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। लेखापरीक्षा और लेखा विभाग द्वारा अपने कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि एवं जागरूकता उत्पन्न करने के साथ-साथ उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से गत 25 वर्षों से हिंदी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन सराहनीय है। आशा है कि विभाग इसी सजगता के साथ भविष्य में भी राजभाषा के उत्थान के लिए कटिबद्ध रहेगा और हिंदी भाषा को अपनी कार्यप्रणाली का प्रमुख अंग बनाए रखेगा।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों, धरोहरों से जन-जन को परिचित करवाने में सहायक सिद्ध होगी।

हार्दिक शुभकामनाएं।


(शिवराज सिंह चौहान)



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर कार्यालयीन हिंदी पत्रिका “गोपाद्री” के रजत जयंती विशेषांक का प्रकाशन करने जा रहा है। इस विशेष अवसर पर मैं समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संपादक मण्डल को मध्य प्रदेश की महान विरासत को उजागर करने के प्रयास के लिए बधाई देता हूँ। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए तथा मध्य प्रदेश की सदियों पुरानी महिमा को उजागर करने के लिए राज्य की सम्पन्न सांस्कृतिक, मूर्तिकला एवं वास्तुकला विरासत पर जिलेवार आलेख प्रकाशित करने का प्रयास एक शानदार कदम है।

कोविड-19 महामारी के प्रतिकूल समय में पत्रिका को प्रकाशित करने का प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्मिकों की भावना प्रशंसनीय है तथा यह कठिन परिस्थितियों के दौरान भी हमारी भाषा, संस्कृति एवं विरासत को बढ़ावा देने के लिए सभी को प्रेरित करती है।

पत्रिका का प्रकाशन एक रचनात्मक प्रयास है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसके माध्यम से कार्यालय की विभागीय एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी देने के साथ-साथ कार्मिकों की रचनात्मकता एवं लेखन क्षमता को उजागर करने के लिए भी उचित मंच प्राप्त होगा, जहां वे अपने विचारों को व्यक्त कर अपनी लेखनी को सुदृढ़ कर सकेंगे।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(गिरीश चंद्र मुर्मू)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक



संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा— प्रथम) म.प्र., ग्वालियर द्वारा राजभाषा हिंदी की विभागीय पत्रिका 'गोपाद्री' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन में सफलता के 25 वर्ष राजभाषा हिंदी के प्रति आपके कर्तव्य बोध को उजागर करते हैं। साथ ही रजत जयंती अंक को मध्य प्रदेश की स्थापत्य कला एवं ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहरों की पृष्ठभूमि देना बेहद प्रशंसनीय है।

यह नितांत गर्व का विषय है कि वर्तमान में विश्वव्यापी महामारी कोरोना द्वारा उत्पन्न की गई अति विकट परिस्थितियों के बावजूद भी लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्मिकगण अपने मूल कर्तव्यों के निर्वहन के साथ-साथ राजभाषा के प्रति भी अपने कर्तव्यों का पूर्णतः निर्वहन कर रहे हैं एवं लेखन क्षेत्र में भी अपनी योग्यता प्रदर्शित कर रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि आपकी पत्रिका अनवरत रूप से राजभाषा हिंदी के विकास पथ पर सदैव अग्रणी रहेगी।

पत्रिका प्रकाशन की रजत जयंती पूर्ण करने के आनंदमय अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इसी प्रकार सफलतापूर्वक पत्रिका प्रकाशन की स्वर्ण जयंती भी पूर्ण करेंगे।

(जयंती प्रसाद)

उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक



L. Angam Chand Singh
Deputy Comptroller & Auditor General

संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र., ग्वालियर की राजभाषा पत्रिका के रजत जयंती विशेषांक के प्रकाशन पर समस्त कार्यालय परिवार को मेरी शुभकामनाएं। पत्रिका को मध्यप्रदेश की वास्तुकला एवं ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहरों से सज्जित कर विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास सराहनीय है।

हिंदी सरल, सुबोध और सहज भाषा है। इसे आसानी से बोला, पढ़ा और समझा जा सकता है। इसलिए यह सबसे अधिक व्यक्तियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है।

भारत के संविधान द्वारा 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है इसलिए 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। शासकीय कामकाज में पूर्ण रूप से राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हम सबका संवैधानिक उत्तरदायित्व है।

आशा है कि पत्रिका कार्यालय की विभागीय एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी देगी और अधिकारियों एवं कर्मचारियों को लेखों, संस्मरणों एवं कविताओं के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करेगी। पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को भी बढ़ावा देगा।

कार्यालय के कार्मिकों को पत्रिका प्रकाशन में रचनात्मक सहयोग एवं संपादक मण्डल को सफल संपादन हेतु अनेक बधाइयाँ।

मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

अंगम चंद्र

(लैसराम अंगम चंद सिंह)



संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र., ग्वालियर द्वारा अपनी राजभाषा पत्रिका के रजत जयंती विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त कार्यालय परिवार को मेरी शुभकामनाएं एवं बधाइयाँ। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कार्यालय द्वारा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार हेतु किए जाने वाले प्रयासों को दर्शाता है। पत्रिका के 25वें विशेषांक को मध्य प्रदेश की स्थापत्य कला एवं ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहरों से सजाने से पत्रिका विशेष रूप से रुचिकर व मनोरम बन पड़ी है।

हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं, हमारी राष्ट्रीय पहचान भी है। हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि आम जिन्दगी की तरह हम शासकीय काम—काज में भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार के निरंतर प्रयासों के फलस्वरूप आज के इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों यथा कंप्यूटर, लैपटॉप आदि में भी हिंदी भाषा में कार्य करना आसान हो गया है जिससे देश के समग्र विकास में जन साधारण की भागीदारी बढ़ रही है। अपने सरल और सहज स्वरूप के कारण हिंदी आज अंतर्राष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन गई है। हमारा सदैव ही यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी यूं ही निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी कार्यालयीन पत्रिका हिंदी के विकासात्मक सफर में निश्चित रूप से सहायक होगी।

आपके कार्यालय द्वारा गृह पत्रिका का निरंतर प्रकाशन सुधी पाठकों और रचनाकारों का हिंदी के प्रति लगाव एवं निष्ठा को दर्शाता है। राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम राष्ट्र के प्रति प्रेम का प्रतीक है। अतः हमें राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु निरंतर कार्यशील बने रहना है। पत्रिका में भाषा के साथ ही साहित्य, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, ज्ञान—विज्ञान जैसे विविध विषयों का समावेश किया गया है जो न केवल सुधी पाठकों के ज्ञानवर्धन में सहायक होगा, अपितु यह कार्यालय के कार्मिकों की सृजन प्रतिभा में और निखार लाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामना सहित...

(ऐनी जॉर्ज मैथ्यू)
अपर सचिव (कार्मिक)



सत्यमेव जयते



भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
व्यय विभाग
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF FINANCE
DEPARTMENT OF EXPENDITURE

संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र., ग्वालियर की राजभाषा पत्रिका “गोपाद्री” का रजत जयंती विशेषांक प्रकाशित होने पर समस्त कार्यालय परिवार को हार्दिक बधाई ।

आपके कार्यालय द्वारा पत्रिका का लगातार प्रकाशन कार्मिकों की हिंदी के प्रति प्रेम, निष्ठा एवं अभिरुचि को प्रदर्शित करता है । कार्यालयीन पत्रिका कार्मिकों को उनकी अंतर्मुखी प्रतिभा, लेखन क्षमता, शैली और कौशल को बढ़ावा देती है एवं इससे हिंदी के विकास की गति भी तीव्र होती है । पत्रिका कार्मिकों के आचार—विचार, व्यावहारिक और आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि के साथ—साथ उन्हें अपने बहुमुखी विकास हेतु एक मजबूत मंच प्रदान करती है ।

कार्यालय द्वारा “गोपाद्री” को मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विषयवस्तु से सजाकर प्रस्तुत करना एक सुन्दर प्रयास है । मध्य प्रदेश को भारत का हृदय प्रदेश कहा जाता है और पत्रिका को मध्य प्रदेश पर विषय आधारित कर प्रकाशित करना अपने गृह राज्य को और अधिक गौरवान्वित करने जैसा है ।

हमें अपने निजी और समस्त शासकीय कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए क्योंकि यह हमारा न केवल नैतिक अपितु संवैधानिक दायित्व भी है ।

शुभकामनाओं सहित...

(मीरा स्वरूप)

अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (वित्त)
व्यय विभाग



संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र., ग्वालियर विभागीय पत्रिका प्रकाशन में रजत जयंती विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में विगत 25 वर्षों से विभागीय पत्रिका का प्रकाशन निश्चित ही एक अत्यंत सराहनीय कदम है। पत्रिका के 25वें अंक को मध्य प्रदेश की स्थापत्य कला एवं ऐतिहासिक धरोहरों से सुसज्जित करना, इसे अति मनोरम व यादगार बनाता है।

पत्रिका का नाम “गोपाद्री” उत्तम है, यह पत्रिका को आपके शहर ग्वालियर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जोड़ता है। विभागीय पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार के साथ—साथ कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए शासकीय कार्मिकों को प्रोत्साहित करती हैं और साथ ही उन्हें अपनी रचनाधर्मिता प्रदर्शित करने का सुनहरा अवसर प्रदान करती हैं।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके अथक प्रयास एवं उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई देती हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार—प्रसार में उल्लेखनीय रूप से सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाओं सहित...

(रेबेका मथाई)

अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
(मध्य क्षेत्र)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

वार्षिक हिंदी पत्रिका “गोपाद्री” का रजत जयंती विशेषांक प्रस्तुत है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विगत 25 वर्षों से हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी निरंतर प्रयास करते आये हैं। विगत दो वर्षों में विश्वव्यापी महामारी के कारण हर क्षेत्र में विकास एवं प्रगति की गति धीमी हो चुकी है, फिर भी हमारे कार्यालय के साथीगण हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। “गोपाद्री” इस प्रतिबद्धता का उदाहरण है। इस वर्ष पत्रिका के रजत जयंती विशेषांक में हमने मध्य प्रदेश की गौरवशाली स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहरों से पाठकों को अवगत कराने का प्रयास किया है। आधुनिक समय की मांग को देखते हुए अपनी पत्रिका को ई-पत्रिका में तब्दील कर रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को “गोपाद्री” का रजत जयंती विशेषांक पसंद आएगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए रचनाकारों, संपादक मंडल तथा सहकर्मिणों को धन्यवाद देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित...

(डी. साहू)
प्रधान महालेखाकार



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



प्रकाशकीय

हमारी कार्यालयीन पत्रिका “गोपाद्री” आप सभी को प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। विश्वव्यापी महामारी कोरोना के द्वारा उत्पन्न की गई अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कार्यालयीन पत्रिका का सफल प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी कर्तव्यपरायणता को उजागर करता है। रजत जयंती विशेषांक को विशेष स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से मौलिक रचनाओं के साथ ही उसे विषय आधारित कर गृह राज्य मध्य प्रदेश की पुरातन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से सजाना और समस्त भारत के सम्मुख प्रस्तुत करना एक विशेष प्रयास है जिसे समृद्ध बनाने में हमें राज्य के विभिन्न जिलों से सहयोग प्राप्त हुआ है जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

कार्यालयीन पत्रिका ना केवल शासकीय कार्मिकों को अपनी रचनाधर्मिता प्रदर्शित करने हेतु एक सफल मंच प्रदान करती है अपितु, इसके साथ ही हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने में अद्भुत भूमिका का निर्वहन करती है। पत्रिका में समाहित रचनाएं अत्यंत सरल, सुबोध एवं सुपाठ्य भाषा में प्रस्तुत की गई हैं जिससे कि अधिक से अधिक भारतीयों को राजभाषा हिंदी से सहज रूप में जोड़ा जा सके। रचनाकार एवं संपादक मंडल इस अतुलनीय कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक पृष्ठभूमि को ध्यानगत रखते हुए यह हमारा कर्तव्य है कि हम इसे न केवल शासकीय जीवन में अपितु दैनिक जीवन में भी पूर्ण रूप से आत्मसात कर इसके उत्थान में अपना सम्पूर्ण सहयोग दें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी पत्रिका इस अभिप्रेत उद्देश्य की प्राप्ति में उल्लेखनीय रूप से सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु मंगलकामनाओं सहित...

(जितेन्द्र तिवारी)

उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादकीय

कार्यालयीन पत्रिका 'गोपाद्री' के नवीन अंक को पाठकों के समक्ष रखते हुए अपार हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिंदी के उत्थान को समर्पित हमारी कार्यालयीन पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विगत 25 वर्षों से निरंतर अभूतपूर्व भूमिका का निर्वहन कर रही है, जो निस्संदेह हमारे लिये गर्व का विषय है।

पत्रिका के रजत जयंती विशेषांक को यादगार बनाने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश की स्थापत्य कला और प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों/विरासतों को संजोकर एवं परिचायक के रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है और हमारे इस कार्य की पूर्ति में मध्य प्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों के आदरणीय जिलाधीशों ने अपने कार्यक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले जिलों से संबद्ध जानकारी एवं सामग्री प्रेषित कर हमें अतुलनीय सहयोग प्रदान किया है जिसके लिये हम हृदय से उनका आभार व्यक्त करते हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रति हमारा कर्तव्य सर्वोपरि है। 'क' क्षेत्र से संबद्ध होने के कारण राजभाषा के प्रति हमारा उत्तरदायित्व और बढ़ जाता है और हम इस बात को पूर्णतः समझते हैं। हमने कोविड-19 जैसी भयानक वैश्विक महामारी की आंच हमारी कार्यालयीन पत्रिका के प्रकाशन पर किंचित मात्र भी नहीं आने दी अपितु, दोगुने उत्साह के साथ और उत्कृष्ट अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ध्येय बस एक है, राजभाषा हिंदी का उत्थान एवं उसकी निष्कंटक सेवा।

कोरोना महामारी के काल में भी पत्रिका प्रकाशन निस्संदेह सुधी रचनाकारों के अतुलनीय सहयोग के बिना कदापि संभव नहीं हो सकता था। अतः मैं सभी रचनाकारों को कोटि-कोटि धन्यवाद करती हूँ और आशा करती हूँ कि आगे भी हमें यूँ ही आपका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

पत्रिका के प्रति पाठकों की प्रतिक्रिया एवं सुझाव सदैव प्रार्थनीय हैं, जिससे कि हम पत्रिका को और बेहतर करते रहेंगे।

स्वर्णलता

(स्वर्णलता गुप्ता)

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी कक्ष

लैंगिक समानता लाने में तकनीक का उपयोग

सुश्री मोना जैन
वरिष्ठ उप महालेखाकार



यूनीसेफ के अनुसार लैंगिक समानता का अर्थ है- महिला और पुरुष को समान अधिकार, संसाधन, अवसर तथा संरक्षण मिले। लिंग के आधार पर किसी भी व्यक्ति के साथ कोई भेदभाव नहीं हो। सामान्यतः महिलाओं को ही भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इसमें समाज व घर में कार्य-विभाजन के कारण महिलाओं को न समान अवसर मिल पाते हैं, न संसाधन और न ही संरक्षण। हाल ही में मेरी संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा हुयी है। वहाँ लैंगिक समानता मुझे भारत से ज्यादा दिखायी दी, जिसे मैं कुछ उदाहरणों से समझाना चाहूँगी।

वहाँ पर मैंने डाकिया महिलायें देखीं। महिलायें एक बड़ी गाड़ी में बैठ कर घर-घर जाकर पत्र बाँटती हैं। वहाँ सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई गयी इन बड़ी गाड़ियों से महिलाओं द्वारा पत्रों को घर-घर जाकर बाँटना सम्भव हुआ। इसी तरह महिलायें अमेजन एवं अन्य

ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा घर-घर जाकर सामान की आपूर्ति करती नजर आती हैं। ओला, उबर या टैक्सी गाड़ियों को महिलायें चलाती नजर आ जाती हैं। यद्यपि इन कंपनियों द्वारा जी.पी.एस. टेक्नोलॉजी भारत में भी उपयोग की जाती है लेकिन इसके बावजूद भी वे यहां की महिला चालकों में

आत्म विश्वास नहीं जगा पायी हैं। अमेरिका में गियरलेस कारें भी सामान्यतः सड़कों पर दिखायी दे जाती हैं, जिसे महिला व पुरुष दोनों ही चलाते हैं। अमेरिका में महिलायें बड़ी-बड़ी कारों से लेकर बुल्डोजर तक चलाती दिखायी देती हैं। ड्राइविंग ने महिलाओं को घर में कैद होने से रोका है। वाहन चालन महिला स्वतंत्रता व महिला समानता दोनों दिशाओं में बहुत बड़ा कदम है। भारत में समय के साथ कारों की उपलब्धता तथा वाहन चालन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी, तो समाज व अर्थव्यवस्था दोनों में ही महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ेगी।

किसी भी देश की प्रगति में सार्वजनिक यातायात की अहम भागीदारी होती है। बोस्टन में हमारे स्टे (ठहरने) के दौरान मैंने पाया कि पब्लिक यातायात महिला फ्रेंडली थे तथा सार्वजनिक बसें, ट्रेन आदि जी.पी.एस. से

जुड़े हुए हैं। इससे भी महिलाओं की काम में भागीदारी बढ़ती है। कौन सी बस कहाँ, कितनी देर में आने वाली है, उसकी स्थिति अपने मोबाइल पर जांच कर उसका उपयोग किया जाता है।



01
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

किसी भी महिला की स्थिति, बाहरी सक्रियता, माँ बनने के बाद बहुत कम हो जाती है। छोटे-छोटे बच्चों के साथ कहीं पर आना-जाना भी सम्भव नहीं हो पाता है। बहुत सारी महिलायें कार्यस्थल पर काम करना छोड़ देती हैं। छोटे बच्चों को सम्भालने की जिम्मेदारी प्रमुखतया महिलाओं पर होती है। कार सीट के उपयोग से महिलायें एक दो माह के बच्चे से लेकर पांच वर्ष तक के बच्चे को लेकर बिना किसी अन्य व्यक्ति की मदद के कार चलाकर ले जा सकती हैं। भारत में छोटे-छोटे बच्चों के साथ अकेली महिला का कार ड्राइव करना सम्भव नहीं है।

हमारे देश में हम छोटे बच्चों के लिए बेबी कैरियर का उपयोग बहुत कम करते हैं। यू.एस.ए. में एक, दो, तीन बच्चों तक को ले जाने के लिए स्ट्रॉलर थे। छोटे बच्चों के साथ महिला की बाहर जाने की गतिविधियाँ काफी कम हो जाती हैं। एक माँ के तौर पर मैं ये समझ सकती हूँ लेकिन स्ट्रॉलर के उपयोग से बच्चे के साथ बाजार, वॉक करना या अन्य किसी भी स्थल पर आसानी से जाया जा सकता है। तकनीक ने चीजों को इतना आसान कर दिया है कि स्ट्रॉलर को साईकिल से भी जोड़ सकते हैं। साईकिल के साथ बेबी सीट जोड़कर साइक्लिंग की जा सकती है। ये सब दर्शाता है कि बच्चा होने पर जरूरी नहीं है कि आप घर में ही रह जायें। आप अपनी रोजमर्रा की सारी गतिविधियाँ काफी अच्छे से कर सकते हैं।

भारत में घरेलू कार्यों में भी महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से ज्यादा रहती है। लैंगिक असमानता का यह भी एक कारण है। घरेलू कार्यों के कारण महिलायें कार्यस्थल पर कार्य

नहीं कर पाती हैं। यू.एस.ए. में हमने पाया कि सफाई के लिए काफी सस्ते रोबोट उपयोग में लिए जाते हैं जिससे साफ-सफाई काफी आसानी से हो जाती है। डिश वाशर के उपयोग से बर्तन आसानी से साफ हो जाते हैं। यू.एस.ए. में रसोई में भी तकनीक का अच्छा प्रवेश है। इसलिए खाना बनाने का पूरा दारोमदार महिला पर नहीं रहता है। पुरुष का भी योगदान रहता है। बाजार से सेमी प्रोसेस्ड फूड जैसे छिल्ला हुआ लहसुन, कटा हुआ नारियल तथा इसी तरह की अन्य चीजें अच्छी गुणवत्ता की मिल जाती हैं।

दूरसंचार तकनीक के उपयोग से भी महिलाओं की कार्यस्थल में भागीदारी बढ़ी है। भारत में भी आई.टी. कंपनी द्वारा पहले से वर्क फ्राम होम की महिलाओं को अनुमति प्रदान की गयी जिससे महिलायें बच्चों की जिम्मेदारी के साथ-साथ अपना कार्य भी कर सकती हैं। हाई स्पीड इन्टरनेट, महिला उद्यमियों को आगे बढ़ा सकता है। महिलायें घर में नमकीन, पापड़ या अन्य खाने की वस्तुयें इन्टरनेट के माध्यम से बेच सकती हैं। कपड़े सिलकर, आर्ट एण्ड क्राफ्ट बनाकर बेच सकती हैं। हाई स्पीड इन्टरनेट मोबाइल तक पहुँच से महिलायें अपने हुनर से काफी हद तक घर में रहकर भी आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकती हैं।

इसलिए आज आवश्यकता है कि तकनीक तक महिलाओं की पहुँच आसान हो। सरकारें तथा परिवार द्वारा तकनीक का उपयोग करके लैंगिक असमानता को दूर किया जाना चाहिए जिससे महिलाओं को समाज में उनकी खोई हुयी हिस्सेदारी एवं सम्मान प्राप्त हो।



शिक्षा दोहावली

श्रीमती मंजू पगारिया

सासू माँ सुश्री मोना जैन
वरि. उप महालेखाकार



1. अगर प्रतिष्ठा चाहिए, रखें नहीं अभिमान।
सजता जगत विनम्र का, करता है सम्मान।।
2. अच्छा जीवन चाहिए, आलस रखो ना पास।
श्रम-परिश्रम वृत्ति से, होता स्वतः प्रकाश।।
3. अतिथि सत्कार कीजिए, देव तुल्य ले मान।
आदर्श गृहस्थ धर्म की, यही उन्नत पहचान।।
4. ज्ञान, प्रेम अरू शांति की, ढूँँ राह जरूर।
विनम्रता रखने से मिले, जीवन सुख भरपूर।।
5. हो जाए यदि भूल से, छोटा-मोटा पाप।
याचक मांगे प्रेम से, दया याचना आप।।
6. राह दिखाता है सदा, सच्चाई का दीप।
साधना मुक्ता मोल है, नहीं मोल है सीप।।
7. माता-पिता करते जहाँ, अनुभव की बरसात।
सन्तान संवरे सर्वदा, संग्रहित रहे संस्कार।।
8. चरित्र अनुकरणीय है, गिरने मत दो आप।
नाता अंकुश चित का, दूर करे सब ताप।।
9. चूर-चूर कर दीजिए, अपना सब अभिमान।
भीतर मानव देह में, समझ उसे भगवान।।
10. गुरु से गुण बढ़ते सदा, विकसित होता ज्ञान।
सद्गुण गुरु ग्राही बने, मिटे मन के द्वन्द।।



03
गोपाक्षी

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



जिंदगी

अखिलेश चन्द्र वाजपेयी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



न पूछो कैसे कटी जिन्दगी
नाव कागज की दरिया में बही, जिन्दगी

ठहर जा किनारे,
समय के बहाव ये कहते रहे
फिर चली एक हवा तूफान जैसी
किनारों को बहा ले गयी जिन्दगी
न पूछो कैसे कटी जिन्दगी

आँसू थे तुम्हारी यादों के
कहते सुनते अब ये रुक से गये
न रहे अब ये, न रही जिन्दगी
न पूछो कैसे कटी जिन्दगी

आओ, बात जमाने की कर लें
चमन से टूटे फूल की कर लें
हवाओं से या तोड़ा किसी ने
देगा उसकी अब कोई गवाही नहीं

यादें तुम्हारी अभी तक हैं बाकी
हासिल हुआ मुझे कुछ भी नहीं
तुम चले गये हो दूर इतने
मैं दोराहे पर अभी तक वहीं
न पूछो कैसे कटी जिन्दगी

न पूछो कैसे कटी जिन्दगी
नाव कागज की दरिया में बही, जिन्दगी ।।

04
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



आशाएं

जानिशा साहा

सुपुत्री श्री स्वपन साहा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



दिल बेचैन है,
उलझन में है,
समझ में नहीं आ रहा है,
जो हो रहा है वो
सपना है या हकीकत है।
बुरे सपनों में कभी देखा करते थे,
भयानक राक्षसों के डर से
हम सब घर में छुपे हुए हैं।
फिर अचानक माँ आके
सारे राक्षसों को भगा देती है।
हकीकत में आज
पूरे विश्व की यही स्थिति है।
कोरोना के डर से हमें घर में छुपना पड़
रहा है।

जो बाहर जा रहा है,
उसे भी अपना मुँह छुपाना पड़ रहा है।
दबोच ले न कहीं,
यह ही डर सता रहा है।
फिर भी दिल में नई उम्मीद की एक
किरण है।
कि माँ हमारी सबसे हिम्मतवाली है।
उसी की तरह हम कभी हार मानेंगे नहीं,
हम डट के सामना करके
कोविड-19 को करेंगे विश्व से बाहर
फिर से आएंगे खुशियों भरे दिन,
हिम्मत मत हारो साथियों
“हम होंगे कामयाब एक दिन” ॥

“हम होंगे कामयाब एक दिन”

05
गोवाद्रि

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



नारी

हरिओम कुमार
कनिष्ठ अनुवादक



नारी तुम्हें क्या उपमान मैं दूँ,
किन शब्दों में सम्मान मैं दूँ,
है उचित यही मैं काम करूँ,
छू चरण तेरे मैं प्रणाम करूँ।

प्रकृति तुम पर इतराती है,
अंबर गर्वित हुआ जाता है,
धरती मन ही मन इठलाती है,
रब रच तुमको हर्षाता है।

तुम गंगा की पावन धारा,
अंधियारे जग में ज्यों तारा,
जीवन तुम में ही जीता है,
सम्मुख तेरे काल भी हारा।

तुम अनुपम सहर की लाली हो,
वर्तिका पाक उजियाली हो,
भावुक, कोमल, तरूणी डाली,
तुम हो दुर्गा, तुम काली हो।

माँ, बहिन, पत्नी, पुत्री प्यारी
तुम निश्छल साथी, सच्ची सखा,
जग में अनुपम सबसे न्यारी,
हर रिश्ता तुमने थाम रखा।



06
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



मेरी प्यारी माँ

एन.के.त्रिपाठी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



माँ में है मिश्री सी मिठास, उससे है जीने की आस।

वो है अपनेपन का अहसास, है हर रिश्ते में खास।।

कभी बनना पड़ता है उसे, एक कड़वी दवा।

कभी बनना पड़ता गरम, तो कभी ठंडी हवा।।

हर पल रहती है उसको, परवाह तुम्हारी।

अपना सुख छोड़ मिटाती, तकलीफ हमारी।।

तू है तपती धूप में, ठंडी छांव सी।

डूबते को नदी में, सहारा नाव सी।।

कैसे भूल सकता है कोई, माँ के स्नेह को।

जैसे नहीं भूलता गर्मी में, बरसते मेघ को।।

हर पूछे गये सवाल का, सही जबाब है तू।

हर अच्छे बुरे का, सही हिसाब है तू।।

निराशा को आशा में बदलती है तू।

अविश्वास को विश्वास में बदलती है तू।।

तुझमें है अल्लाह, यीशू, तुझमें ही है भगवान।

तेरे अहसानों को, कैसे भूल सकता है इंसान।।



07
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



भारत का हृदय- मध्यप्रदेश

अर्चना मानव

आशुलिपिक



केवल राज्य नहीं है मध्य प्रदेश,
कहते हैं इसे भारत का हृदय प्रदेश ।।
आओ बताऊँ, भूत, भविष्य और वर्तमान,
मध्य प्रदेश राज्य की अलग है पहचान ।।
विंध्य और सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखलाएं ।
ताप्ती, नर्मदा, बेतवा युगों तक बहती जाएं ।।
भोपाल शहर में जिसकी राजधानी ।
राजाभोज की नगरी से जाती है जानी ।।
इसलिए केवल राज्य नहीं है मध्य प्रदेश ।
कहते हैं इसे भारत का हृदय प्रदेश ।।

भगवान शिव को समर्पित है भोजेश्वर मंदिर ।
अरेरा पहाड़ी पर स्थित है लक्ष्मीनारायण मंदिर ।।
भीमबेटका की गुफाएं और उसकी चित्रकलाएं ।
आकर्षण का केन्द्र है खजुराहों की शिल्पकलाएं ।।
भोपाल से थोड़ी ही दूर विश्व धरोहर सांची स्तूप ।
जब हो करना मध्य भ्रमण देखना मत जाना भूल ।।
इसलिए केवल राज्य नहीं है मध्य प्रदेश ।
कहते हैं इसे भारत का हृदय प्रदेश ।।

मालवा के पत्थर पर प्यारा शहर इन्दौर है,
इंद्रदेव के नाम पर रखा जिसका नाम है ।
है व्यावसायिक राजधानी, मध्य प्रदेश की शान है,
अहिल्या की नगरी और राजवाड़ा से पहचान है ।
कांच का मंदिर जैन धर्म की धरोहर है,
मनोकामनापूर्ति खजराना गणेश मंदिर है ।
इसलिए केवल राज्य नहीं है मध्य प्रदेश,
कहते हैं इसे भारत का हृदय प्रदेश ।

क्षिप्रा के किनारे बसा प्यारा
शहर उज्जैन है,
मंदिरों की नगरी के रूप में जाना
जाता उज्जैन है ।

समुद्र मंथन में अमृत घटा से बूंद गिरा उज्जैन में,
लगता है सिंहस्थ कुंभ मेला हर बारह वर्ष में ।
चौंसठ योगिनी मंदिर गिनी जाती है ऐतिहासिक स्थल में,
उज्जैन में कालिदास नवरत्न थे विक्रमादित्य के दरबार में ।
इसलिए केवल राज्य नहीं है मध्यप्रदेश,
कहते हैं इसे भारत का हृदय प्रदेश ।

है यह मध्य प्रदेश का शाही शहर,
बेतवा किनारे बसा है ओरछा शहर ।
जहां पूजे जाते हैं वर्षों से भगवान राजा राम,
ओरछा विश्व धरोहर में प्रस्तावित इसका नाम ।
सावन भादों की चमत्कारी मीनारों का इतिहास,
जहांगीर महल और रामराजा मंदिर बनाता खास ।
इसलिए केवल राज्य नहीं है मध्य प्रदेश,
कहते हैं इसे भारत का हृदय प्रदेश ।
अंत है पर आखिरी नहीं प्यारा शहर ग्वालियर,
गालव ऋषि की तपोभूमि है शहर ग्वालियर ।
ग्वालियर का किला बढ़ता इसकी शान है,
भारत का जिब्राल्टर नाम से इसकी पहचान है ।
अटल बिहारी वाजपेयी की है यह जन्मभूमि,
तानसेन और बैजूबावरा की है यह कर्मभूमि ।
जय विलास राजमहल इस शहर की जान है,
सूर्य मंदिर और सास बहू मंदिर की अलग पहचान है ।
इसलिए केवल राज्य नहीं है मध्य प्रदेश,
कहते हैं इसे भारत का हृदय प्रदेश ।

08

गोपाक्षी

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



सार्वजनिक दुराचार और अर्न्तद्वन्द्व

दीपक पाठक

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



सुबह के सात बजे थे, मीना हाथ में कॉफी का मग लिए बालकनी की ओर बढ़ी, फिर दास अंकल को बाहर खड़ा देख, वापस अंदर आ गई।

मीना को इस शहर में आए आज एक महीना पूरा होने को था। वह अपने छोटे भाई के साथ यहाँ आई थी और एक सॉफ्टवेयर कंपनी में कार्यरत थी। जिस दिन से वह आई थी, रोज सुबह कॉफी पीने बालकनी में जाती, वहाँ दास अंकल पहले से ही अपनी बालकनी में खड़े दिखते और मीना को देखकर मुस्करा देते, मीना भी मुस्करा कर भीतर आ जाती।

भाई का नाश्ता टेबल पर रखकर मीना झट से तैयार होकर ऑफिस के लिए निकल पड़ी। ऑफिस पहुँचकर देखा तो सब लोग उसकी टेबल के पास एकत्रित होकर किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे। अपने बॉस की केबिन की ओर देखा, लाईट बन्द थी, शायद आज वह छुट्टी पर थे, अपना पर्स टेबल पर रख कर वह भी चर्चा का विषय जानने को उत्सुक हुई।

करण बोल रहा था “यार आजकल ईव-टीजिंग में अंधेड़ उम्र के लोग ज्यादा दिखते हैं पर गलती तो लड़की की है, वह बर्दाश्त क्यों करती है? करारा जबाब देती तो ये बातें यहीं खत्म हो जाती” अखबार में लिखी एक खबर पर चर्चा हो रही थी।

मीना ने आगे सुनने का प्रयास न करते हुए अपना काम प्रारम्भ कर दिया। शाम को लौटते वक्त जब वह दूध वाले के दुकान पर गई तो दास अंकल भी वहीं थे उसने दूध के पैसे दिये तो दुकानदार ने कहा “छुट्टे पैसे लाओ” मीना ने पर्स टटोलना शुरू किया था, तभी दास अंकल ने आगे आकर पैसे दे दिए मीना के मुँह से निकला “ये, ये आप क्या कर रहे हैं” अंकल बोले “कोई बात नहीं, तुम लौटा देना”

मीना को अब दास अंकल से डर लगने लगा था। उसने बालकनी में जाना छोड़ दिया पर अंकल ने उसका पीछा ना छोड़ा, वह रोज गेट के पास खड़े होकर उसे मुस्कराकर “गुड मॉर्निंग” कहते। मीना उन्हें अनसुना कर आगे बढ़ जाती।

उस सुबह मीना ऑफिस के लिए निकली तो दास अंकल वहाँ नहीं थे। उसने चैन की सांस ली। तभी देखा कि वह सामने से आ रहे थे, उनके हाथ में एक गिफ्ट था। मीना बिना कुछ बोले जाने लगी। अंकल उसके पीछे गए और उसे वह गिफ्ट देकर मुस्कराते हुए बोले “यह तुम्हारे” वह आगे कुछ कहते इससे पहले ही मीना ने गिफ्ट सड़क पर फेंक दिया और बोली “मेरा पीछे करना बंद कर दो वरना पुलिस स्टेशन में रपट लिखा दूँगी। अच्छे से जानती हूँ तुम जैसे लोगों को, मैं कोई डरपोक नहीं हूँ”। इतना कहकर वह ऑफिस के लिए निकल पड़ी।

शाम को जब वह घर पर लौटी तो दास अंकल की बालकनी बंद थी। उसने चैन की सांस ली। फिर सामान पैक कर त्योंहार की छुट्टियों में घर चली गई। दिवाली के उपरान्त एक हफ्ते बाद जब वह पुणे आई तो उसके जेहन में आया कि दास अंकल का कोई एहसान नहीं रखना। वह उनके पैसे लौटाने चल पड़ी जो उन्होंने उस दिन दूधवाले को दिये थे। दास अंकल के घर का दरवाजा किसी महिला ने खोला, मीना ने बिना समय गंवाएं कहा “ये अंकल के पैसे हैं, उन्हें वापस दे दीजिएगा”।

तब महिला बोली “आप कौन?”। “मीना, मैं यहीं पास.....” इतना बोलते ही उसकी नजर दीवार पर टंगी दास अंकल की तस्वीर पर गई। तस्वीर पर माला थी। वह अवाक रह गई। महिला ने उसे अंदर बिठाया और पानी देती हुई बोली “पिछले हफ्ते पिताजी का एक कार की टक्कर से देहांत हो गया।” मीना ने एक दूसरी तस्वीर की तरफ देखा जो अंकल की तस्वीर के बगल में थी। उस पर भी माला थी।

इतने में दास अंकल की बहू बोली “मीना नाम था उसका। पापा की लाडली बेटी, पिछले साल कैंसर से वह गुजर गई। हम पापा को साथ ले जाना चाहते थे पर वह कहते कि इस घर से मीना की यादें जुड़ी हैं। वह एक दिन जरूर वापस आएगी। पिछले महीने से पापा में काफी सुधार आ रहा था। वह फिर से खुश रहने लगे थे। जिस दिन पापा का एक्सिडेंट हुआ उसी दिन मीना का जन्मदिन था”।

मीना ने पास पड़े फटे हुए गिफ्ट पैक की ओर देखा, यह वही गिफ्ट था जो अंकल ने उसे उस दिन दिया था, पैक खोलकर देखा तो उसमें एक हाथ से बनाया हुआ पिता-पुत्री का चित्र था और लिखा था, “फॉर माई डॉटर” साथ में कुछ चॉकलेट भी थे।

मीना वहाँ एक पल भी न रुक सकी। वह झट से उठी और आंखों में आंसू लेकर वहाँ से चल पड़ी।

09

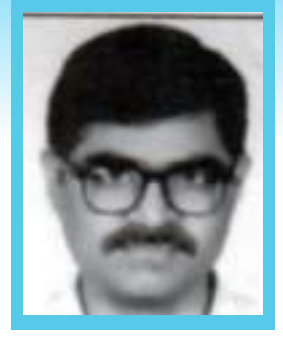
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



ई-ऑफिस में हिंदी में कार्य

धनंजय कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी



भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के कार्यालयों में कम्प्यूटर पर कार्य किये जाने के फलस्वरूप फाइलों के इलेक्ट्रॉनिक प्रस्तुतिकरण, अग्रेषण एवं निराकरण करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (एन.आई.सी.) द्वारा ई-ऑफिस सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है। यह सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ता के अनुकूल है। यह कार्यालय में फिजिकल फाइल के मूवमेंट की तरह ही आसान है। ई-ऑफिस के उपयोग करने से एक ओर जहां



कागज की बचत होती है वहीं फिजिकल फाइल रखने के लिए अलमारी एवं अन्य संसाधनों की आवश्यकता भी नहीं होती है। ई-ऑफिस में अधिकारी/कर्मचारी बिना कार्यालय आए घर से भी आसानी से कार्यालयीन कार्य कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सूचना केन्द्र द्वारा भारत के सभी राजकीय भाषाओं में कार्य करने की सुविधा प्रदान की गई है जिसे राज्य की कार्यालयीन भाषा अनुसार अधिकारी/कर्मचारी उपयोग कर सकते हैं। ई-ऑफिस में निम्नलिखित प्रकार से आसानी से हिंदी में कार्य किया जा सकता है।

सामान्य तौर से कम्प्यूटर में टाईपिंग का कार्य टाईपराईटर के की-बोर्ड अनुसार ही किया जाता है। इसी अनुसार हिंदी में रेमेंगटन टाईपराईटर के की-बोर्ड अनुसार

टाईपिंग की जाती है। हिंदी टाईपिंग के लिए हिंदी फॉन्ट देवलिस, कृतिदेव, अर्जुन इत्यादि

फॉन्टों का उपयोग किया जाता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इन फॉन्टों में हिंदी टाईपिंग करते समय हिंदी टाइप नहीं होती बल्कि हिंदी प्रदर्शित होती है। कारण है कि दूसरे कम्प्यूटर या मेल भेजने पर इनके अक्षर पठनीय नहीं होते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए

राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी टाईपिंग के लिए यूनिकोड फॉन्ट का विकास किया गया है। जिसमें हिंदी के लिए देवनागरी फॉन्ट, मंगल, अपराजिता, कोकिला इत्यादि का इस्तेमाल किया गया है। यूनिकोड फॉन्ट के आगे देवनागरी लिखी होती है। यूनिकोड फॉन्ट में टाईप करने के बाद अन्य कम्प्यूटर या मेल भेजने पर इनके अक्षर वैसे ही दिखते हैं जैसे ये मूल कम्प्यूटर में टाईप किये गये हैं। यह व्याकरण की दृष्टि से सही है। अतः इनका उपयोग ज्यादा सुविधाजनक एवं प्रभावी है। ई-ऑफिस में हिंदी में कार्य करने के तीन तरीके हैं। पहला तरीका यह है कि जो व्यक्ति अभी हिंदी में देवलिस, कृतिदेव, अर्जुन फॉन्टों में टाईप करने के अभ्यस्त हैं, वे नोटशीट एवं ड्राफ्ट को किसी अन्य फाइल में पहले की तरह

इन फॉन्टों में टाईप कर लें, फिर उसे ई-ऑफिस से नोटशीट एवं ड्राफ्ट में क्रमशः पेस्ट कर दें। फिर इसे आवश्यक कार्यवाही के लिए प्रस्तुत कर दें। इसमें अग्रेषित करने वाले अधिकारी के पास उपर्युक्त उल्लेखित फॉन्ट नहीं होने पर प्रस्तुत नोटशीट एवं ड्राफ्ट को पढ़ने में कठिनाई हो सकती है।

परन्तु इसका एक समाधान यह है कि आप कम्प्यूटर पर फॉन्ट कन्वर्टर 'कृतिदेव से यूनिकोड' का इस्तेमाल कर पूरी सामग्री को यूनिकोड में परिवर्तित कर लें। इसके लिए फॉन्ट कन्वर्टर में कृतिदेव बाक्स में टाईप सामग्री को पेस्ट कर यूनिकोड बाक्स में परिवर्तित कर लें। इसके बाद ई-ऑफिस के नोटशीट/ड्राफ्ट में पेस्ट कर दें।

दूसरा तरीका यह है कि यूनिकोड में हिन्दी टाईपिंग की जाये। इसके लिए रेमेंगटन-गेल के की-बोर्ड का उपयोग किया जा सकता है परन्तु, जो लोग रेमेंगटन के पुराने की-बोर्ड का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें इस की-बोर्ड का उपयोग करने में सुविधा होगी। यह की-बोर्ड रेमेंगटन की सामान्य की-बोर्ड की तरह ही है। इसके लिए रेमेंगटन गेल की-बोर्ड कम्प्यूटर में इंस्टॉल करना होगा।

तीसरा तरीका यह है कि यूनिकोड में हिन्दी का चयन कर रोमन हिन्दी अर्थात अंग्रेजी अक्षरों में टाईप करें। पूर्ण रोमन हिन्दी शब्द टाईप करने के बाद जैसे ही स्पेस देंगे, हिन्दी का सही शब्द प्रदर्शित हो जायेगा। यह बहुत ही आसान है। जैसे 'BHARAT' टाईप करने के बाद स्पेस देंगे तो यह

'भारत' हो जाएगा। इसमें हिन्दी की मात्राएं भी आप रोमन में ही टाईप करेंगे। इसमें कुछ अक्षर टाईप करने के बाद ड्रॉप डाउन मेन्यू में उस शब्द से संबंधित विकल्प प्रदर्शित होने लगते हैं, उसमें से जो आप टाईप करना चाहते हैं उसका चयन कर टाईप कर सकते हैं। ऐसे लोग जिन्हें हिन्दी टाईपिंग नहीं आती है वे इस तरीके से आसानी से ई-ऑफिस में हिन्दी में कार्य कर सकते हैं। इसके लिए आपके कम्प्यूटर में यूनिकोड फॉन्ट होना चाहिये। यूनिकोड में अंग्रेजी से हिन्दी में, हिन्दी से अंग्रेजी फॉन्ट में परिवर्तन के लिए कंट्रोल के साथ शिफ्ट की, को एक साथ दबाने पर की-बोर्ड एक दूसरे में परिवर्तित किया जा सकता है।

ई-ऑफिस में पत्रों की फॉर्मेटिंग की समस्या आती है। जैसे किसी अन्य जगह से ई-ऑफिस में पेस्ट करने पर फॉर्मेटिंग बदल जाती है। इसके लिए यह करें कि जहां आप टाईप कर रहे हैं वहां कोई फॉर्मेटिंग अर्थात टैब या एलाईमेंट का उपयोग नहीं करें। जैसे-लेफ्ट, राईट एवं सेंटर एलाईमेंट न करें पूरा मैटर टाईप करने के बाद ई-ऑफिस में ही दिए गए टूल्स की सहायता से फॉर्मेटिंग करें। उस तरह फॉर्मेटिंग नहीं बिगड़ेगी।

इस प्रकार आसानी से ई-ऑफिस में हिन्दी में कार्य किया जा सकता है। इससे एक ओर राजभाषा विभाग के निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित होगा, वहीं कागज का उपयोग भी कम होगा।



सफल जीवन के लिए 12 आदतें

प्रफुल्ल त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



कोई महंगी से महंगी पुस्तक आप को बदल नहीं सकती। जीवन में जिसे असली बदलाव चाहिए वह आप स्वयं हैं। कड़वी याद को जीवंत मत रखिए एक बहुत सुंदर गुलाब का फूल यदि टूट कर गिर जाए तो उसका कोई मोल नहीं रहता, रात्रि के चांद को भी कुछ बादल ढक देते हैं। जिंदगी बदलने के लिए बहुत सारे पोथी-पन्नों की आवश्यकता नहीं होती। न जाने कौन सी चीज आप को प्रेरित कर दे, आप पर प्रभाव डाल दे।

हमारे विचारों से व्यवहार तथा कर्म का जन्म होता है। बार-बार वही विचार रखने से हम हमारी कार्यप्रणाली व दैनिक जीवन की गतिविधियों को सुदृढ़ बनाते हैं। वही कार्य प्रणाली हमारे अवचेतन मन में प्रवेश कर आदतें बनाती है। आदत वह शब्द है जिसके साथ बुराई व अच्छाई दोनों को जोड़ा जा सकता है। कुसंग से बुरे विचार उत्पन्न होने पर बुरे विचार, बुरे कर्म व बुरी आदत बनती है। इसी प्रकार सत्संग से अच्छे विचार उत्पन्न हो अच्छे कर्म में परिवर्तित होकर अच्छी आदतें बनती हैं। हमारी आदतों से ही हमारा चरित्र बनता है जिस कारण से हमें जीवन के साथ व जीवन के बाद याद किया जाता है। हमारे दैनिक जीवन में निम्नलिखित 12 आदतें हैं जिन्हें अपनाकर हम सफल हो सकते हैं एवं बेहतर जीवन जी सकते हैं। इन 12 आदतों में अपनी आस्था रखिए, ईश्वर आप पर दोनों हाथ खोलकर कृपा करेंगे।

1. सक्रिय बने रहना

सक्रियता मतलब हम अपने आसपास के माहौल में कैसी प्रतिक्रिया देते हैं जैसे यदि कुछ नकारात्मक लोग हमारे बारे में

कुछ गलत बोलते हैं तो हम क्या प्रतिक्रिया देते हैं। हम भी उनकी तरह नकारात्मक हो जाते हैं और

अपनी शांति भंग कर लेते हैं या हम सकारात्मक सोच रख कर कुछ प्रतिक्रिया नहीं देते या सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं। नकारात्मक लोगों की शांति का रिमोट दूसरे लोगों के हाथ में होता है। वे प्रत्येक बात पर आक्रामक हो जाते हैं। जबकि सक्रिय इंसान को कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई उसके बारे में क्या बोल रहा है। वह जीवन के अन्य आवश्यक कार्यों में अपना दिमाग एवं ऊर्जा लगाता है।

सक्रिय बनने का मतलब केवल लोगों के प्रति सकारात्मक या व्यावहारिक बनना नहीं बल्कि प्रकृति व शत्रु से होने वाले नुकसान में सक्रियता दिखाने से भी है। जापान में आए दिन भूकंप आते रहते हैं वहां के लोगों ने समय रहते भूकंप अवरोधी क्या इंतजाम किए हैं? यही सक्रियता है। करियर, परिवार, समाज व राष्ट्र की आगामी और वर्तमान जिम्मेदारियों को समझते हुए हम किस तरह की कार्यप्रणाली अपना रहे हैं?, क्या सोच रख रहे हैं?, कैसी प्रतिक्रिया दे रहे हैं?, यह सब भी सक्रिय बनने का हिस्सा है। दूसरी तरफ सफलता के लिए अपने माहौल या मौसम पर निर्भर मत रहिए। आपको अपने दिमाग का मालिक बनना होगा। कामयाब लोग माहौल की शिकायत नहीं करते जबकि असफल लोग कहते हैं कि “इसमें हम क्या कर सकते हैं? इसमें मेरी गलती नहीं है” वे हमेशा बाहर की चीजों को दोष देते रहते हैं।

सक्रिय लोग अपनी जिम्मेदारी स्वयं लेते हैं छोटी-छोटी बातों पर परेशान नहीं होते। यह नहीं सोचते कि लोगों ने मुझसे

12
गोपाक्षी

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



क्या बोल दिया या क्या कर दिया, वे अपनी भावनाओं की, अपने कार्यों की, अपने शब्दों की और अपने विचारों की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं।

2. माफी मांगना

यदि किसी व्यक्ति से आप कुछ बुरा बोल देते हैं तो वह आपका दुश्मन बन सकता है। जिसके साथ आप ने अन्याय किया हो, धोखा किया हो या दिल दुखाया हो तो उससे माफी मांग लीजिए। माफी मांगना कमजोरों का कार्य नहीं है। ये तो साहसी लोगों का कार्य है। माफी दिल से बोझ को हल्का कर देती है, मन का मैल निकाल देती है, सारा तनाव खत्म हो जाता है। माफी मांगना और माफी देना दोनों ही परिपक्वता की निशानी हैं।

3. प्रशंसा करना

प्रशंसा एक अद्भुत टॉनिक है। इसमें एक पैसा भी नहीं लगता। हम दो तरह के लोगों को जरूर याद रखते हैं, जिन्होंने या तो आपको बहुत अच्छा बोला हो या अच्छा-बुरा। यदि आपने बहुत मेहनत की हो एवं कोई आप की ढेर सारी मेहनत छोड़कर एक बुराई देखे तो ऐसे निंदकों से बचना चाहिए। उदाहरण के लिए एक कहानी सुनाता हूं एक आदमी ने जादुई कुत्ता लिया जोकि पानी पर चल सकता था। वह सबको दिखाना चाहता था कि वह उस जादुई कुत्ते का मालिक है। उसने अपने यहां आए हुए एक मेहमान के सामने प्लाइंग डिस्क पानी में फेंकी उसका कुत्ता तुरंत पानी पर चल कर ले आया, इस पर उसके मेहमान ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। फिर उसने गेंद फेंकी कुत्ता फिर पानी पर चलकर गेंद ले आया। उसके मेहमान ने फिर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, कुत्ते के मालिक ने सोचा शायद वह ठीक से देख नहीं पाया होगा। अनेक बार उसने भिन्न-भिन्न चीजें फेंकी, कुत्ता भी पानी पर

चल कर ले आया पर उसके मेहमान ने न तो कोई प्रतिक्रिया दी, ना ही कोई प्रशंसा की, इस पर कुत्ते के मालिक ने अपने मेहमान से अचंभित होकर पूछ लिया कि क्या आपने मेरे कुत्ते में कोई विशेष बात नहीं देखी तब उसने कहा कि क्या खास बात है। कुत्ते के मालिक ने कहा यह कुत्ता पानी पर चल सकता है तब उसके मेहमान ने कहा कि तभी मैं सोच रहा था कि आपका कुत्ता तैर नहीं सकता। इस कहानी का आशय यह है कि उस व्यक्ति ने इतनी खूबियों के बावजूद निंदा ही की। ऐसे निंदकों की नकारात्मकता से बच कर रहना होगा। लोगों की प्रशंसा एकदम सटीक, स्पष्ट होनी चाहिए जिस व्यक्ति ने अच्छा कार्य किया, उसकी प्रत्यक्ष और सच्ची प्रशंसा करनी चाहिए।

4. धन्यवाद दीजिए

एक बार एक युवक गड्ढे वाली सड़क पर स्कूटर से जा रहा था। बारिश में उसके नजदीक की कार का पहिया पानी भरे गड्ढे में आ गिरा एवं उसके ऊपर कीचड़ आ गया। उसने कहा “भगवान आपने मुझे कार क्यों नहीं दी?” कुछ देर बाद सड़क के किनारे बैठे विकलांग व्यक्ति के ऊपर उसके स्कूटर से कीचड़ गिरा तब उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि “आपने मुझे स्वस्थ शरीर दिया है जो करोड़ों का है।” ईश्वर को, माता-पिता को, परिवार को, पत्नी को व अन्य लोगों को उनके कार्य के लिए शुक्रिया अदा कीजिए।

5. जीत सोचे

बहस में या सामान्य बातचीत करते वक्त यदि कोई जीतता है तो दूसरा हारता है, तो रिश्ता मजबूत नहीं रहता। कई बार हम बहस जीत जाते हैं पर एक रिश्ता हार जाते हैं जीत की स्थिति हमारे कार्यालय में, हमारे रिश्तों में और घर में भी लागू होती है। जीतने के लिए हर बार किसी को हराना जरूरी



नहीं है। सदा जीत के बारे में सोचिए पर रिश्ते अच्छे बनाए रखिए। प्रतियोगिता करने में हम अपने लक्ष्य भूल जाते हैं और अच्छे रिश्ते नहीं बना पाते। अच्छे रिश्ते बनाने के लिए अपने वादों को निभाइये। एक अच्छा रिश्ता बैंक खाते जैसा होता है जिसे हर संभव प्रयत्न करके समृद्ध बनाना चाहिए।

6. पहले दूसरों को समझें फिर स्वयं को समझाएं

किसी से बात करते समय पहले दूसरों को समझें। कई बार हम दूसरों की बात खत्म होने से पहले ही जवाब देने लगते हैं। जब आप उसकी पूरी बात सुनेंगे ही नहीं तो आप उसे समझ कैसे पाएंगे और उसका समाधान कैसे कर पाएंगे। यदि आंखों का चिकित्सक आपकी बात सुने बिना ही आपको इलाज देने लगे एवं यह कहे कि यह चश्मा मैं 20 साल से उपयोग कर रहा हूं आप भी इसी नंबर का बनवा लीजिए तो क्या यह आपकी समस्या का सही समाधान होगा? दूसरों को कुछ समझाने से पहले खुद दूसरों को समझने का प्रयास कीजिए। दूसरों को सुनना व समझना उसके हालात समझने का प्रयास, उसकी परेशानी को महसूस करने की कोशिश कीजिए। उसकी बातों को अपने शब्दों में दोहराइये। इससे वह व्यक्ति यह समझ जाएगा कि आप उनकी बात समझ रहे हैं, फिर वह खुलकर आप से बात करने लगेगा। जब वो खुलकर आप से बात करने लगेगा तो वह भी आपकी बात सुने और समझने लगेगा, जब यह कला आप विकसित कर लेंगे। आपको लोग पसंद करने लगेंगे।

7. चिंतन करना एवं स्पष्ट सोच रखना

कुछ मिनट एकदम एकांत में चिंतन करना चाहिए, लक्ष्य तय करना चाहिए कि हम जीवन में क्या पाना चाहते हैं? चिंतन में अपनी मंजिल देखनी चाहिए, संवाद करने की उत्तम कला से जीवन प्रफुल्लित हो जाता है। चिंतन एवं ध्यान में बहुत अंतर है। चिंतन भारी होता है जबकि ध्यान हल्का होता

है, ध्यान में हम विचार विहीन हो जाते हैं जबकि चिंतन में विचारमग्न।

8. नियोजन करना एवं प्राथमिकता तय करना

कार्य का नियोजन कर व्यवस्थित रूप से करने के लिए उसकी प्राथमिकता तय करनी चाहिए कि पहले कौन सा कार्य और लक्ष्य प्राप्त करें, यदि प्राथमिकताएं पूरी नहीं हो पाती मतलब हमने प्राथमिकताओं को दिल दिमाग में बिठाया ही नहीं ताकि बाकी चीजों को 'ना' कहना आसान हो सके। उस काम को सबसे पहले करना चाहिए जो आपको आपकी मंजिल के करीब लेकर जाएगा।

9. तालमेल कायम करना एवं एक साथ कार्य करना

“संपूर्ण इसके भागों से अधिक है” सफल लोग इस आधार पर एक “मास्टरमाइंड” योजना बनाते हैं। कई स्मार्ट और रचनात्मक दिमागों का संरेखण केवल एक की तुलना में अधिक शक्तिशाली है। सद्भाव की भावना में समन्वित (या जुड़ा हुआ) दिमाग का एक समूह एकल मस्तिष्क की तुलना में अधिक विचार, ऊर्जा प्रदान करेगा, जिस प्रकार विद्युत बैटरी का एक समूह एक बैटरी की तुलना में अधिक ऊर्जा प्रदान करेगा। हम उन लोगों की तरह बन जाते हैं जिनसे हम जुड़ते हैं। एक साथ कार्य करना हमारे जीवन में रोज संभव नहीं हो पाता। परन्तु, एक दूसरे के विचारों को समझना और उनके विचारों को सम्मान देना एवं एक दूसरे के साथ काम करना होगा।

10. ध्यान एवं मानसिक सुकून

किसी शांत जगह ध्यान करिए, प्राणायाम करिए, मनन करिए, बैठकर अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करिए। वह ध्यान जिससे आप दुनिया की किसी भी चीज को आकर्षित



कर सकते हैं। परंतु इतना आसान नहीं है विचारविहीन होना। भारत एक समृद्ध देश है आध्यात्म व प्राणायाम के कई धर्मगुरु हैं। मन को सुकून देने वाला संगीत सुनिए। संगीत, पुस्तक व रेडियो से जुड़कर आप रिचार्ज हो सकते हैं। जब आप पूरी तरह से प्रफुल्लित महसूस करें, जब आपका दिमाग उस विषय वस्तु को ग्रहण करने की क्षमता रखता हो, जब आप ऊर्जावान हो तब पढ़ें और सीखें। सीखना केवल विद्यालय या महाविद्यालय तक ही सीमित नहीं है।

11. व्यायाम

प्रतिदिन कुछ समय निकालकर व्यायाम करना चाहिए जिससे शरीर की रोगों से लड़ने वाली प्रतिरोधक क्षमता बढ़ सकें। स्वस्थ मन स्वस्थ तन में ही निवास करता है। पसीना निकाल देने वाला व्यायाम हमारे जीवन में आरि में धार लगाने जैसा है। जिससे हम अनचाहे रोगों को मजबूत शरीर की आरि की धार से काट सकते हैं।

12. सेवा करना व त्याग की भावना रखना

हमें ईश्वर के बनाए हुए जीवों की सेवा करनी चाहिए। मूक पशुपक्षियों को दाना पानी व हरी घास देकर उनकी सेवा करना, अस्पताल के बाहर फल बांटना, गरीब छात्र की पढ़ाई की जिम्मेदारी लेना, एक सेवा संस्थान को अपने वेतन से कुछ पैसा निकाल कर किसी जरूरतमंद की विद्यालय या महाविद्यालय की शुल्क जमा कर देना। ऐसा करने से असीम सुख और शांति प्राप्त होती है।

यदि आपको अपना नजरिया बदलना है तो आपको

अपना चरित्र बदलना होगा। आपको स्वयं की सोच व स्वयं को बदलना होगा अपनी बुरी आदतें बदलने के लिए अपने उसूल बदलने होंगे। उसूल आपके अंदर की भावनाएं हैं जिनकी वजह से आप किसी आदत को अपनाते हैं। उसूल आदतों की जड़े हैं। ज्ञान अर्जित करने से कुछ नहीं बदलता जब तक ज्ञान आपके कार्यरूप में परिवर्तित ना हो। चीजें जानने से नहीं, मानने से बदलती हैं। यदि आप पढ़े लिखे हैं एवं 100 चीजें जानते हैं परंतु, 5 पर ही अमल करते हैं एवं एक गंवार व्यक्ति 20 बातें जानता है एवं 10 को अपनाता है तो वह आपसे ज्यादा सफल हो जाएगा

“यह ज्ञान की कमी या प्रचुरता के बारे में नहीं है, इस बारे में है कि आप उस ज्ञान को आदत में कैसे बदलते हैं।”

“आदतें आपको बनाती हैं, आदतें आपको तोड़ती हैं और आदतें आपको वहां ले जाती हैं जहां आप जाना चाहते हैं। आपका जीवन और कुछ नहीं बल्कि आपकी आदतों का प्रतिबिंब है।”



भोजपुर मंदिर (विशालतम शिवलिंग)

श्रीमती सारिका शर्मा
पर्यवेक्षक



की मूर्तियाँ लगी हैं। इसके साथ ही गर्भगृह के विशाल शीर्ष स्तंभ पर भगवान शिव-पार्वती, ब्रह्मा-सरस्वती, राम-सीता एवं विष्णु-लक्ष्मी की मूर्तियाँ जोड़े में स्थापित हैं।

भोजपुर मंदिर मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 30-32 किलोमीटर (रायसेन जिला में) दूर स्थित भोजपुर गांव में पहाड़ी पर एक अदभुत और विशाल परन्तु अधूरा शिव मंदिर है। यह भोजपुर शिव मंदिर या भोजपुर मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्राचीन शिव मंदिर का निर्माण परमार वंश के प्रसिद्ध राजा भोज (1010 ई. -1055 ई.) द्वारा करवाया गया था।

इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता है यहां का विशाल शिवलिंग, अपने आप में अनूठे और विशाल आकार वाले इस शिवलिंग के कारण भोजपुर मंदिर को उत्तर भारत का सोमनाथ भी कहा जाता है। चिकने लाल बलुआ पाषाण के बने इस शिवलिंग को एक ही पत्थर से बनाया गया है और यह विश्व का सबसे बड़ा प्राचीन शिवलिंग माना जाता है जिसकी ऊँचाई 3.85 मीटर है।

मंदिर में प्रवेश के लिये पश्चिम दिशा में सीढ़ियाँ हैं। गर्भगृह के दरवाजों के दोनों ओर नंदी, देवी गंगा और यमुना

सामने की दीवार के अलावा बाकी अन्य तीनों दीवारों में कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर यक्षों की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

बड़े शिवलिंग के अनुरूप यहाँ का विशाल प्रवेश द्वार भी आकर्षण का केन्द्र है क्योंकि ये प्रवेश द्वार भारत के किसी भी मंदिर के प्रवेश द्वारों में सर्वाधिक विशाल है। इस मंदिर की एक अन्य विशेषता 40 फीट ऊँचाई वाले इसके चार स्तम्भ हैं। गर्भगृह की अधूरी बनी छत इन्हीं चार स्तंभों पर टिकी है।

भोजपुर मंदिर की छत गुम्बदाकार है। कुछ विद्वान इसे भारत की प्रथम गुम्बदीय छत वाली इमारत कहते हैं जो सिद्ध करती है कि भारत में गुम्बद निर्माण का प्रचलन इस्लाम के आगमन के पूर्व भी था।

परमार वंश के प्रतापी राजा भोज ने इस विशाल



16
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

मंदिर का निर्माण अपने विख्यात ग्रंथ समराड्ण सूत्रधार के आधार पर करवाया था। समराड्ण सूत्रधार भारतीय वास्तुशास्त्र से संबंधित ग्रंथ है जिसमें नगर योजना, भवन शिल्प, मंदिर शिल्प, मूर्तिकला तथा मुद्राओं सहित यंत्र के बारे में लिखा है एवं ग्रंथ के एक अध्याय जिसका नाम यंत्र विधान है जिनमें भारी वस्तुओं को ऊँचाई पर पहुँचाने के लिये आधुनिक हाइड्रोलिक्स सिद्धांत का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। शायद इसी सिद्धांत का उपयोग कर ऊँचाई पर इतने भारी पत्थर पहुँचाये गये होंगे। मंदिर के ठीक पीछे के भाग में एक ढलान बना है जिसका उपयोग निर्माणाधीन मंदिर के समय विशाल पत्थरों को ढोने के लिए किया गया था।

भोजेश्वर का यह विशाल मंदिर अधूरा मंदिर है तथा यह अपने आप में अबूझ और अनसुलझ रहस्य समेटे है।

इस मंदिर को देख कर ऐसा लगता है मानो निर्माण कार्य एकदम से ही रोक दिया गया होगा। इसका निर्माण अधूरा क्यों रखा गया इस बात का इतिहास में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता परन्तु जनश्रुति के अनुसार इस मंदिर का निर्माण एक ही रात में होना था। परन्तु छत का काम पूरा होने के पहले ही सुबह हो गई। इसलिए निर्माण अधूरा रह गया। इस संबंध में भिन्न मत-मतांतर है पर साधारणतया दो कथाएं प्रचलित हैं। पहली जनकथा के अनुसार वनवास के समय इस शिव मंदिर को पांडवों ने बनवाया था। द्वापर युग में पांडवों द्वारा माता कुंती की शिव पूजा के लिए इस शिवलिंग का निर्माण एक ही रात में किया गया था। जैसे ही सुबह हुई तो पांडव लुप्त हो गए और मंदिर अधूरा ही रह गया। इस मंदिर के पास ही बेतवा नदी है। जहाँ कुंती द्वारा कर्ण को छोड़ने की

जन कथाएं भी प्रचलित हैं। दूसरी मान्यता के अनुसार इस मंदिर का निर्माण मध्य भारत के परमार वंशीय राजा देव द्वारा 11वीं सदी में करवाया गया था।

अपूर्ण होने के बावजूद भी इस स्मारक को मंदिर के रूप में धार्मिक अनुष्ठानों एवं मेला आयोजन के लिये प्रयोग किया जाता रहा है। महाशिवरात्रि के अवसर पर लगने वाले मेले के समय यहाँ की धूमधाम देखते ही बनती है। शिवरात्रि के अवसर पर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा यहाँ भोजपुर उत्सव का आयोजन किया जाता है।

मध्य प्रदेश की राजधानी से महज 30 किलोमीटर दूर होने के कारण यहां तक पहुँचने के लिए आवागमन के सभी साधन आसानी से उपलब्ध हैं। इसलिए 4 वर्ष पूर्व मैं जब पहली बार भतीजी की शादी में शामिल होने भोपाल गई तो समय निकाल कर इस अद्भुत मंदिर के दर्शन करने भी गई। हमारे भारत देश में अनेक आकर्षक ऐतिहासिक स्थल, रहस्यमय स्थान एवं प्राकृतिक स्थलों वाले अनेक पर्यटन स्थल हैं। इसलिये जब भी किसी शहर या गांव जाएं उसके आस-पास के दर्शनीय स्थलों को देखने का समय जरूर निकालना चाहिये। इन दर्शनीय स्थलों पर जाकर देखने से जो आनन्द प्राप्त होता है वह अवर्णनीय है।



दतिया का प्रसिद्ध सतखंडा महल और उससे जुड़ी कुछ रोचक बातें

अनुशील जौहरी
सहायक पर्यवेक्षक



इस देश के कोने-कोने में बिखरी पड़ी है कई कहानियां कुछ पत्थरों में गड़ी तो कुछ पीछे छूट गई निशानियां। मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक स्मारकों में दतिया का महल बहुत प्रसिद्ध है, जो अपनी गौरवशाली अतीत के साथ आज भी शान से खड़ा है। दतिया के इस महल को मैंने कई बार देखा है और जितनी बार मैं इसे देखता हूं उतनी बार यह महल मुझे कुछ अलग नजर आता है।

इस महल की बनावट और इसकी विशालता मुझे हमेशा चकित और आकर्षित करती है।

मैं इस महल की बनने और इस महल से जुड़ी कुछ रोचक घटनाएं, किस्से, कहानियां, जो कुछ मैंने सुनी और इस महल को देखने के बाद समझी हैं, आपको बताता हूँ।

दतिया ग्वालियर से लगभग 70 किलोमीटर दूर मध्य प्रदेश का एक छोटा जिला है। बुंदेलखंड का यह छोटा जिला अपने महल के साथ-साथ माँ पीताम्बरा माई के प्रसिद्ध धार्मिक स्थान के लिए भी जाना जाता है।

दतिया का पुराना महल, लगभग 17वीं शताब्दी में बुंदेला राजा वीर सिंह ने बनवाया था। ये महल अटूट दोस्ती की एक मिसाल माना जाता है। इसे बुंदेला शासक वीर सिंह देव ने अपने प्रिय मित्र मुगल शासक जहांगीर के लिए बनवाया था, जो सिर्फ यहाँ एक रात के लिए मेहमान के रूप में रुकने वाले थे। मगर वह किसी कारण से यहां नहीं आ सके। यह महल शहर के बीचों-बीच एक पहाड़ी पर बना हुआ है।

40 मीटर की ऊँचाई पर बना ये महल अपनी भव्यता और गौरवशाली इतिहास से आज भी लोगों को चकित करता है। दतिया के इस महल को कई नामों से जाना जाता है जैसे वीर सिंह



महल, बुंदेला महल, सतखंडा महल, पुराना महल और गोविंद महल। इस महल की बेहद महत्वपूर्ण बात यह है कि इस महल के निर्माण में किसी भी प्रकार की लकड़ी, लोहा, सीमेंट का प्रयोग नहीं किया गया, बल्कि पत्थरों के साथ तेल, दाल और गुड़ के प्राचीन मिश्रण से इस महल को बनाया गया था।

महल की दीवारें खूबसूरत तस्वीरों से सजी हुई हैं जिसके रंग आज भी फीके नहीं हुए हैं। राजा वीर सिंह और जहांगीर की दोस्ती जग विख्यात थी। इसी दोस्ती को चित्रों द्वारा दर्शाया गया है। ये चित्र सब्जियों, फलों और जैविक रंगों को साथ मिला कर बनाये गये थे। अगर आप दतिया शहर को देखना चाहते हैं तो महल की छत से देख सकते हैं। सात मंजिला बने इस महल का प्रमुख द्वार पूर्व की तरफ है जबकि इसके दक्षिण में खूबसूरत करण सागर है जो इस महल को और भी खूबसूरत बनाता है। इस महल में लगभग 440 कमरे और कई आँगन हैं। किले का प्रवेश द्वार शाही मेहमानों के स्वागत के लिए बहुत भव्य और विशेष बनाया गया



18
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



था। प्रवेश द्वार को जटिल चित्रों से सजाया गया है जैसे गणेश जी के चित्र, नृत्य करती स्त्रियाँ, घोड़े के चित्र, फूल पत्ती आदि महल के मुख्य द्वार की शोभा बढ़ाते हैं।

दतिया के महल को भूल-भुलैया किला भी कहते हैं। इस महल को बनने में लगभग 9 साल का वक्त लगा था। यह महल सात मंजिला इमारत है। पहली दो मंजिल भूमिगत हैं जिसमें हमेशा अंधेरा रहता है, तीसरी मंजिल में बालकनी है जिससे पूरा शहर देखा जा सकता है। चौथी मंजिल पर जब आप जाएंगे तो यहां फर्श पर चौपाईनुमा प्राचीन भारतीय खेलों से प्रभावित चित्र देखेंगे, जो राई नृत्य कर रही है। यह नृत्य बुंदेलखंड का प्रसिद्ध नृत्य है जो शाही समारोह और तीज त्योहारों पर किया जाता है। पांचवी मंजिल में सिर्फ एक कमरा है जो सेंटर टॉवर की ओर जाता है। पांचवी मंजिल को भी आकर्षक चित्रों से सजाया गया है इस महल की हर मंजिल एक अलग विशेषता लिए हुए है। सभी सात मंजिलें एक स्वास्तिक पर टिकी हुई हैं। स्वास्तिक गणेश जी का शुभ चिन्ह है। इसके अलावा इस महल के शीश पर एक सुंदर गणेश जी की मूर्ति भी बनी है और छठी मंजिल पर एक मजार बनी है।

दतिया का महल हिंदू स्थापत्य कला का एक अद्भुत नमूना माना जाता है। इस महल की बनावट जहां मुगल शिल्प कला से बहुत प्रभावित है वहीं पवित्र हिंदू चिन्ह स्वास्तिक को भी अहमियत दी गई है, यही वजह थी कि ब्रिटिश शिल्पकार एडमिन

लुटियंस को यह महल और इसकी बनावट बेहद आकर्षित करती थी। उन्होंने इसे कई बार देखा था। दतिया महल हिंदू और मुगल राजपूती शैली का मिश्रण भी माना जाता है और यही बात इस महल को और भव्यता देता है। इस महल का एक-एक कोना जैसे उसका प्रांगण, जालीदार खिड़कियाँ, बड़े दरवाजे, आँगन, नक्काशी की गई छतरियाँ और रंग बिरंगे फूल-पत्तियों से बने चित्र इस महल को आकर्षक बनाते हैं। यह महल जितना अपनी भव्यता के लिए मशहूर है उतना ही राजा वीर सिंह और मुगल शासक बादशाह जहांगीर की दोस्ती के लिए प्रसिद्ध है। ये महल कभी किसी की रियासत नहीं रहा। राजा वीर सिंह भी यहाँ कभी नहीं रहे और जिनके लिए यह महल बनवाया गया था वो बादशाह जहांगीर भी यहाँ कभी नहीं आ सके।

इस महल में कभी कोई स्थाई रूप से निवास नहीं कर पाया है। इसका कारण इस महल का वास्तु दोष माना जाता है। वास्तुकारों के हिसाब से इस महल की सातों मंजिलें एक उल्टे स्वास्तिक पर टिकी हुई हैं जो बहुत बड़ा दोष है। शायद इसलिए यह महल कभी आबाद नहीं रहा। फिर भी दतिया का महल अद्भुत है। यह बुंदेलखंड का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक माना जाता है। इस महल की भव्यता और विशालता को देखने के लिए हमें अपने जीवन काल में एक बार यहाँ जरूर आना चाहिए।



ओरछा

शाहमीर खान
डी.ई.ओ.



ओरछा का शाब्दिक अर्थ है 'छिपी हुई जगह' और यह अपने नाम के अनुरूप है। लगभग 12,000 निवासियों की कुल आबादी के साथ, ओरछा भारत के मध्य प्रदेश के निवाड़ी जिले में एक ऐतिहासिक शहर है। शहर में ऐतिहासिक इमारतों, उद्यानों और पारंपरिक आवासों का बहुत घना संग्रह है, जो बेतवा नदी के किनारे पर स्थित है। ओरछा से निकटतम रेलवे स्टेशन झाँसी लगभग 16 कि.मी. दूर है। झाँसी से ओरछा जाने के रास्ते पर दोनों तरफ खेतों के साथ संकरी घुमावदार सड़कें किसी का भी मन मोह सकती हैं। प्रकृति का अद्भुत नजारा देखने के लिए ओरछा अत्यन्त उत्तम स्थान है।

ओरछा की स्थापना बुंदेला रुद्र प्रताप सिंह ने 16वीं शताब्दी में की थी, लगभग एक दशक के बाद, वीरसिंह देव (1605—1627) ओरछा के राजा बन गए, जो संभवतः ओरछा के बुंदेला राजाओं में सबसे महान थे। वीरसिंह देव मुगल वारिस राजकुमार सलीम के साथ निकटता से जुड़े और सलीम के सुझाव पर वीरसिंह देव ने सन् 1602 में अकबर के सबसे करीबी सलाहकार "अबू 'फज़ल'" की हत्या कर दी। हालाँकि, तत्पश्चात् अकबर की सेना ने उसी साल ओरछा पर हमला किया और वीरसिंह देव को भागना पड़ा। तीन साल बाद मुगल सिंहासन ने सलीम को जहांगीर के नाम से जाना और जहाँगीर ने वीरसिंह देव को ओरछा के राजा के रूप में स्थापित किया। वीरसिंह देव ने ओरछा में दतिया और झाँसी के किले का निर्माण करवाया, और मथुरा और वाराणसी में मंदिरों का निर्माण करवाया, जो बुंदेली स्थापत्य शैली को उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में फैलाते हैं। उन्हीं के नेतृत्व में ओरछा विकसित हुआ और बुंदेली स्थापत्य शैली के

रूप में वास्तुकला की एक नई शैली का स्थापना बिंदु बन गया।

बुंदेला राजवंश की राजधानी के रूप में, ओरछा के स्मारक, उद्यान और एक भित्ति चित्र, शहर की योजना, निपटान का सुदृढ़ीकरण, इमारतें, उद्यान डिजाइन और कला में उल्लेखनीय विकास का प्रतिनिधित्व करते हैं। सांस्कृतिक परिदृश्य ने मिथकों, रोड़े, साहित्यिक और लोक कलाओं की विभिन्न परंपराओं को बढ़ावा दिया।

विभिन्न कलानुक्रमिक रूप से ओरछा की तुलना भारत में चंपानेर और हम्पी से और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विसंज़ा शहर और इटली में वेनेटो के पल्लडियन विला और कंबोडिया से की जा सकती है। ओरछा की वास्तुकला और निपटान योजना का राजपूत और मुगल शैली दोनों पर भारी प्रभाव पड़ा है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, कंबोडिया में अंगकोर, जो एक विश्व धरोहर स्थल है, एक समानांतर हो सकता है क्योंकि दोनों साइटों में कई मंदिर हैं, जिनमें से कुछ अभी भी कार्यात्मक हैं। हाइड्रोलिक संरचनाएं, परिदृश्य और साथ ही योजना के सिद्धांतों के लिए एक मजबूत प्रतिक्रिया है। दोनों साइटों में अभी तक पैमाने बहुत भिन्न हैं, स्थानीय सामग्री और स्थानीय तकनीकों के सुसंगत उपयोग के कारण वास्तुकला एक सौहार्दपूर्ण रूप से पूरी तरह एक अद्वितीय स्थापत्य शैली की ओर ले जाता है। अंगकोर और ओरछा दोनों ही प्रमुख स्थल हैं जो सांस्कृतिक, धार्मिक और प्रतीकात्मक मूल्यों के साथ-साथ उच्च वास्तुशिल्प, पुरातात्विक और कलात्मक महत्व से युक्त हैं।

20

गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



ओरछा का रामराजा मंदिर भगवान राम, जानकी की मूल प्रतिमाओं के लिए उत्तर भारत में विशेष स्थान रखता है। इसी कारण लाखों पर्यटक ओरछा के पुरातात्विक महत्व के खूबसूरत महलों, विशाल किलों, शीशमहल, जहाँगीर महल, रायप्रवीण महल, लक्ष्मी मंदिर, चतुर्भुज मंदिर, बेतवा नदी के तट पर स्थित छतरियों सहित अनेक ऐतिहासिक इमारतों को निहारने के लिए प्रतिवर्ष यहाँ आते हैं।



रामराजा मंदिर— रामराजा मंदिर, जिसे ओरछा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, धार्मिक महत्व रखता है क्योंकि यह भारत का एकमात्र मंदिर है, जहाँ भगवान राम को राजा राम के रूप में पूजा जाता है। दिलचस्प बात यह है कि न सिर्फ उनकी यहाँ राजा के रूप में पूजा की जाती है, भक्ति और सम्मान के प्रतीक के रूप में बंदूक की सलामी भी दी जाती है। भगवान श्रीराम ही ओरछा के राजा हैं और रामराजा कहलाते हैं। 444 वर्ष प्राचीन परम्परा के अनुसार भगवान श्रीराम को प्रतिदिन सुबह और शाम सशस्त्र बल द्वारा “गार्ड ऑफ ऑनर” देने की परम्परा का पालन

आज भी राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है। देश के सभी मंदिरों से इतर रामराजा मंदिर में प्रतिदिन सुबह और शाम की

आरती के बाद दर्शनार्थी को भगवान के प्रसाद के रूप में पान का बीड़ा और इत्र की कली वितरित किए जाने की आदिकालीन परम्परा आज भी निभाई जा रही है।

राजा राम के ओरछा में विराजने की एक प्राचीन कथा आज भी प्रचलित है। एक बार महाराजा मधुकरशाह ने अपनी पत्नी गणेशकुंवरी से वृंदावन साथ चलने के लिए कहा, मगर महारानी तो भगवान राम की भक्ति में लीन रहती थी, इसलिए उन्होंने जाने से मना कर दिया। महाराजा ने महारानी को तैश में आकर कहा कि, “इतनी रामभक्त हो तो अपने राम को ओरछा में ले आओ”। इसके बाद रानी अयोध्या गई और वहाँ सरयू तट पर साधना शुरू कर दी। कई महीनों बाद भी राम जी के दर्शन नहीं हुए तो रानी नदी में कूद गई, नदी में रामजी के दर्शन हुए, तब रानी ने रामजी से ओरछा चलने का निवेदन किया। इसके बाद ओरछा के महाराजा मधुकरशाह ने ओरछा में रामराजा की स्थापना की ओर वह आज भी वैसा ही है।

भगवान श्रीराम को दिए गए वचनों के अनुरूप ओरछा के रामराजा मंदिर की वास्तुकला और नक्शे के समान ही राजा मधुकरशाह ने अयोध्या में कनक भवन मंदिर और नेपाल के जनकपुर में नौलखा मंदिर का निर्माण कराया था। अयोध्या के कनक भवन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष आज भी टीकमगढ़ के पूर्वशासक मधुकरशाह द्वितीय हैं। उत्तर भारत के मंदिरों में “रामराजा मंदिर ओरछा” देश के अत्याधिक धनी मंदिरों में विख्यात है। प्राचीन समय में अपनी स्थापना से अब तक भगवान को

भेंट किए गए अनेक तरह के सोने, चाँदी के रत्नों से जुड़े हुए सैकड़ों आभूषण मंदिर में विशाल चार बक्सों में अकूत सम्पत्ति के रूप में जमा हैं।

जहाँगीर महल— जहाँगीर महल मुगल-बुंदेला दोस्ती का प्रतीक है। कहा जाता है कि बादशाह अकबर ने



अबुल फज़ल को शहजादे सलीम (जहाँगीर) को काबू करने के लिए भेजा था, लेकिन सलीम ने वीरसिंह की मदद से उसका कत्ल करवा दिया। इससे खुश होकर सलीम ने ओरछा की कमान वीरसिंह को सौंप दी थी। यह महल बुंदेला की वास्तुशिल्प का प्रमाण है। खुले गलियारे, पत्थरों वाली जाली का काम, जानवरों की मूर्तियाँ, बेलबूटे जैसी तमाम बुंदेला वास्तुशिल्प की विशेषताएँ यहाँ साफ देखी जा सकती हैं।

चंद्रशेखर आजाद स्मारक— बुंदेलों का राजकाल खत्म होने के साथ ही ओरछा भी गुमनामी के अंधेरे में खो गया और फिर वह स्वतंत्रता संग्राम के समय सुर्खियों में आया। दरअसल, स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद यहाँ के एक गाँव में आकर छिपे थे। 1926–1927 में अपने निर्वासन या “अज्ञातवास” के दौरान यही स्थान उस क्रांतिकारी नायक का निवास था एवं यहीं से नौजवानों में देश के प्रति कुरबानी देने की भावना को जागृत करने का कार्य आजाद द्वारा किया जाता रहा। युवाओं को हथियार चलाने का प्रशिक्षण



देना एवं अंग्रेजों से लोहा लेने की कला को आजाद द्वारा पूर्ण रूप से सिखाया गया। ओरछा से लगभग 4 कि.मी. दूर स्थित यह स्थान शहीद चंद्रशेखर आजाद के निर्वासन के जीवन का विस्तृत विवरण है। आज उनके ठहरने की जगह पर एक स्मृति चिन्ह भी बना है। यह

जगह पर्यटकों के भीतर देशभक्ति की भावना को पुनर्जीवित करती है।

सुन्दर महल— महल का निर्माण राजा जुझार सिंह के पुत्र, राजकुमार धूर्जन द्वारा किया गया था। धूर्जन ने बाद में खुद को परिवर्तित कर लिया और अपना जीवन प्रार्थना और ध्यान में समर्पित कर दिया। हरदौल समाधि की तरह ही, धूर्जन एक संत के रूप में पूजनीय हैं एवं हजरत सुंदर शाह बाबा की मृत्यु के बाद उनका इस



महल में एक मकबरा बनाया गया था। इसके ऊपर एक बड़ी बारादरी है जो मकबरे की दक्षिणी दीवार के एक बरामदे पर मौजूद है, जो मकबरे के बाद बनाया गया था। बारादरी ने समाधि पर आने वाले भक्तों के लिए शेड के रूप में सेवा की। महल के प्राचीर के चारों कोनों पर बस्तियाँ मौजूद हैं और मेहराब चित्रित हैं। मकबरे की केवल बारादरी ही अच्छी हालत में है। पूरी इमारत पत्थर, ईंटों और चूने से बनी है।

चतुर्भुज मंदिर— गुर्जर प्रतिहार वंश के शासनकाल के दौरान 875 ईस्वी में निर्मित, यह प्रसिद्ध मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। नाम का शाब्दिक अर्थ है चार भुजाओं वाला, और भगवान विष्णु को विभिन्न हिंदू ग्रंथों में चतुर्भुज के रूप में संदर्भित किया गया है। ओरछा में चतुर्भुज मंदिर को भारत में हिंदू मंदिरों में सबसे ऊँचे मंदिरों में से एक माना जाता है, जिसकी ऊँचाई 344 फीट है।



छतरियां (सेनोटाफ़)– छतरियां बेतवा नदी के तट पर स्थित, छत्तीस (36) महाराजाओं के शानदार शाही मकबरों का एक समूह है, जिसे एक मंच पर रखा गया है और स्तंभों द्वारा समर्थित है। छतरियों के



आकर्षण का सबसे अच्छा अनुभव तब होता है, जब इसे नदी के विपरीत दिशा में एक संकरे पुल से देखा जाता है, जहाँ से मकबरों का पूरा प्रतिबिंब देखा जा सकता है। गुंबदों को उत्कृष्ट चित्रों से सजाया गया है, इस मंदिर में सुंदर वास्तुकला है और इसमें पंचरथ शिखर के साथ एक गृह, एक वेस्टिबुल और एक बरामदा है।

इस मंदिर में एक छोटे से बरामदे के साथ एक और घुमावदार मीनार है, जो देखने में बहुत ही आकर्षक है।

फूल बाग– यह बुंदेलों के सौंदर्य गुणों को दर्शाने वाला एक सुंदर उद्यान है। इस उद्यान परिसर में कई फव्वारे हैं।

ओरछा के राजाओं द्वारा इस उद्यान का उपयोग गर्मियों में एकांतवास के रूप में किया जाता था। यह उद्यान राजकुमार दिनमन हरदौल के स्मारक के रूप में बनाया गया था, जिन्होंने अपने बड़े भाई को बेगुनाह साबित करने के लिए आत्महत्या कर ली थी।

ओरछा एक आकर्षक जगह है और देखने लायक है। यह रहने के लिए एक आरामदेह जगह है। यहाँ का वातावरण एवं मनमोहक दृश्य हर स्थिति में आपका ध्यान आकर्षित करने की खूबी रखते हैं। यदि कोई व्यक्ति भक्ति के माहौल के साथ प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव लेना चाहता हो तो उसे एक बार ओरछा अवश्य आना चाहिए।



तीर्थों का राजा चित्रकूट

सृष्टि सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



कर्वी मंदाकिनी नदी के किनारे पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थस्थलों में से एक है। 38.2 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला शांत और सुन्दर चित्रकूट प्रकृति और ईश्वर की अनुपम देन है। चारों ओर से विन्ध्य पर्वत श्रृंखलाओं और वनों से घिरे चित्रकूट को अनेक आश्चर्यों की पहाड़ी कहा जाता है। मंदाकिनी नदी के किनारे बने अनेक घाटों और मंदिरों में पूरे साल श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है। माना जाता है कि भगवान राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ अपने वनवास के चौदह वर्षों में साढ़े ग्यारह वर्ष चित्रकूट में ही बिताए थे। उसी स्थान पर ऋषि अत्रि और सती अनसुइया ने ध्यान लगाया था। ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने चित्रकूट में ही सती अनसुइया के घर जन्म लिया था। इसी जिले में राजापुर नामक स्थान को संत तुलसीदास जी का जन्म स्थान बताया जाता है, तथा उनके द्वारा लिखित रामायण भी यहां रखी हुई है।

मुख्य आकर्षण

कामदगिरि— इस पवित्र पर्वत का काफी धार्मिक महत्व है। श्रद्धालु कामदगिरि पर्वत की 5 किलोमीटर की परिक्रमा कर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण होने की कामना करते हैं। जंगलों से घिरे इस पर्वत के तल पर अनेक मंदिर बने हुए हैं। चित्रकूट के लोकप्रिय कामतानाथ और भरत मिलाप मंदिर भी यहां स्थित हैं।

चित्रकूट में रमि रहे, “रहिमन” अवध—नरेस।
जा पर विपदा परत है, सो आवत यहि देस।।

अर्थ — अयोध्या के महाराज राम अपनी राजधानी

छोड़कर चित्रकूट में जाकर बस गए। इस अंचल में वही आता है, जो किसी विपदा का मारा होता है। कहा जाता है जिस पर आपत्ति आती है, उसे चित्रकूट जाने पर शांति का एहसास होता है। कवि रहीम खान की इस बात पर शायद ही किसी को कोई शक होगा।

रामघाट— रामघाट वह घाट है, जहाँ प्रभु राम नित्य स्नान किया करते थे। इसी घाट पर राम—भरत मिलाप मंदिर है और इसी घाट पर गोस्वामी तुलसीदास जी की



प्रतिमा भी है। मंदाकिनी नदी के तट पर बने रामघाट में अनेक धार्मिक क्रियाकलाप चलते रहते हैं। शाम को होने वाली यहाँ की आरती मन को काफी सुकून पहुँचाती है।

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीड़।
तुलसीदास चन्दन धिसे तिलक देत रघुवीर।।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामघाट पर भगवान



24
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

श्रीराम के दर्शन किए थे। यह घाट आज आधुनिकता से रंगा है। पूरा घाट लाल पत्थर का बना है लेकिन घाट पर प्राचीन मंदिर अभी भी देखे जा सकते हैं।

जानकी कुण्ड— रामघाट से 2 किलोमीटर की दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनारे जानकी कुण्ड स्थित है। जनक पुत्री होने के कारण सीता को जानकी कहा



जाता था। माना जाता है कि जानकी यहाँ स्नान करती थी।

स्फटिक शिला— जानकी कुण्ड से कुछ दूरी पर मंदाकिनी नदी के किनारे ही यह शिला स्थित है। माना जाता है कि इस शिला पर सीता के पैरों के निशान अंकित हैं। कहा जाता है कि जब वह इस शिला पर खड़ी थी, तो जयंत ने काक रूप धारण कर उन्हें चोंच



मारी थी। इस शिला पर राम और सीता बैठकर चित्रकूट की सुन्दरता निहारते थे।

अनसुइया अत्रि आश्रम— स्फटिक शिला एवं घने वनों से घिरा यह एकान्त आश्रम है। इस आश्रम में अत्रि मुनि,



अनसुइया, दत्तात्रेय और दुर्वासा मुनि की प्रतिमा स्थापित हैं तथा यही वह स्थान है जहाँ त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ने बाल स्वरूप में दर्शन दिए एवं माता अनसुइया के पुत्र बनकर रहने लगे थे।

गुप्त गोदावरी— गुप्त गोदावरी, यहाँ दो गुफाएँ हैं। एक गुफा चौड़ी और ऊँची है। प्रवेश द्वार संकरा होने के



कारण इसमें आसानी से नहीं घुसा जा सकता। गुफा के अंत में एक छोटा तालाब है, जिसे गोदावरी नदी कहा जाता है। दूसरी गुफा लंबी और संकरी है जिससे हमेशा पानी बहता रहता है। कहा जाता है कि इसी गुफा के अंत में राम और लक्ष्मण ने दरबार लगाया था।



हनुमान धारा— पहाड़ी के शिखर पर स्थित हनुमान धारा में हनुमान की एक विशाल मूर्ति है। मूर्ति के सामने तालाब में झरने से पानी गिरता है। कहा जाता है कि यह धारा श्रीराम ने लंका दहन से आए हनुमान के आराम के लिए बनवाई थी। पहाड़ी के शिखर पर ही 'सीता रसोई' है। यहाँ से चित्रकूट का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है।



भरतकूप— कहा जाता है कि अत्रि मुनि के परामर्श पर भगवान राम के राज्याभिषेक के लिए भरत ने भारत की सभी नदियों से जल एकत्रित कर एक कूप में रख दिया था। इसी कूप को भरत कूप के नाम से जाना जाता है। भगवान राम को समर्पित यहाँ एक मंदिर भी है।



भारतीय साहित्य और पवित्र ग्रन्थों में प्रख्यात, वनवास काल में साढ़े ग्यारह वर्षों तक भगवान राम,

माता सीता तथा श्रीराम के अनुज लक्ष्मण की निवास स्थली रहा चित्रकूट, मानव हृदय को शुद्ध करने और प्रकृति के आकर्षण से पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। चित्रकूट एक प्राकृतिक स्थान है जो प्राकृतिक दृश्यों के साथ-साथ अपने आध्यात्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। युवा पर्यटक यहाँ के खूबसूरत झरने, चंचल हिरणों और नाचते मोरों को देखकर रोमांचित होता है तो एक तीर्थयात्री पयस्वनी/मन्दाकिनी में डुबकी लेकर और कामदगिरि की धूल में तल्लीन होकर अभिभूत होता है। प्राचीन काल से चित्रकूट क्षेत्र ब्रह्मांडीय चेतना के लिए प्रेरणा का एक जीवंत केन्द्र रहा है। हजारों भिक्षुओं, साधुओं और संतों ने यहाँ उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की है और अपनी तपस्या, साधना, योग और विभिन्न कठिन आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से विश्व पर लाभदायक प्रभाव डाला है। प्रकृति ने इस क्षेत्र को बहुत उदारतापूर्वक अपने सभी उपहार प्रदान किए हैं, जो इसे दुनिया भर के तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम बनाते हैं। अत्री, अनुसुइया, दत्तात्रेय, महर्षि मार्कंडेय, सारभंग, सुतीक्ष्ण और अन्य ऋषि, संत, भक्त और विचारक सभी ने इस क्षेत्र में अपनी आयु व्यतीत की और जानकारों के अनुसार ऐसे अनेक लोग आज भी यहाँ की विभिन्न गुफाओं और अन्य क्षेत्रों में तपस्यारत हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र में एक आध्यात्मिक सुगंध है, जो पूरे वातावरण में व्याप्त है और यहाँ के प्रत्येक दिन को आध्यात्मिक रूप से जीवंत बनाती है।

चित्रकूट सभी तीर्थों का तीर्थ है। हिंदू आस्था के अनुसार प्रयागराज को सभी तीर्थों का राजा माना गया है, किन्तु चित्रकूट को उससे भी ऊँचा स्थान प्रदान किया गया है। किंवदंती है कि जब अन्य तीर्थों की तरह चित्रकूट प्रयागराज नहीं पहुँचे तब प्रयागराज को चित्रकूट की उच्चतर पदवी के बारे में बताया गया तथा



प्रयागराज से अपेक्षा की गयी कि वह चित्रकूट जाएँ। ऐसी भी मान्यता है कि प्रयागराज प्रत्येक वर्ष पयस्वनी में स्नान करके अपने पापों को धोने के लिए चित्रकूट आते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब प्रभु राम ने अपने पिता का श्राद्ध समारोह किया तो सभी देवी-देवता शुद्धि (परिवार में किसी की मृत्यु के तेरहवें दिन सभी सम्बन्धियों और मित्रों को दिया जाने वाला भोज) में भाग लेने चित्रकूट आएँ। वे इस स्थान की सुंदरता से मोहित हो गए थे। भगवान राम की उपस्थिति से इसमें एक आध्यात्मिक आयाम जुड़ गया। इसलिए वे वापस प्रस्थान करने के लिए तैयार नहीं थे। कुलगुरु वशिष्ठ, भगवान राम की इच्छा के अनुसार विसर्जन (प्रस्थान) मंत्र को बोलना भूल गए। इस प्रकार, सभी देवी-देवताओं ने इस जगह को अपना स्थायी आवास बना लिया और वहाँ हमेशा उपस्थित रहते हैं। आज भी जब एक अकेला पर्यटक भी प्राचीन चट्टानों, गुफाओं, आश्रमों और मंदिरों की विपुल छटा बिखरे हुए इस स्थान पर पहुँचता है तो पवित्र और आध्यात्मिक स्थापना में लगे ऋषियों के साथ वह अनजाने में ही खुद को पवित्र संस्कारों और ज्ञान प्राप्ति के उपदेशों और कृतियों से भरे माहौल में खो देता है और एक अलग दुनिया के आनंद को प्राप्त करता है। विश्व के सभी हिस्सों से हजारों तीर्थयात्री और सत्य के साधक इस स्थान में अपने जीवन को सुधारने और उन्नत करने की एक अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर आश्रय लेते हैं। प्राचीन काल से ही चित्रकूट का एक विशिष्ट नाम और पहचान है। इस स्थान का पहला ज्ञात उल्लेख

वाल्मीकि रामायण में है, जो सबसे पहले कवि द्वारा रचित सबसे पहला महाकाव्य माना जाता है। एक अलिखित संरचना के रूप में, विकास के इस महाकाव्य को, पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा द्वारा, सौंप दिया गया था। महर्षि वाल्मीकि चित्रकूट को एक महान पवित्र स्थान के रूप में चित्रित करते हैं, जो महान ऋषियों द्वारा बसाया गया है और जहाँ बंदर, भालू और अन्य विभिन्न प्रकार के पशुवर्ग और वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। ऋषि भारद्वाज और वाल्मीकि दोनों इस क्षेत्र के बारे में प्रशंसित शब्दों में बोलते हैं और श्रीराम को अपने वनवास की अवधि में इसे अपना निवास बनाने के लिए सलाह देते हैं, क्योंकि यह स्थान किसी व्यक्ति की सभी इच्छाएं पूर्ण करने और उसे मानसिक शांति देने में सक्षम था जिससे वह अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। भगवान राम स्वयं इस जगह के मोहक प्रभाव को मानते हैं। रामोपाख्यान और महाभारत के विभिन्न स्थानों पर तीर्थों के विवरण में चित्रकूट को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। अध्यात्म रामायण और वृहत् रामायण चित्रकूट की (झकझोर देने वाली) आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता को प्रमाणित करते हैं। पूरे भारतीय साहित्य में राम से संबंधित इस स्थान को एक अद्वितीय गौरव प्रदान किया गया है।



पचमढ़ी “सतपुड़ा की रानी”

अभिषेक त्रिपाठी
डी.ई.ओ.



पचमढ़ी मध्य प्रदेश का सबसे ऊँचा स्थान व एकमात्र हिल स्टेशन है। यह मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में अवस्थित है। यह स्थल सतपुड़ा की पहाड़ियों में लगभग 1067 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, इसलिए इसे “सतपुड़ा की रानी” भी कहा जाता है। पचमढ़ी का शाब्दिक अर्थ पंच अर्थात् पाँच व मढ़ी अर्थात् गुफाएँ हैं, अर्थात् “पाँच गुफाओं का समूह”। माना जाता है पाँचों गुफाएँ द्वापर युग में पांडवों द्वारा बनाई गई थीं। यहाँ महादेव पहाड़ी के शैलगृहों में शैलचित्रों का भंडार मिला है। अधिकतर शैलचित्र पांचवीं से आठवीं शताब्दी के बीच के हैं। किंतु, सबसे प्राचीन चित्र 10000 साल पहले के माने गए हैं।



इतिहास :- आधुनिक काल में पचमढ़ी का अनोखा जनजाति इतिहास रहा है। पचमढ़ी गोंड राजा भावुत सिंह की राजधानी थी। राजा भावुत सिंह व उनके बाद के राजाओं की सेना व उनके गुप्तचर ऊँचाइयों से दुश्मनों पर नजर रखते थे। पचमढ़ी में अब से लगभग 100 वर्ष पहले गोंड और कोरकू आदिवासियों का निवास स्थान था। यहाँ की अनेक चट्टानों पर आदिम निवासियों के लेख पाए गए हैं। उनके चित्र भी शिलाओं पर उत्कीर्ण

हैं जिसमें मुख्यतः गाय, बैल, घोड़ा, हाथी, भाला, रथ, रणभूमि के दृश्य हैं। गोंडों, के इतिहास के ज्ञाताओं का कथन है कि गोंडों में प्रचलित किंवदंती में उनके जिस मूल स्थान काचीकोपलोगढ़ का उल्लेख है वह पचमढ़ी का बड़ा महादेव मंदिर और चौरागढ़ ही है। चौरागढ़ आज भी गोंडों का प्रसिद्ध देव स्थान है। यहाँ के देवालय में शिव की मूर्ति है जिस पर भक्त त्रिशूल चढ़ाते हैं। बेतवा (वेत्रवती) नदी का उद्गम पचमढ़ी के निकट स्थित धूपगढ़ शिखर से हुआ है।

यह स्थान ब्रिटिश सेना के अधीन जाने तक गोंड राजवंश के अधीन रहा। पचमढ़ी घाटी की खोज सन् 1857 में बंगाल लांसर के कैप्टेन जेम्स फोरसिथ ने की थी। उन्होंने सेना के झांसी अभियान के दौरान इस स्थान का पता लगाया था। उन्होंने ‘हाइलैंड्स ऑफ सेंट्रल इंडिया’ नामक एक ग्रंथ भी लिखा है, जिसमें पचमढ़ी का उल्लेख है। इस स्थान को अंग्रेजों ने सेना की छावनी के रूप में विकसित किया। पचमढ़ी में आज भी ब्रिटिश काल के अनेक चर्च व इमारतें देखी जा सकती हैं। आजादी के बाद सन् 1967 तक पचमढ़ी मध्य प्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी रही। यहाँ मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों के बंगले मौजूद हैं।

जलवायु :- पचमढ़ी की जलवायु बहुत सुहावनी है। जब गर्मियों में मध्य प्रदेश के बाकी स्थानों में तापमान काफी अधिक होता है। तब पचमढ़ी में 25 डिग्री से अधिक तापमान नहीं होता है। यही कारण है कि गर्मियों में पर्यटक बहुत अधिक संख्या में यहाँ आते हैं। सतपुड़ा



के घने जंगलों से घिरा यह रमणीय स्थल है। इसके मौसम के कारण ही यह अपने आप में विशिष्ट बन गया है। यहाँ सदाबहार हरियाली घास और हरा, जामुन, साल, चीड़, देवदार, सफेद ओक, यूकेलिप्टस, गुलमोहर और अन्य छोटे-बड़े सघन वृक्षों से आच्छादित वन, गलियारे तथा घाटियाँ हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार के खिले फूल और उन पर मंडराती तितलियाँ बड़ा विहंगम दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यहाँ की पहाड़ियाँ बलुआ पत्थर की बनी हैं।

दार्शनिक स्थल :- यहाँ बड़ा महादेव, चौरागढ़ का



मंदिर, रीछगढ़ का मंदिर, रीछगढ़, डोरोथी डीप रॉक शेल्टर, जल वातावरण और सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान मौजूद हैं। यूनेस्को ने 2009 में पचमढ़ी को बायोस्फीयर रिजर्व घोषित किया है।

प्रियदर्शनी (फोरसिथ पॉइंट) :- यह वही जगह है जहाँ से कैप्टन फोरसिथ ने पचमढ़ी का आलौकिक दर्शन किया था। यह स्थान सूर्यास्त के दृश्य के लिए मशहूर है। यहाँ से तीन पहाड़ियाँ देखने को मिलती हैं। पश्चिम में चौरादेव शिखर, बीच में महादेव शिखर और पूर्व में धूपगढ़ शिखर जो कि मध्य प्रदेश का सबसे ऊँचा शिखर है।

जमुना प्रपात :- यह बी फॉल के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ पीने के पानी का जलस्रोत है और सैलानियों के लिए पिकनिक मनाने का आदर्श केंद्र है।

महादेव :- यहाँ भगवान शिव शंकर का शिवलिंग स्थापित है जो श्रद्धालुओं को बहुत आकर्षित करता है।

जटाशंकर :- यहाँ पर प्राकृतिक रूप से भगवान शिव की जटा एक गुफा में दिखाई देती है। यह पचमढ़ी से डेढ़ किलोमीटर दूर है। जम्मूदीप जलाशय यहाँ से



निकलता है। इस गुफा में प्राचीन शिलाश्रय और चित्रकारियाँ भी देखने को मिलती हैं।

पांडव गुफा :- यहाँ पर महाभारत काल की पाँच गुफाएँ हैं। जिनमें द्रोपदी कोठरी और भीम कोठरी प्रमुख है।



पुराशास्त्री का एक मत यह भी है कि ये गुफाएँ गुप्त काल की हैं, जिन्हें बौद्ध भिक्षुओं ने बनाया था।

अप्सरा बिहार :- पांडव गुफाओं के आगे यह एक 30 फीट गहरा ताल है। इसमें एक झरना आकर मिलता है जो इसे और मनमोहक बनाता है।

मनुष्य दैनिक भागदौड़ की जिंदगी से परेशान रहता है और उससे निजात पाने के लिए नाना प्रकार के उपाय ढूँढ़ता है। ऐसे में उसे प्रकृति की गोद में जो सुख प्राप्त होता है वह स्वर्गीय आनंद होता है। पचमढ़ी ऐसा ही एक केंद्र है, जहाँ व्यक्ति स्वयं या परिवार को साथ लाकर प्रकृति की सबसे सुन्दर परिकल्पना का आनंद और सुखद अनुभव प्राप्त कर सकता है। अपने मनमोहक दृश्य और विविधता के कारण पचमढ़ी को यदि “पर्यटकों का स्वर्ग” कहें तो कुछ गलत नहीं होगा। पाठकों से अनुरोध है कि वे भी आएँ और दूसरों को भी साथ लाएँ और इस प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लें।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) ग्वालियर

केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई ताकि वे मिल बैठकर सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि चर्चा कर सकें। फलतः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्वालियर, म.प्र. में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर कार्यरत है। प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा प्रथम), म.प्र. का कार्यालय नराकास, ग्वालियर का सचिवालय है। वर्तमान में नराकास, ग्वालियर के अध्यक्ष प्रधान महालेखाकार श्री डी. साहू एवं सचिव उप महालेखाकार श्री जितेन्द्र तिवारी हैं।

दिनांक 21.12.2020 को श्री डी. साहू जी की अध्यक्षता में नराकास, ग्वालियर की 84 वीं अर्धवार्षिक बैठक MS TEAMS के माध्यम से ऑनलाइन संपन्न की गई। उक्त बैठक में नराकास, ग्वालियर के 40 सदस्य कार्यालयों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। बैठक का आरंभ श्री जितेन्द्र तिवारी के उद्बोधन के साथ हुआ जिन्होंने 30 सितंबर 2020 को समाप्त छमाही के हिंदी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित प्रतिवेदनों की समीक्षा का वाचन किया। उसके पश्चात् माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा बैठक में उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों का अभिवादन किया गया एवं उक्त समीक्षा पर चर्चा की गई। बैठक में माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु तथा वर्ष के दौरान नराकास, ग्वालियर के तत्वावधान में आयोजित काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों की घोषणा की गई:-

(1) वर्ष में एक पत्रिका प्रकाशित करने वाले कार्यालय

प्रथम पुरस्कार — रक्षा अनुसंधान तथा विकास स्थापना, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय पुरस्कार— प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम) म.प्र., का कार्यालय, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

तृतीय पुरस्कार — भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

(2) राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाले कार्यालय

प्रथम पुरस्कार — केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय पुरस्कार — प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम, म.प्र., ग्वालियर का कार्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल, टेकनपुर, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

30
गोवाद्रि

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



तृतीय पुरस्कार — प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा—प्रथम), म.प्र., का कार्यालय ग्वालियर, (प्रशस्ति पत्र)

प्रोत्साहन पुरस्कार

1. भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

2. राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, अन्वेषण प्रभाग, ग्वालियर एवं राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, अन्वेषण वृत्त, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

(3) नराकास वार्षिक कार्यक्रम 2020 के अंतर्गत आयोजित काव्यपाठ प्रतियोगिता के विजेता

प्रथम पुरस्कार — श्री राकेश रावत, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय पुरस्कार — श्री मनोज कुमार गिरि, केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी टेकनपुर, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

तृतीय पुरस्कार — श्री हरिओम कुमार, प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा—प्रथम), म.प्र., का कार्यालय ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

प्रोत्साहन पुरस्कार

1. सुश्री उमा उपाध्याय, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-3, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)

2. श्री जे. जे. श्रीवास्तव, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय म.प्र., का कार्यालय, ग्वालियर (पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र)



कल्याण शाखा की गतिविधियां

(अ) कार्यालयीन गतिविधियां

(1) 15 अगस्त 2020 को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। कोविड-19 से बचाव के लिए तथा भारत सरकार एवं मुख्यालय द्वारा दिये गए निर्देश के अनुसार अल्प संख्या में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया।

(2) 26 जनवरी 2021 को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उप महालेखाकार/ए.एम.जी.-3 महोदय द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। कोविड-19 से बचाव के लिए तथा भारत सरकार एवं मुख्यालय द्वारा दिये गये निर्देश के अनुसार अल्प संख्या में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया।

(3) दिनांक 20.08.2020 को सद्भावना दिवस के रूप में मनाया गया तथा कोविड-19 से बचाव के लिए सद्भावना शपथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रातः 11 बजे अपने-अपने अनुभागों में लिया गया।

(4) दिनांक 19 से 25 नवम्बर 2020 को कार्यालय में राष्ट्रीय सद्भावना सप्ताह हेतु पोस्टर/बैनर को कार्यालय के मुख्य स्थानों पर चस्पा किया गया। झण्डे प्राप्त न होने के कारण अधिकारियों/कर्मचारियों में वितरित नहीं किये जा सके।

(5) दिनांक 07 दिसम्बर 2020 को कार्यालय में सशस्त्र सेना दिवस मनाया गया तथा प्राप्त झण्डों को समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को वितरित कराया गया।

(6) भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों की स्मृति में दिनांक 30.01.2021 को प्रातः 11.00 बजे 02 मिनट का मौन कोविड-19 से बचाव के लिए कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों

द्वारा अपने-अपने अनुभागों में किया गया।

(ब) कल्याण गतिविधियां

(1) कल्याण शाखा द्वारा तीनों कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्राथमिक उपचार हेतु सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं जिसके अंतर्गत दवाईयाँ, ब्लड प्रेशर नापने की मशीन (Digital) एवं वजन नापने की मशीन भी उपलब्ध कराई गई हैं जिसका उपयोग कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा किया जा रहा है तथा कार्यालय के कर्मचारियों हेतु व्हीलचेयर का भी क्रय किया गया है।

(2) कल्याण शाखा द्वारा कार्यालय में उपस्थित होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का प्रवेश से पूर्व थर्मल स्क्रीनिंग की जा रही है तथा अस्वस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को चिकित्सा परामर्श लेने एवं कार्यालय का कार्य घर से करने हेतु प्रेरित किया जा रहा है।

(3) कोविड-19 महामारी एवं उससे बचाव को ध्यान में रखते हुये कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु 05 ऑक्सीजन कन्सनट्रेटर एवं 05 पल्स ऑक्सीमीटर



क्रय किये गये हैं तथा उसे कार्यालय के मनोरंजन क्लब में स्थापित किया गया है। CGHS डिसपेंसरी शास्त्री नगर में स्थापित किया जाएगा।

(4) कार्यालय के मनोरंजन क्लब के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु लंच अवधि में खाना गर्म करने हेतु तीन माईक्रोवेव का क्रय किया गया है तथा विभिन्न अनुभागों में स्थापित किया गया है।

(5) कार्यालय परिसर में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के छोटे बच्चों हेतु शिशु-गृह (Creche) में



थीम पेंटिंग का कार्य कराया गया है जिसमें बच्चों के पसंद के मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक चित्रों को बनाया गया है जिसका अनावरण 15.08.2021 को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा किया गया है।



(6) कार्यालय परिसर में स्थापित कार्यालयीन कैटीन का नवीकरण किया गया है जिसमें कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को बैठने हेतु नवीन फर्नीचर

क्रय कर स्थापित किये गये हैं, जिससे कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी स्वच्छ वातावरण में बैठ सकें।



(स) मनोरंजन गतिविधियां

(1) स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिनांक 15.08.2020 को कार्यालय में ध्वजारोहण के उपरान्त प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा वृक्षारोपण किया गया तथा कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु मनोरंजन क्लब द्वारा स्थापित नवीन जिम का अनावरण किया गया।

(2) 26 जनवरी 2021 को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विभागीय टेनिस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं पुरस्कार का वितरण किया गया।

(3) कार्यालय में दिनांक 08.03.2021 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया।

(4) कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के स्वास्थ्य एवं खेलों में रुचि को ध्यान में रखते हुए अन्य खेलों की सुविधा के साथ कार्यालय परिसर में Synthetic Lawn tennis Court का निर्माण किया जा रहा है। निर्माण कार्य प्रगति पर है जो शीघ्र ही पूर्ण किया जाएगा एवं इसका लाभ कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी उठा सकेंगे।

नोट:- कोविड-19 महामारी से बचाव हेतु भारत सरकार एवं मुख्यालय के निर्देशों के अनुसार कल्याण शाखा द्वारा अधिक खेल कूद/कैम्प इत्यादि का आयोजन नहीं किया गया जिससे कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी एक स्थान पर अधिक संख्या में उपस्थित न हों।



33
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

बैतूल

बैतूल जिला मध्य प्रदेश के दक्षिण में स्थित है और बैतूल जिले की मुलताई तहसील पर पुण्य सलिला माँ ताप्ती जी का उद्गम स्थल है, जो सतपुड़ा पर्वत के पठार पर स्थित है। इस जिले का नाम छोटे से कस्बे बैतूल बाजार के नाम से जाना जाता है। बैतूल शहर खूबसूरती में अपना एक अलग ही स्थान रखता है।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कुकरू — सतपुड़ा की सुरम्यवादियों में बसे बैतूल जिले की सबसे ऊँची चोटी कुकरू है। इस क्षेत्र में कोरकू जनजाति निवास करती है। इस कारण से इस क्षेत्र को



कुकरू के नाम से जाना जाता है। मध्य प्रदेश में जो स्थान पचमढ़ी का है, ठीक वही स्थान बैतूल जिले में कुकरू का है। इसकी ऊँचाई समुद्र तल से 1137 मीटर है। यहाँ से उगते सूर्य को देखना तथा सूर्यास्त होते सूर्य को देखना बड़ा ही मनोरम लगता है। कुकरू कॉफी के बागवान के लिए भी प्रसिद्ध है। चारों तरफ से घने जंगलों से आच्छादित यह प्राकृतिक स्थल अत्यन्त रमणीय और मनोहारी है।

ताप्ती उद्गम — मुलताई नगर पुण्य सलिला माँ ताप्ती के उद्गम के रूप में प्रसिद्ध है। पहले इसे मूलतापी के रूप में जाना जाता था। यहाँ दूर-दूर से लोग दर्शनों के लिए आते हैं। यहाँ सुन्दर मंदिर हैं। ताप्ती नदी की महिमा की जानकारी स्कंद पुराण में

मिलती है। स्कंद पुराण की धार्मिक मान्यता के अनुसार माँ ताप्ती सूर्यपुत्री और शनि की बहन के रूप में जानी जाती हैं। यही कारण है कि जो लोग शनि से परेशान होते हैं उन्हें ताप्ती में स्नान करने से राहत मिलती है। ताप्ती सभी के ताप, कष्ट दूर करके उसे जीवनदायिनी शक्ति प्रदान करती है। लोग श्रद्धा से इसे ताप्ती गंगा भी कहते हैं। इस नदी का केवल धार्मिक ही नहीं आर्थिक,



सामाजिक महत्व भी है। सदियों से अनेक सभ्यताएं यहां पनपी और विकसित हुई हैं।



मुक्तागिरी — बैतूल जिले की ग्राम पंचायत थपोड़ा में स्थित महान जैन तीर्थ मुक्तागिरी अपनी सुन्दरता, रमणीयता और धार्मिक प्रभाव के कारण लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ दिगम्बर जैन संप्रदाय के 52 मंदिर हैं। इन मंदिरों का तथा क्षेत्र का संबंध श्रेणीक विम्बसार से बताया जाता है। यहाँ मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की सप्तफणिक प्रतिमा स्थापित है जो शिल्पकारी का बेजोड़ नमूना है। इस क्षेत्र में स्थित एक मान स्तंभ, मन को सुख—शांति देने वाला है। निर्वाण

क्षेत्र में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यहाँ आकर सुकून मिलता है। यही कारण है कि देश के कोने-कोने से जैन धर्मावलंबी ही नहीं दूसरे धर्मों को मानने वाले लोग भी मुक्तागिरी आते हैं। इस सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरी से साढ़े तीन करोड़ मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया है। इसका वर्णन जैन पर्व के निर्वाण काण्ड की गाथा बीस में उल्लेखित है, जिससे इस तीर्थ की सिद्धता और महिमा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।



भोपाल

मध्य प्रदेश राज्य की राजधानी भोपाल को राजा “भोज की नगरी” तथा ‘झीलों की नगरी’ भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ कई छोटे-छोटे तालाब हैं। भोपाल नाम लोकप्रिय रूप से भोजपाल से लिया गया है और कहा जाता है कि इसे धार के परमार शासक राजा भोज द्वारा बनाया गया था। वर्तमान भोपाल शहर की स्थापना मुगल सल्तनत के एक अफगान सरदार दोस्त मुहम्मद खान ने की थी।

भोपाल भारत के मध्य भाग में एक पहाड़ी इलाके पर स्थित है। यह विंध्य पर्वत श्रृंखला के पूर्व में है। भोपाल को देश का हरितम शहर के रूप में भी जाना जाता है। अपनी हरियाली, खूबसूरत तालाब एवं गौरवशाली इतिहास के कारण भोपाल पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

बड़ा तालाब / अपर लेक — बड़ा तालाब / अपर लेक भोपाल की सबसे महत्वपूर्ण झील है। भोपाल शहर का



बड़ा तालाब देश की सबसे पुरानी झीलों में से एक है, जो भोपाल के पश्चिम में स्थित है। स्थानीय निवासी बड़ा तालाब को अपर लेक भी कहते हैं। बड़ा तालाब को “भोजताल” के नाम से भी जाना जाता है। इस झील के एक कोने पर राजा भोज की एक प्रतिमा भी बनी है।

छोटा तालाब — लोअर लेक के नाम से भी पहचाने जाने वाले ‘छोटा तालाब’ को भोपाल शहर की सुंदरता



बढ़ाने के लिए 1794 में बनवाया गया था। भोपाल के छोटा तालाब का वातावरण शालीन, शांत और मन को सुकून देने वाला है। यह तालाब अपनी सुन्दरता, शालीनता के कारण भोपाल आने वाले पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

शौर्य स्मारक — भोपाल शहर में शौर्य स्मारक श्यामला हिल्स में स्थित है। जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 14 अगस्त 2014 को किया था। भोपाल शहर का शौर्य स्मारक, घूमने आने वाले पर्यटकों को अमर शहीदों की शौर्य गाथा से रूबरू करवाता है। शौर्य स्मारक में ग्रेनाइट के पत्थर से बना 62 फुट ऊंचा स्तम्भ



है। शौर्य स्मारक स्तम्भ की नींव के पास जलने वाली अनंत ज्योति सैनिकों के बलिदान की याद दिलाती है। तीनों सेनाओं की यादों को चित्रों में संजोते हुए संग्रहालय में परमवीर चक्र, महावीर चक्र जैसे शौर्य पुरस्कारों को देखा जा सकता है।

गोहर महल— गोहर महल शहर के सबसे प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। इस महल का नाम भोपाल



की पहली महिला शासक कुदिसिया बेगम के नाम पर रखा गया है। जिन्हें गोहर बेगम के नाम से भी जाना जाता है। गोहर बेगम के बारे में कहा जाता है कि वह राज्य की एक कुशल और निष्पक्ष शासक थी। भोपाल शहर के गोहर महल में हर साल जनवरी, फरवरी में भोपाल महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस महोत्सव में प्रदेश भर के कई कारीगरों, शिल्पकारों और लोक कलाकारों को अपनी कला और प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त होता है।

शौकत महल— शौकत महल का इतिहास 180 साल पुराना है। शौकत महल को 19वीं शताब्दी में गोहर



बेगम की बेटी सिकंदर बेगम के शासनकाल में बनवाया गया था। शौकत महल की वास्तुकला में इंडो-इस्लामिक और यूरोपियन शिल्प कला का मिश्रण देखने को मिलता है जो कि देश- विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर खूब आकर्षित करता है।

भोजपुर मंदिर — भोपाल शहर से लगभग 30 किलोमीटर दूर भोजपुर शिव मंदिर है, जिसे भोजेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। भोपाल के भोजपुर



मंदिर का निर्माण राजा भोज के शासनकाल के दौरान 11वीं शताब्दी में करवाया गया था। भोजपुर मंदिर का शिवलिंग दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग है। शिवरात्रि के दौरान भोजपुर मंदिर में तीन दिवसीय मेले का आयोजन भी किया जाता है जिसमें हजारों भक्तों का जनसैलाब उमड़ पड़ता है।

मोती मस्जिद — भोपाल शहर की मोती मस्जिद की वास्तुकला बहुत ही सुन्दर और मनमोहक है। भोपाल



शहर की मोती मस्जिद का निर्माण संगमरमर के पत्थर और लाल रंग के पत्थरों से हुआ है। सफेद चमचमाते संगमरमर के कारण इसे 'पर्ल मस्जिद' के नाम से जाना जाता है। मोती मस्जिद में हर साल हजारों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। मोती मस्जिद का निर्माण 1860 में सिकंदर जहान बेगम के शासन में हुआ था। मोती मस्जिद की वास्तुकला शैली दिल्ली की जामा मस्जिद से मिलती जुलती है।



ताज-उल-मस्जिद— भोपाल शहर की ताज – उल – मस्जिद एशिया महाद्वीप की सबसे बड़ी मस्जिद है। मुस्लिमों के लिए यह धार्मिक पर्यटन का एक महत्वपूर्ण स्थल है। ताज- उल- मस्जिद में देश और दुनियाभर

के तमाम मुस्लिम प्रार्थना करने के लिए आते हैं। भोपाल की ताज उल मस्जिद का निर्माण मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ था।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान — भोपाल शहर में अपर लेक के पास ही वन विहार भी स्थित है, जिसे वन विहार नेशनल पार्क के नाम से जाना जाता है। वन विहार 4.45 वर्ग किमी के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। भोपाल का वन विहार राष्ट्रीय उद्यान जानवरों के अवैध शिकार और अन्य अवैध गतिविधियों से पूरी तरह से सुरक्षित है। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों को दो भागों में बांटा गया है, मांसाहारी और शाकाहारी। शाकाहारी जानवरों के क्षेत्र में लोगों को स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति है। वन विहार में आने वाले पर्यटक तेंदुए, चीता, नीलगाय, पैंथर्स, आदि के साथ-साथ किंगफिशर, बुलबुल, वागटेल जैसे जानवरों को देख सकते हैं।



हरदा

हरदा जिला भारतीय राज्य मध्य प्रदेश का दूसरा छोटा जिला है जो नर्मदापुरम संभाग के अन्तर्गत आता है। हरदा जिला मुख्य रूप से एक आदिवासी क्षेत्र है, जहां कोरकू और गोंड आदिवासी समूह निवास करता है। हालाँकि हरदा मध्यप्रदेश का एक छोटा सा जिला है तथापि यहाँ कुछ अत्यंत लोकप्रिय एवं दर्शनीय स्थल हैं।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

मकड़ाई का किला— एक समय था जब मकड़ाई का किला हरदा जिले की शान हुआ करता था, लेकिन अब यह जीर्णशीर्ण अवस्था में है लेकिन उसके बावजूद यह किला पहाड़ों के ऊपर बसा होने की वजह से आज भी बेहद खूबसूरत और मनमोहक लगता है। यह किला



चारों तरफ से विशालकाय पहाड़ों से घिरा हुआ है जो इसकी खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। वर्षा ऋतु के मौसम और ठंडी के दिनों में यहां की खूबसूरती देखने योग्य रहती है।

तेली की सराए— हरदा शहर से करीबन 20 कि.मी. की दूरी पर हंडिया तहसील में माँ नर्मदा के किनारे बने इस स्मारक को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं। इस सराए से कई रहस्यमयी तथ्य जुड़े हुए हैं जिन पर विश्वास करना संभव नहीं है परन्तु भारत के इतिहास में ऐसे कई अजूबे हैं जो विश्वास करने के लायक तो नहीं हैं पर उनकी बनावट और वास्तुकला



देखकर उस पर विश्वास करना पड़ता है। इस स्मारक का निर्माण 11वीं शताब्दी में एक विश्रामगृह के रूप में किया गया था क्योंकि पुराने समय में यहाँ दूर-दूर से श्रद्धालु अमावस्या और पूर्णिमा पर नर्मदा नदी में स्नान करने आते थे उनके ठहरने के लिए इसका निर्माण किया गया था। कहा जाता है कि इस स्मारक का निर्माण केवल एक रात में हुआ था जो अत्यन्त आश्चर्यजनक है। इस स्मारक के आस-पास का प्राकृतिक वातावरण काफी खूबसूरत और खुशनुमा है जो इस सराए स्मारक को और भी खूबसूरत बना देता है।

गोराखाल का झरना — गोराखाल का झरना हरदा जिले के सबसे नवीनतम और उभरते हुए पर्यटन स्थलों में से एक है। यह झरना हरदा जिले के गोराखाल नाम के एक छोटे से गांव में स्थित है। परंतु यह झरना केवल बरसात के दिनों में ही देखने को मिलता है। लगभग 300 फीट ऊँचे इस झरने की खूबसूरती का आनंद लेने



के लिए हरदा ही नहीं बल्कि इसके आसपास के शहरों के पर्यटक भी बरसात के दिनों में यहाँ पर आते हैं।

गुप्तेश्वर मंदिर चारुवा — अजनाल नदी के किनारे पर बना गुप्तेश्वर मंदिर हरदा जिले के सबसे अनोखे और विशेष चमत्कारी मंदिर के रूप में विख्यात है। गुप्तेश्वर मंदिर हरदा जिले के चारुवा नाम के एक छोटे से गाँव में स्थापित है। यहां हर साल महाशिवरात्रि के



पावन अवसर पर एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें दूर-दूर से लोग आते हैं। ऐसा बताया जाता है कि महाशिवरात्रि के अवसर पर जो भी भक्त सच्चे मन से मनोकामना माँगता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूरी हो जाती है।

बाबा हिंडोलनाथ की गुफा — बाबा हिंडोलनाथ की गुफा भी एक पवित्र स्थान है। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक दिन इस गुफा में चट्टान पर त्रिशूल का एक नया चिन्ह दिखाई देता है।



रिद्धनाथ मंदिर — हंडिया स्थित रिद्धनाथ महादेव मंदिर अत्यंत प्राचीन एवं राज्य शासन द्वारा संरक्षित है, जिसके बारे में मान्यता है कि इसका निर्माण स्वयं कुबेर के द्वारा किया गया था।



होशंगाबाद

होशंगाबाद शहर को पहले नर्मदापुरम कहा जाता था। बाद में इसका नाम मालवा के पहले शासक होशंग शाह के नाम पर होशंगाबाद कर दिया गया। होशंगाबाद जिला मध्य प्रांत और बरार के नेरबुड्डा (नर्मदा) प्रभाग का हिस्सा था जो 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद मध्य भारत (बाद में मध्य प्रदेश) का राज्य बन गया।

यह शहर नर्मदा नदी के किनारे अपने खूबसूरत घाटों के लिए प्रसिद्ध है, सेठानी घाट एक प्रमुख आकर्षण है। घाट पर स्थित सत्संग भवन में रामचरितमानस और गीता पर धार्मिक प्रवचन देने वाले हिंदू संतों का नियमित आवागमन होता रहता है। होशंगाबाद में प्रतिभूति कागज कारखाना है, जिसमें भारतीय मुद्रा छापने के लिए कागज बनाया जाता है। होशंगाबाद के पास प्राचीन पहाड़ियाँ हैं जिनकी गुफाओं में शैलचित्र उकेरे गये हैं। मानवों द्वारा निर्मित ये रॉक पेंटिंग्स अति मनभावन हैं। हजारों साल से खुले आसमान के नीचे रहने के बाद भी ये पेंटिंग अभी भी मिटी नहीं हैं।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

पचमढ़ी— करीब 1110 मीटर की ऊंचाई पर स्थित “पचमढ़ी” मध्य प्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन है जो सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियों में स्थित और “सतपुड़ा की

जलप्रपात और आरामदायक मौसम इसे प्रकृति की देवी का आवास बनाते हैं। सूर्यास्त की सुन्दरता का आनंद उठाने के लिए पचमढ़ी एक उचित स्थान है। पचमढ़ी



रानी” के रूप में लोकप्रिय है। पचमढ़ी अपनी प्राचीन गुफाओं, स्मारकों, जलप्रपातों, प्राकृतिक सुंदरता, जंगलों, वनस्पतियों और जीव जंतुओं के लिए प्रसिद्ध है। चट्टानी पहाड़ियाँ, हरी भरी घाटी, घने जंगल,

गोंड जनजाति के आदिवासी वंश की राजधानी थी। सन 1857 में ब्रिटिश सेना के कैप्टन जेम्स फोरसिथ ने पचमढ़ी हिल स्टेशन की खोज की और इसका परिचय विश्व से करवाया। पचमढ़ी में आधुनिक विकास का श्रेय



जेम्स फोरसिथ को ही जाता है। उनके उत्साह ने इसे एक प्रतिष्ठित हिल स्टेशन में परिवर्तित कर दिया। मध्य भारत का उच्चतम बिंदु होने के कारण ब्रिटिशों ने इसे सैनिक छावनी का केंद्र बनाया था। वर्ष 2009 में यूनेस्को ने पचमढ़ी को जीवमंडल आरक्षित क्षेत्र घोषित किया था। पचमढ़ी में स्थित धूपगढ़ विंध्य सतपुड़ा श्रेणी का और मध्य भारत का सबसे उच्चतम बिंदु है। रोचक रूप से पचमढ़ी तश्तरी के आकार का हिल स्टेशन है। हांडी खोह, जटा शंकर गुफा, पांडव गुफाएं, अप्सरा विहार, बी फॉल, डचेस फॉल आदि पचमढ़ी के प्रमुख आकर्षण स्थलों में से हैं। पचमढ़ी का मौसम पूरे वर्ष खुशनुमा रहता है।

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व— सतपुड़ा टाइगर रिजर्व (एसटीआर) को सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान के रूप में भी जाना जाता है, यह उद्यान मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित है। इसका नाम सतपुड़ा श्रेणी से लिया गया है। यह 524 वर्ग किमी (202 वर्ग मील) के क्षेत्र में फैला है। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान, आसपास के बोरी और पचमढ़ी वन्यजीव अभयारण्यों के साथ, 2,200 वर्ग कि.मी (850 वर्ग मील) का अद्वितीय केंद्रीय भारतीय हाइलैंड पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करता है। इसकी स्थापना 1981 में हुई थी।



रायसेन

रायसेन मध्य प्रदेश के कई छोटे शहरों में से एक है, परंतु इस स्थान का धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व है। इसका यह नाम पहाड़ की चोटी पर स्थित रायसेन किले के नाम पर पड़ा है। रायसेन को पहले राजवासिनी या राजसायण के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है शाही निवास। रायसेन में कई मंदिर एवं पवित्र स्थल हैं। मध्य प्रदेश का यह छोटा सा जिला अपने ऐतिहासिक महत्व के साथ ही धार्मिक एवं राष्ट्रीय एकता के लिए भी जाना जाता है। यहां मंदिर एवं मस्जिद एक ही परिसर में स्थित हैं एवं दोनों धर्मों के लोगों द्वारा इन्हें समान रूप से सम्मान दिया जाता है। हजरत पीर फ़तेहुल्लाह शाह बाबा इसका प्रमाण हैं। इस जिले का मुख्य आकर्षण रायसेन किला है। वर्ष 1200 ईस्वी में रायसेन किला अस्तित्व में आया एवं रायसेन को नाम मिला।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल



रायसेन किला – 1200 ईस्वी में निर्मित यह किला रायसेन का एक प्रमुख आकर्षण केन्द्र है। पहाड़ी की चोटी पर इस किले के निर्माण के बाद ही रायसेन को इसकी पहचान प्राप्त हुई। यह किला प्राचीन वास्तुकला एवं गुणवत्ता का एक अद्भुत प्रमाण है जो इतनी शताब्दियाँ बीत जाने पर भी शान से खड़ा

हुआ है। विशाल पत्थरों से बनी हुई दीवारें नौ दरवाजों से बाहर खुलती हैं और इनके ऊपर तेरह बुर्ज हैं। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि किले में 40 कुओं के साथ जल प्रबंधन एवं संरक्षण का एक उत्तम तंत्र भी मौजूद है।



भीमबेटका— महाभारत के एक पौराणिक चरित्र (पांच पांडवों में से एक) भीम के नाम पर आधारित भीमबेटका भारत की प्राचीन गुफाओं में से एक है।



इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। भीमबेटका गुफाओं एवं चट्टानों से बने आश्रय स्थल के रूप में स्थित हैं। ये चारों ओर से विंध्य पर्वत श्रेणी से घिरे हुए हैं। यहाँ 600 से भी अधिक गुफाएं हैं। जिनमें विभिन्न चित्र हैं। इन चित्रों में प्राचीन व्यक्तियों की दैनिक गतिविधियों को दर्शाया गया है। मनुष्यों के चित्रों के अलावा कई गुफाओं में विभिन्न प्राणियों जैसे कि चीता, कुत्ता, छिपकली, हाथी, भैंस इत्यादि के रंगीन चित्र भी देखने को मिलते हैं। इन चित्रों को बनाने में प्रयोग किए गए सभी रंग प्राकृतिक हैं। ये सभी रंग वानस्पतिक हैं एवं गुफाओं की भीतरी दीवार पर देखने को मिलते हैं। पहले इसे एक बौद्ध स्थल के रूप में जाना जाता था। एक भारतीय पुरातत्वविद वी. एस. वाकणकर द्वारा किए गए पुरातात्विक सर्वेक्षण के बाद कई और आश्रयों (चट्टानों से बने हुए) की खोज हुई जो प्रागैतिहासिक काल के बताए जाते हैं। चित्रों की शैली से यह पता चलता है कि ये चित्र काफी लंबी अवधि में बनाए गए हैं। यह समय पेलिओलिथिक युग से मध्यकालीन युग तक का है।

भीमबेटका गुफाएं विभिन्न युगों की यात्रा पर ले जाती हैं एवं ये भारत की सांस्कृतिक विरासत की एक राष्ट्रीय संपदा है।

हज़रत पीर फतेहुल्लाह शाह बाबा — हज़रत पीर फतेहुल्लाह शाह बाबा रायसेन स्थल का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थल है। यह पवित्र स्थल पूरे देश में प्रसिद्ध है और यह अपनी पवित्रता के लिए जाना जाता है। यहाँ पर पवित्र मुस्लिम संत, हज़रत पीर फतेहुल्लाह शाह बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने



के लिए रोज़ भारी भीड़ उमड़ती है। ऐसा माना जाता है कि इस पवित्र स्थान पर भक्तों द्वारा पूरे विश्वास एवं ईमानदारी के साथ जो इच्छाएं की जाती हैं, उनकी वे इच्छाएं पूर्ण होती हैं और लोगों को जीवन में सभी अच्छी चीज़ों का आशीर्वाद मिलता है। सभी धर्मों के लोगों को बिना किसी भेदभाव के हज़रत पीर फतेहुल्लाह शाह बाबा आने की अनुमति दी जाती है और यही कारण है कि इस स्थान को भारत की धार्मिक एकता प्रदर्शित करने वाले एक महत्वपूर्ण स्थल के रूप में जाना जाता है।



राजगढ़

सन 1645 में, राजमाता की अनुमति से, दीवान अजब सिंह ने राजगढ़ के पहाड़ी क्षेत्र में भीलों को हराया और उन्होंने 1745 में एक महल का निर्माण किया, जिसके पाँच मुख्य द्वार थे, यथा, इतवारिया, भुडवारिया, सूरजपोल, पनराडिया और नया दरवाजा और इसमें तीन बहुत प्राचीन मंदिर हैं, यथा राज राजेश्वर मंदिर, चतुर्भुजनाथजी मंदिर और नरसिंह मंदिर। यह एक महल है जिसके कारण यह स्थान राजगढ़ के नाम से जाना जाता है। वर्तमान राजगढ़ जिले का गठन मई, 1948 में मध्य भारत के गठन के बाद किया गया था।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

श्रीनाथजी का बड़ा मंदिर राजगढ़— नेवज नदी के तट पर पहाड़ियों के बीच अति प्राचीन एवं भव्यता के लिए प्रसिद्ध श्रीनाथजी का बड़ा मंदिर स्थित हैं। नगर की



पहचान स्थापित करने वाले इस भव्य मंदिर की शिल्पकला अति सुन्दर है, जिसकी छटा देखते ही बनती है। नदी के तट पर स्थित होने से वर्षा ऋतु में नदी का जल स्तर बढ़ने पर मंदिर का गर्भगृह जलमग्न हो जाता है। राजगढ़ रियासत की तत्कालीन हाडी जी महारानी को स्वप्न में श्रीनाथ जी का मंदिर बनवाने की प्रेरणा मिली थी जिसके फलस्वरूप तत्कालीन राजा बलबहादुर सिंह ने वर्ष 1887 में मंदिर का निर्माण प्रारम्भ करवाया। निर्माण कार्य पूर्ण होने पर तत्कालीन राजा बनेसिंह जी ने वर्ष 1911 में "गंगा दशहरा" के दिन प्रभु श्रीनाथ जी के अति सुन्दर विग्रह (मूर्ति) की स्थापना करवाई। प्रतिवर्ष गंगा दशमी के दिन मन्दिर का पाटोत्सव (स्थापना दिवस) मनाया जाता है। वर्ष 1911 से सतत रूप से मन्दिर में प्रभु की अष्टयाम सेवा दर्शन का क्रम जारी है। संध्या के समय मंदिर के शिखर पर रोमांचक दृश्य देखने को मिलता है, दरअसल नदी में अपनी प्यास बुझाने वाले सैकड़ों कबूतर एक झुंड बनाकर मंदिर के शिखर के आसपास परिक्रमा करते देखे जा सकते हैं। पक्षियों को देख कर ऐसा लगता है कि पक्षी भी भगवान की परिक्रमा कर पुण्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस दृश्य को देखने सैकड़ों लोग सायं काल मंदिर पहुँचते हैं तथा प्रभु श्रीनाथ जी के दर्शन का लाभ भी लेते हैं।



कपिलेश्वर महादेव मंदिर सारंगपुर— काली सिंध नदी के बीच में बना कपिलेश्वर महादेव मंदिर अपनी अलौकिकता, प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिकता के लिए



आस्था का प्रसिद्ध केंद्र है। यह मंदिर वास्तु कला का अनूठा नमूना है। इसकी विशेषता यह भी है कि नदी की तेज धार और हर साल आने वाली बाढ़ के बीच भी यह मंदिर सुरक्षित रहता है। मान्यता है कि मंदिर की इस चट्टान पर कपिल मुनि ने तपस्या की थी। उनके द्वारा ही शिवलिंग की स्थापना की गई थी। उनकी कपिला गाय के खुर (पंजों) के निशान आज भी चट्टान पर मौजूद हैं। मंदिर का जीर्णोद्धार 800 साल पूर्व देवास के महाराजा जीवाजी राव पंवार ने कराया था। नदी के बीच व श्मशान भूमि के किनारे स्थित होने से इस मंदिर में जप और पूजन का महत्व किसी ज्योतिर्लिंगेश्वर से कम नहीं है।

श्री तिरुपति बालाजी मंदिर जीरापुर— तिरुपति बालाजी की महिमा दुनिया भर में है। भारत के दक्षिण में तिरुमाला की पहाड़ियों में स्थित तिरुपति मंदिर में हर साल लाखों लोग दर्शन करते हैं। जीरापुर के भक्तों में से एक मूंदड़ा दंपति ने जीरापुर में भव्य मंदिर के निर्माण करने का संकल्प लिया। तत्पश्चात 3 सितंबर 1998 को जीरापुर में, बालाजी मंदिर की नींव डीडवाना (राजस्थान) स्थित झालरिया पीठ के स्वामी श्री घनश्यामाचार्यजी



महाराज ने रखी थी। मंदिर के निर्माण में लगभग 2 वर्ष लगे। 29 अप्रैल से 4 मई 2000 तक प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया गया और व्यंकटेश भगवान बालाजी मंदिर को जनता के लिए खोल दिया गया। तब से हर दिन भक्त यहां दर्शन करने आते हैं और भगवान उनकी मनोकामना पूरी करते हैं।

कुण्डालिया डैम— मध्य प्रदेश के जिला राजगढ़ एवं जिला आगर-मालवा के बीच कालीसिंध नदी पर कुण्डालिया वृहद सिंचाई परियोजना का निर्माण किया गया है। कुण्डालिया बांध का निर्माण कार्य दिसम्बर 2018 में पूर्ण किया गया है। जलाशय के जल निकासी के



लिये 11 नग रेडियल गेट्स का निर्माण किया गया है। इस परियोजना से भूमिगत पाइप लाइन बिछाकर कृषकों के खेतों (एक हेक्टर) तक पाइप प्रणाली से उच्चदाब पर जल प्रदाय कर सूक्ष्म सिंचाई की जाती है।

घुरेल पशुपतिनाथ मंदिर— ऐतिहासिक महत्व का पशुपतिनाथ घुरेल मंदिर नगर ब्यावरा और सुठालिया के बीच में घुरेल की पहाड़ियों पर स्थित है। इसकी ब्यावरा से दूरी 15 किलोमीटर है। पशुपतिनाथजी की विशालकाय मूर्ति को 1993 में स्थापित किया गया था जो की 7 फीट ऊँची है। भक्त घोघरा घाट स्थित पार्वती नदी से जल भरकर लाते हैं। इसके बाद करीब 16 किलोमीटर दूर घुरेल की पहाड़ी पर स्थित भगवान शंकर की प्रतिमा पर विधिवत पूजन कर पार्वती नदी के जल से अभिषेक करते हैं। यहाँ भोलेनाथ की पूजा वर्षों से निरंतर जारी है। यहाँ मकर संक्रांति पर मेला लगता है जिसमें भारी संख्या में लोग आते हैं।



सीहोर

मालवा क्षेत्र के मध्य में विंध्याचल रेंज की तलहटी में स्थित सीहोर का गौरवशाली इतिहास है। सीहोर ब्रिटिश राज्य में बसाया गया शहर है जो कि आज भी कई पुरातात्विक महत्व के भवनों को समेटे हुए है। प्राचीन काल से संकेत मिलता है कि योग संप्रदाय के संस्थापक महर्षि पतंजलि ने प्रार्थना और पूजा में कुछ समय यहाँ बिताया था। लोक-साहित्य में भी भगवान राम, लक्ष्मण और सीता के यहाँ के विभिन्न स्थानों पर जाने के संकेत मिले हैं। सीहोर में महान ऐतिहासिक और धार्मिक पुरातनता के बहुत सारे मंदिर, मठ, श्राइन, मस्जिद, चर्च हैं। इस तरह से, सीहोर सांप्रदायिक सद्भाव और सजातीय संस्कृति की अपनी गौरवपूर्ण परंपरा को समेटे हुए हैं। यहाँ भगवान विष्णु गणेश, शिव, पार्वती, नंदी, गरुड़, भगवान महावीर, गौतम बुद्ध, अप्सरा और परी की मूर्तियाँ विभिन्न रूपों और मुद्राओं में पायी गयी हैं।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

श्री चिंतामन सिद्ध गणेश मंदिर— सीहोर जिले में स्थित श्री चिंतामन सिद्ध गणेश मंदिर की प्रसिद्धि का कारण यह है, कि इस मंदिर में मांगी गई हर इच्छाएं पूरी होती हैं। यह मंदिर बहुत प्राचीन है। इस मंदिर की स्थापना राजा विक्रमादित्य के द्वारा की गई थी। मंदिर

में गणेश जी की भव्य प्रतिमा देखने के लिए मिलती है, जो पृथ्वी से स्वयं उत्पन्न हुई है, इसे विराजमान नहीं किया गया है। देशभर से लोग यहाँ गणेशजी के दर्शन करने और आशीर्वाद लेने आते हैं।



कोलार बांध — कोलार बांध सीहोर शहर का एक मुख्य पर्यटन स्थल है। यह बांध सीहोर जिले के लावाखेड़ी गांव में स्थित है। यहाँ पर प्राकृतिक नजारा देखने के लिए मिलता है। यह बांध चारों तरफ से सुंदर



पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां आने के लिए जो रास्ता है, वह भी जंगल का है। यह पिकनिक मनाने के लिए एक अच्छी जगह है

सरु मरु की गुफाएं — सरु मरु की गुफाएं सीहोर जिले का एक ऐतिहासिक स्थल है। यहाँ पर प्राचीन



गुफाएं और कुछ अभिलेख देखने के लिए मिलते हैं। यह

जगह प्रकृति के बीच में स्थित है। इस जगह में पहुँचने के लिए ट्रैकिंग करनी पड़ती है। यह जगह बहुत सुंदर है। चारों तरफ हरियाली और चट्टानों में बनी गुफाएं देखने के लिए मिलती हैं। इन गुफाओं में प्राचीन समय में बौद्ध संत लोग रहते थे और तपस्या करते थे। यह जगह सीहोर जिले के बुधनी तहसील में स्थित है। यहां पर स्तूप देखने के लिए मिलते हैं। यह स्तूप सम्राट अशोक के द्वारा बनवाए गए थे।

विजयासन देवी — यह मंदिर सलकनपुर सीहोर शहर का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। इस मंदिर को सलकनपुर मंदिर के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर



विजयासन माता का मंदिर देखने के लिए मिलता है। यह मंदिर विंध्याचल पहाड़ियों पर स्थित है। यह मंदिर बहुत ही सुंदर है। इस मंदिर में जाने के लिए सीढ़ियां, सड़क और रोपवे की सुविधा मिल जाती है। यहाँ से चारों तरफ का सुन्दर दृश्य देख सकते हैं।



विदिशा

भारतवर्ष के प्रमुख प्राचीन नगरों में गिना जाने वाला “विदिशा” हिंदू तथा जैन धर्म के समृद्ध केन्द्र के रूप में जाना जाता है। यह मालवा के उपजाऊ पठारी क्षेत्र के उत्तर-पूर्वी हिस्से में अवस्थित है तथा पश्चिम में मुख्य पठार से जुड़ा हुआ है। जीर्ण शीर्ण अवस्था में बिखरी पड़ी कई खंडहरनुमा इमारतें यह बताती हैं कि यह क्षेत्र ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टिकोण से मध्य प्रदेश का सबसे धनी क्षेत्र रहा है। विदिशा स्थित भदिलपुर, जैनियों के दसवें तीर्थंकर भगवान शीलनाथ की जन्मभूमि होने के कारण जैनियों के लिए विशेष महत्व का है। विदिशा या बेसनगर को पाली धर्मग्रंथों में निहित किया गया है, जो कभी शुंगों के पश्चिमी क्षेत्रों की समृद्ध राजधानी थी।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

सांची स्तूप — भारत की सबसे पुरानी पत्थर की संरचना में से एक ‘सांची के स्तूप’ बौद्ध स्मारक है जो विदिशा जिले में स्थित है। सांची एक विश्व धरोहर स्थल है यहाँ स्थित सांची



के स्तूप को देखने पूरी दुनिया से लोग आते हैं। सांची के स्तूप मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से करीब 40 किलोमीटर की दूरी पर एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। यहां पर मंदिर, महल, खंडित स्तंभ, और मठ देखने के लिए मिल जाते हैं। सांची के स्तूप सम्राट अशोक के द्वारा बनवाए गए थे। यहां पर सम्राट अशोक का शिलालेख भी पाया जाता है। यहां पर तीन स्तूप देखने को मिलते हैं, जिसमें से एक स्तूप सबसे बड़ा है और इस स्तूप के बारे में कहा जाता है कि यहां पर भगवान बुद्ध की अस्थियों को रखा गया है। मुख्य स्तूप बहुत खूबसूरत है और इसमें बहुत खूबसूरत कारीगरी की गई है। यहां पर तोरण द्वार बने हुए हैं जिसमें भगवान बुद्ध के जीवन काल को दर्शाया गया है। यहां पर

गुप्त काल के मंदिर भी देखने के लिए मिलते हैं और इन मंदिरों में शिवलिंग भी देखने के लिए मिलता है।

उदयेश्वर मंदिर— बासौदा के उदयपुर गांव में स्थित इस मंदिर में कई पुराने संस्कृत के अभिलेख पाए गए हैं, जिससे यह पता चलता है कि इसे परमार राजा उदयादित्य ने 11वीं शताब्दी में 1059 से 1080 के बीच बनवाया था। उदयेश्वर मंदिर बलुआ पत्थर से बना है और छोटी दीवारों से घिरा हुआ है। दीवार के बाहरी हिस्से पर उत्कृष्ट नक्काशी की गई है। भगवान शिव को समर्पित इस मंदिर में एक गर्भ-गृह, एक मंडप और तीन प्रवेश द्वार हैं। मंडप में जटिल नक्काशी की गई है और इसके तीन तरफ झुकी



हैं। शिखर को पत्थरों से काट कर बेहतरीन तरीके से सजाए गए इस मंदिर का निर्माण वास्तुशिल्प की भूमिज शैली में किया गया है।



माला देवी मंदिर— माला देवी मंदिर विदिशा जिले में स्थित एक प्राचीन ऐतिहासिक मंदिर है। यह मंदिर विदिशा जिले की ग्यारसपुर तहसील में एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। ग्यारसपुर विदिशा का एक छोटा सा कस्बा है, जो बहुत



खूबसूरत है और हरियाली से भरपूर है। यह मंदिर विदिशा सागर राजमार्ग पर स्थित है। यह मंदिर पूरी तरह से पत्थर से बना हुआ है। मंदिर की दीवारों पर नक्काशी बनी हुई है। इस मंदिर का निर्माण 9 वीं शताब्दी में परमार राजवंश द्वारा किया गया था। यह मंदिर शक्ति की देवी और माला देवी को समर्पित है। यहां पर जैन संतों की भी मूर्तियां देखने के लिए मिल जाती हैं।

उदयगिरी गुफाएं— विदिशा शहर में स्थित “उदयगिरि की गुफाएं” मध्य प्रदेश का एक प्रमुख आकर्षण हैं। यह गुफाएं पूरे भारत देश में प्रसिद्ध हैं। इन गुफाओं में हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां देखने को



मिलती हैं। यह सारी गुफाएं उदयगिरि की पहाड़ियों पर स्थित हैं। बरसात के समय यहां का नजारा बहुत ही खुशनुमा होता है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली होती है। यहां पर 20 गुफाएं मौजूद हैं, जो चट्टानों पर

बनी हुई हैं। इनमें से कुछ गुफाएं हिंदू भगवान को समर्पित हैं और कुछ गुफाएं जैन भगवान को समर्पित हैं। इन गुफाओं का निर्माण गुप्त काल के दौरान हुआ था। यहां पर विष्णु भगवान की “वराह अवतार” की पत्थर पर उकेरी गई प्रतिमा देखने के लिए मिलती है, जो बहुत विशाल है और देखने में बहुत अद्भुत लगती है। इसके अलावा यहां पर शिव पार्वती की अर्धनारीश्वर प्रतिमा, विष्णु भगवान की शेष शैया की प्रतिमाएं, गणेश जी की प्रतिमाएं, कार्तिकेय की प्रतिमा देखने मिलती है, जो चट्टान पर उकेर कर बनाई गई हैं।

हेलिओडोरस स्तम्भ— विदिशा में स्थित हेलिओडोरस स्तम्भ को लोक भाषा में “खाम बाबा” के रूप में जाना



जाता है। एक ही पत्थर को काटकर बनाया गया यह स्तम्भ ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्तम्भ पर पाली भाषा में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग करते हुए एक अभिलेख मिलता है। यह अभिलेख स्तम्भ इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। इसे ‘गरुड़ ध्वज’ या ‘गरुड़ स्तम्भ’ भी कहा जाता है।

हिंडोला तोरण— कहा जाता है कि यह विष्णु भगवान या त्रिमूर्ति को समर्पित एक विशाल मंदिर का अलंकृत मेहरावनुमा तोरण है। दो उग्र स्तंभों से निर्मित यह रचना देखने में पारंपरिक हिंडोले के समान ही लगती है। स्तंभ के चारों तरफ विष्णु के सभी दस अवतारों का चित्रण है। यह तोरण द्वार मालादेवी मंदिर के रास्ते पर पहाड़ी की चट्टान पर स्थित है। इस पर शिल्प कला की अद्वितीय नक्काशी देखने को मिलती है।



अशोक नगर

अशोकनगर सिंध और बेतवा नदियों के बीच मध्यप्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है। अशोकनगर का एक हिस्सा चंदेरी अपने ब्रोक्रेड और मुस्लिमों के लिए प्रसिद्ध है, खासकर अपनी हाथों से बने चन्द्रियों के लिए। अशोकनगर ज़िले के गठन से पहले यह गुना जिले का हिस्सा था। अशोकनगर अपनी अनाज मंडी और “शरबती गेहूँ” के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि उज्जैन जीतने के बाद सम्राट अशोक ने लौटते हुए यहाँ की पचार भूमि पर रात गुज़ारी थी, इसलिए इसका नाम अशोकनगर हुआ।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

चंदेरी एवं चंदेरी का किला — भारत के हृदय राज्य मध्य प्रदेश में स्थित चंदेरी एक प्राचीन शहर है, जो अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना



जाता है। यह छोटा मगर खूबसूरत नगर राज्य के अशोकनगर जिले के अंतर्गत आता है। झीलों, पहाड़ों और घने जंगलों से घिरा यह स्थल पर्यटन के लिहाज से बहुत ही खास है। चंदेरी पूरे भारतवर्ष में अपनी चंदेरी साड़ियों के लिए काफी प्रसिद्ध है, ये साड़ियाँ राज्यों के अलावा अन्य देशों में भी निर्यात की जाती हैं। शहर से लगभग 71 मीटर की ऊँचाई पर स्थित चंदेरी किला यहाँ के सबसे मुख्य आकर्षणों में गिना जाता है, जिसका निर्माण मुगल काल के दौरान किया गया था। इस किले की मूल संरचना को राजा कीर्ति पाल द्वारा 11वीं शताब्दी के आसपास बनाया गया था। अतीत से जुड़े पन्ने बताते हैं कि यह किला कई बड़े आक्रमण झेल

चुका है, इसलिए इसका कई बार पुनर्निर्माण करवाया जा चुका है। खंडहर रूप में मौजूद यह किला अपने समय की भव्य संरचनाओं में गिना जाता है। इस किले के अंदर खिलजी मस्जिद, हवा पौर, नौखंडा महल और हजरत अब्दुल रहमान का मकबरा भी स्थित हैं। माना जाता है कि चंदेरी किले के जौहर कुंड में बाबर के आक्रमण के समय 800 राजपूत रानियों ने जौहर किया था।

श्री आनंदपुर साहिब— आनंदपुर भारत के मध्य प्रदेश राज्य के अशोकनगर जिले के ईसागढ़ तहसील का एक



गाँव है। यह जिला मुख्यालय अशोकनगर से उत्तर की ओर 42 किलोमीटर दूर स्थित है। श्री आनंदपुर साहिब भक्ति और आध्यात्म के मुख्य केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है जहाँ सत्य के साधक आध्यात्मिक ज्ञान और शांति प्राप्त करते हैं।



भिण्ड

भिंडी ऋषि की तपोभूमि कहलाने वाला भिंड मध्य प्रदेश का एक खूबसूरत प्राचीन शहर है, जो अपने ऐतिहासिक परिदृश्य के साथ विभिन्न प्राकृतिक खजानों के लिए प्रसिद्ध है। यह वह क्षेत्र है, जिसका नाता और पहचान बागी और बीहड़ों से होता है। यहाँ बहने वाली चंबल और सिंध नदियाँ इस स्थल की मिट्टी को उपजाऊ बनाने का काम करती हैं। फसलों और अन्य वनस्पतियों के लिए यह एक अनुकूल जगह है, इसलिए यहाँ हरे-भरे दृश्यों को देखा जा सकता है। साल 1948 में जब मध्यभारत का गठन हुआ, उसी समय बनाए गए 16 जिलों में भिंड जिला भी शामिल था। बाद में राज्यों के पुनर्गठन के दौरान यह साल 1956 में मध्यप्रदेश राज्य का हिस्सा बना। शुंग, मौर्य, नंद, कुषाण, गुप्त, हूण, गुर्जर, प्रतिहार, कछवाहा, सूर, मुगल आदि शासकों का भिंड में काफी समय तक शासन रहा।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

अटेर का किला — चंबल नदी की घाटियों में बनाया गया प्राचीन अटेर किला 1664–1668 के आसपास बनाया गया था, जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मौजूद



है। किला परिसर के कई हिस्से देखने लायक हैं, जिनमें 'खूनी दरवाजा', 'बारह खंबा महल', 'हाथीपुर' आदि शामिल हैं। यहाँ 'बदन सिंह का महल', 'राजा का महल' और 'रानी का महल' भी देखने योग्य हैं।

गोहद का किला — अटेर किले के अलावा यहां गोहद का किला भी है जो ग्वालियर से सिर्फ 45 किलोमीटर दूर है। यह किला यहाँ आने वाले सैलानियों के बीच काफी ज्यादा लोकप्रिय है। गोहद का किला 1505 में जाट शासक राणा सिंघादेव द्वितीय द्वारा बनाया गया

था, यह किला जाट शासकों के शौर्य का प्रतीक है। यह गोलाकार किला रणनीतिक कारणों से बनाया गया था।



इस किले में 11 द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक का नाम स्थानीय गांव के नाम पर रखा गया है।

वनखंडेश्वर मंदिर — भगवान शिव को समर्पित, वनखंडेश्वर मंदिर को भारत के सबसे पुराने मंदिरों में से एक माना जाता है, इस शिव मंदिर का निर्माण 1175 ईस्वी में शक्तिशाली हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान ने करवाया था। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यहां की अखंड ज्योति है, जो कई वर्षों से लगातार जल रही है। इस मंदिर में हर सोमवार को महा आरती का आयोजन किया जाता है, जिसमें शामिल होने के लिए



दूर-दूर से लोग आते हैं। इस मंदिर से जुड़ी एक मान्यता यह भी है कि मंदिर में बने शिवलिंग पर प्रसाद के साथ चावल चढ़ाया जाता है लेकिन आज तक कोई



भी चावलों से शिवलिंग को ढक नहीं सका है। सैकड़ों साल पहले कई राजाओं ने उस मंदिर के शिवलिंग को सैकड़ों क्विंटल चावल से ढकने की कोशिश की थी, फिर भी शिवलिंग कभी पूरा नहीं ढक सका।

माता रेणुका मंदिर — वीर योद्धा ऋषि परशुराम के



जन्म स्थान के रूप में सम्मानित यह मंदिर माता रेणुका को समर्पित है। एक पौराणिक कथा के अनुसार

परशुराम के पिता ने उन्हें अपनी माँ का सिर काटने का आदेश दिया। चूँकि यह उनके पिता का आदेश था इसलिए परशुराम को इसका पालन करना पड़ा। ऐसा माना जाता है कि पिता ने प्रसन्न होकर जब परशुराम को वरदान मांगने को कहा तो उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी माता जिंदा चाहिए और फिर उनके योग प्रताप से उनकी माँ जीवित हो उठी थीं।

मल्हार राव होलकर की छतरी — मल्हार राव होलकर की छतरी महारानी अहिल्या बाई होलकर ने महान मराठा जनरल के सम्मान में बनवायी थी जो



अपनी सुंदर नक्काशी और शानदार वास्तुकला के कारण दर्शनीय है। यह इंदौर में होलकर शासकों की छतरियों के पैटर्न के समान है जो फूलों और पत्तियों के पैटर्न के साथ सजावटी रूप से नक्काशीदार है। मराठा शैली छतरी शिखर गुंबद और कमान के एक सुंदर मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती है, जिस पर कलश को बहुत ही आकर्षक तरीके से बनाया गया है। छतरी की पहली मंजिल पर आकर्षक चित्रों से सजाया गया एक स्तंभित हाल भी है।



दतिया

दतिया नगर को 16वीं सदी में बुन्देलखण्ड के प्रतापी बुन्देला राजा वीर सिंह जू देव ने बसाया था। ग्वालियर के निकट उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित दतिया मध्य प्रदेश का लोकप्रिय तीर्थस्थल है। पहले यह मध्यप्रदेश राज्य में देशी रियासत थी पर अब यह स्वतंत्र जिला है। सिन्ध एवं पहूज जिले की प्रमुख नदियां हैं। 17वीं शताब्दी में बना वीर सिंह महल उत्तर भारत की सबसे बेहतरीन इमारतों में माना जाता है। यहां का पीताम्बरा देवी शक्तिपीठ भारत के श्रेष्ठतम और महत्वपूर्ण शक्तिपीठों में से एक है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

दतिया फोर्ट— दतिया का किला या महल का निर्माण 17वीं शताब्दी में नरेश वीर सिंह जूदेव ने कराया था। उन्होंने इस महल को मुगल बादशाह जहांगीर से दोस्ती की याद में बनवाया था। यह सात मंजिला इमारत

के प्रवेश द्वार पर विशाल परिसर शाही मेहमानों के स्वागत समारोह के लिए बनाया गया था। प्रवेश द्वार को जटिल चित्रों और नक्काशी से सजाया गया है। गणेश और घोड़ों के चित्रों के अलावा, चित्रित नाजुक



लकड़ी या लोहे के किसी भी सहारे के बिना सदियों से मजबूती से खड़ी है और यही बात वीर सिंह पैलेस की वास्तुकला को अद्वितीय बनाती है। जानकर हैरत होती है कि इस इमारत को केवल पत्थरों और ईंटों का इस्तेमाल करके बनाया गया है। रोचक बात यह भी है कि इस इमारत में सीमेंट का उपयोग नहीं किया गया, बल्कि दाल, गुड़ और तेल के मिश्रण से इस किले का निर्माण किया गया है। बता दें कि पहले के जमाने में ये सभी चीजें सीमेंट की जगह इस्तेमाल होती थीं। किले

लता और फूल भी महल के अदभुत प्रवेश द्वार की शोभा बढ़ाते हैं। दतिया किला एक प्रकार का भूल भुलैया है। किले की पहली दो मंजिलों पर अंधेरा रहता है और तीसरी मंजिल पर बालकनी है, जहां से पूरे शहर का नजारा देखा जा सकता है। सीलिंग पर मानव आकृतियां उभरी हुई हैं। जिसमें बुंदेली नर्तकियों को दिखाया गया है। यहां नर्तकियों को एक चक्र में सफेद फूल के आसपास नृत्य करते देखा जा सकता है। इसे राई नृत्य कहते हैं जो बुंदेलखंड क्षेत्र का लोक नृत्य है।



चौथी मंजिल का फर्श प्राचीन भारतीय खेलों से मिलता-जुलता दिखाई देगा। किले के पांचवी मंजिल पर सिर्फ एक कमरा है। सेंटर टॉवर की ओर जाने वाले मार्ग खुदे हुए हैं और आंतरिक दीवारों पर भित्ति चित्र बने हुए हैं जो बुंदेलखंड वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

श्री पीताम्बरा पीठ — पीताम्बरा पीठ दतिया शहर में स्थित देश का प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। श्री स्वामी जी महाराज के द्वारा इस स्थान पर बगलामुखी देवी तथा



धूमावती माता की स्थापना की गयी थी। पीताम्बरा पीठ में स्थित वनखण्डेश्वर मंदिर एक महाभारत कालीन शिव मंदिर है।

सोनागिरी के जैन मंदिर— सोनागिरी के मंदिर जैन धर्म के दिगम्बर सम्प्रदाय का पवित्र तीर्थस्थल है। इसी स्थान पर राजा नंग नाम ने अपने अनुयायियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया था। भक्तगणों और संतों के बीच यहां के मंदिर बहुत लोकप्रिय हैं। वे यहां आकर मोक्ष प्राप्ति और आत्मानुशासन का अभ्यास करते हैं। सोनागिरी के पहाड़ी पर 77 मंदिर और पास के गांव में 26 जैन मंदिर हैं। पहाड़ी पर बना 57 नंबर का मंदिर यहां का मुख्य



मंदिर है। इस मंदिर में भगवान चन्द्रप्रभु की 11 फीट ऊंची आकर्षक प्रतिमा स्थापित है। यहां भगवान शीलत नाथ और पार्श्वनाथ की भी सुंदर प्रतिमाएं स्थापित हैं। सोनागिरी दतिया से 15 कि.मी. दूरी पर है।

गुप्तेश्वर धाम दतिया— गुप्तेश्वर धाम दतिया शहर में स्थित एक धार्मिक स्थल है। गुप्तेश्वर धाम दतिया शहर के बडोनी में स्थित है। यहां पर शंकर जी का एक शिवलिंग देखने के लिए मिलता है, जिसके बारे में कहा



जाता है कि शिवलिंग की ऊंचाई बढ़ती जा रही है। यह जगह प्राकृतिक वातावरण से भरी हुई है।



गुना

गुना मध्य प्रदेश में पार्वती नदी के किनारे पर बसा एक खूबसूरत शहर है। इसे चंबल व मालवा के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है। गुना प्राचीन अवन्ती साम्राज्य का एक हिस्सा था, जिसकी स्थापना चंद प्रदयोता महासेना ने की थी। स्वतंत्रता से पहले गुना ग्वालियर राज घराने का हिस्सा था। 1947 में भारत को आजादी मिलने के बाद गुना मध्य भारत के राज्य के 16 जिलों में से एक था। शहर में मुख्यतः हिन्दू, मुस्लिम तथा जैन समुदाय के लोग निवास करते हैं।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

टेकरी सरकार (हनुमान मंदिर) — हनुमान टेकरी गुना शहर में स्थित एक हिन्दू धार्मिक स्थल है। प्रसिद्ध



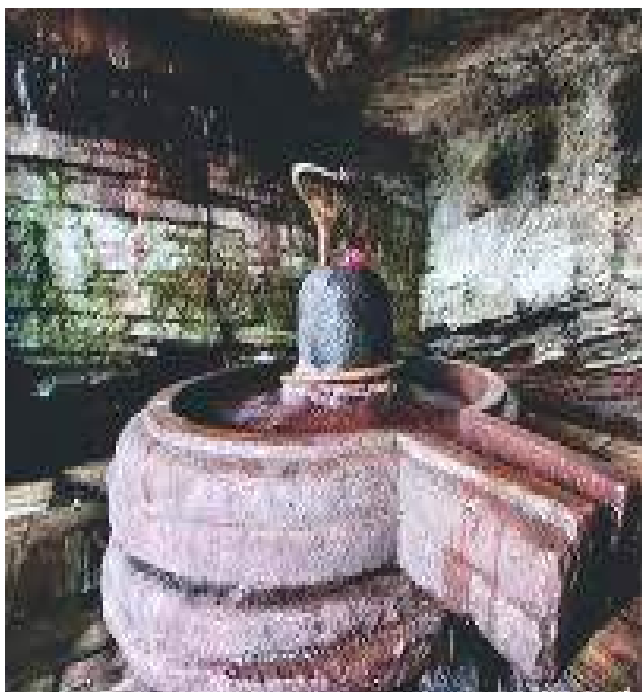
सिद्ध स्थल श्री हनुमान टेकरी मंदिर गुना जिला मुख्यालय से करीब 5 किलोमीटर दूर स्थित है। ऊँची पहाड़ियों पर स्थित इस मंदिर में अति प्राचीन दक्षिणमुखी हनुमान जी की प्रतिमा स्थापित है। टेकरी सरकार का यह स्थान सातवीं शताब्दी पूर्व का है और साधू संतों की तपोभूमि का केन्द्र रहा है। मंदिर में जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस मंदिर में शिवलिंग के दर्शन भी होते हैं। ऊँचाई पर स्थित होने के कारण मंदिर से गुना शहर का दृश्य अत्यंत सुन्दर दिखाई पड़ता है।

बजरंगगढ़ का किला — बजरंगगढ़ का किला गुना शहर में स्थित एक ऐतिहासिक किला है। यह एक पहाड़ी के ऊपर बना हुआ प्राचीन किला है। जो अब



खंडहर अवस्था में मौजूद है। इस किले से बजरंगगढ़ का सुंदर दृश्य देखने के लिए मिलता है। यह किला 17 वीं शताब्दी में राजा जयसिंह के शासनकाल में बना था। यहाँ पर मोती महल, रंग महल, राम मंदिर और बजरंग मंदिर भी देखने के लिए मिल जाते हैं।

केदारनाथ मंदिर— केदारनाथ धाम गुना शहर का एक प्राकृतिक सुंदरता से घिरा हुआ क्षेत्र है। यह जगह



धार्मिक भी है। यहाँ पर भगवान शिव जी का शिवलिंग एक गुफा में विराजमान है, पहाड़ों से पानी शिवलिंग के ऊपर रिसता है और भगवान शिव जी का अभिषेक निरंतर होता रहता है। यहाँ पर बरसात के समय सुंदर झरना भी देखने के लिए मिलता है। यह जगह पहाड़ों

के बीच में स्थित एक सुंदर जगह है।

शाहाबाद का किला— शाहाबाद का किला गुना शहर का एक ऐतिहासिक प्राचीन किला है। किले के अंदर बहुत सारी पुरानी जगह जैसे प्राचीन बावड़ी, छतरियां, मंदिर एवं मजार देखने के लिए मिल जाते हैं। यहां पर घोड़ों का अस्तबल भी देखने के लिए मिल जाता है। यह किला बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है। इस किले में ट्रेकिंग करके पहुँचा जा सकता है। यह किला एक ऊँची पहाड़ी पर घने जंगल में बना हुआ है।

चचौरा का किला — पहाड़ी पर बना हुआ चचौरा का किला गुना शहर का ऐतिहासिक स्थल है। यह किला



अत्यन्त प्राचीन है। किले का बहुत सारा भाग खंडहर में तब्दील हो गया है। यह किला बहुत सुंदर है और इस किले से चचौरा का खूबसूरत दृश्य देखने के लिए मिलता है।



ग्वालियर

मध्य प्रदेश के मस्तक पर किसी मणि की भाँति स्थित 'ग्वालियर' भौगोलिक दृष्टि से राज्य के उत्तर में स्थित है। ग्वालियर का नाम यहाँ स्थित गोपाचल पर्वत से लिया गया है जिसे गोपगिरि, गोप पर्वत या गोपाद्री आदि नामों से भी जाना जाता है। ग्वालियर को यह नाम 8 वीं शताब्दी में ग्वालियर की भूमि पर राज करने वाले राजा सूरज सेन के द्वारा दिया गया था। किंवदंती है कि राजा सूरज सेन कुष्ठ रोग से पीड़ित थे और एक साधू ग्वालिपा जी द्वारा उन्हें ठीक किया गया था। अतः राजा सूरज सेन ने उन्हें सम्मान देने के लिए इस नगर का नाम उनके नाम पर रखा था। ग्वालियर को गालव ऋषि की तपोभूमि भी कहा जाता है। ग्वालियर सन 1948 से 1956 तक मध्य भारत की राजधानी रहा लेकिन जब मध्य भारत मध्य प्रदेश बना तब इसे जिले का स्वरूप दिया गया। सहेज कर रखे गए अतीत के भव्य स्मृति चिन्ह यहां का किला, विभिन्न स्मारक एवं महल इस शहर को पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाते हैं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ग्वालियर में ऐसे बहुत से स्थान हैं, जो इसके स्वर्णिम इतिहास की गवाही देते नहीं थकते और आए दिन आगंतुकों एवं पर्यटन प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

मुरार :- अतीत में यह एक सैन्य क्षेत्र हुआ करता था, जिसे मिलिट्री ऑफिसर्स रेजिडेंशियल एरिया रिजर्व्ड कहा जाता था और संक्षेप में मोरार। समय के साथ-साथ स्थानीय भाषा के प्रभाव में यह "मोरार" कब "मुरार" हो गया, पता ही नहीं चला।

थाटीपुर :- रियासत काल में यहाँ सेना के सरकारी आवास थे, जिसका नाम "थर्टी फोर लांसर" था। आजादी के बाद ये आवास मध्य प्रदेश शासन के अधीन आ गए और धीरे-धीरे इस स्थान को "थर्टी फोर" की जगह थाटीपुर कहा जाने लगा। वर्तमान में अब इसे थाटीपुर के रूप में ही जाना जाता है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

ग्वालियर का किला— ग्वालियर किले का निर्माण 8वीं शताब्दी में किया गया था। यह किला मध्यकालीन स्थापत्य के अद्भुत नमूनों में से एक है। सेन्ड स्टोन से बना यह किला शहर की हर दिशा से दिखाई देता है



58

गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

और शहर का प्रमुखतम स्मारक है। एक ऊँचे पठार पर बने इस किले तक पहुँचने के लिये एक बेहद ऊँची चढ़ाई वाली पतली सड़क से होकर जाना होता है। किले की तीन सौ फीट ऊँचाई इस किले के अविजित होने की गवाह है। इस किले के भीतरी हिस्सों में मध्यकालीन स्थापत्य के अद्भुत नमूने स्थित हैं। 15वीं शताब्दी में निर्मित गूजरी महल उनमें से एक है जो राजा मानसिंह और गुर्जर रानी मृगनयनी के गहन प्रेम का प्रतीक है। इस महल के बाहरी भाग को उसके मूल स्वरूप में राज्य के पुरातत्व विभाग ने सप्रयास सुरक्षित रखा है किन्तु आन्तरिक हिस्से को संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया है, जहाँ दुर्लभ प्राचीन मूर्तियाँ रखी गई हैं जो कार्बन डेटिंग के अनुसार प्रथम शती ए डी की हैं। ये दुर्लभ मूर्तियाँ ग्वालियर के आसपास के इलाकों से प्राप्त हुई हैं।

सहस्रबाहु मंदिर या सासबहू का मंदिर — ग्वालियर दुर्ग पर स्थित इस मंदिर के बारे में मान्यता है कि यह सहस्रबाहु अर्थात् हजार भुजाओं वाले भगवान विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर की छटा देखते ही



बनती है। यहां दो मंदिर हैं। प्रचलित है कि एक मंदिर राजा महिपाल ने अपनी पत्नी के कहने पर भगवान विष्णु को समर्पित कर बनवाया था। बाद में उन्हीं के पुत्र ने अपनी पत्नी के कहने पर भगवान् शिव को समर्पित कर दूसरे मंदिर का निर्माण करवाया और फिर दोनों ही मंदिर संयुक्त रूप से सहस्रबाहु मंदिर कहे गए। बाद में यह नाम उनके निर्माण से जुड़ी कहानी के आधार पर सहस्रबाहु मंदिर से सासबहू का मंदिर हो गया।

तेली का मंदिर— यह मंदिर ग्वालियर दुर्ग के परिसर में स्थित एक प्राचीन हिन्दू मंदिर है। यह मंदिर विष्णु, शिव और मातृ का को समर्पित है। इसका निर्माण काल



विभिन्न विद्वानों द्वारा 8वीं शताब्दी से लेकर 9वीं शताब्दी के आरम्भिक काल के बीच में माना जाता है।



59
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

सूर्य मंदिर — ग्वालियर में स्थित सूर्य मंदिर ओड़िसा कोणार्क में स्थित सूर्य की प्रतिकृति माना जाता है। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है। कहा जाता है कि प्रतिदिन सूर्य की पहली किरण मंदिर में स्थित सूर्य



भगवान की प्रतिमा पर पड़ती है। मंदिर की बाहरी दीवारों को लाल बलुआ पत्थरों से बनाया गया है जबकि अंदरूनी हिस्सा सफेद संगमरमर से बनाया गया है, जो इसकी सुन्दरता को कई गुना बढ़ा देता है।

तानसेन स्मारक— अकबर के नवरत्नों में से एक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के स्तंभ महान संगीतकार



तानसेन की स्मृति में उनके शहर ग्वालियर मध्य प्रदेश में प्रतिवर्ष नवंबर और दिसंबर में तानसेन संगीत समारोह आयोजित किया जाता है। तानसेन ने सूफी संस्कृति का पालन किया। तानसेन के बारे में पौराणिक कथा यह है कि जब वे मेघ मल्हार राग गाते थे तो बरसात होने लगती थी।

रानी लक्ष्मीबाई स्मारक — यह स्मारक ग्वालियर शहर के पड़ाव क्षेत्र में है। कहते हैं कि झाँसी की रानी



लक्ष्मीबाई की सेना ने अंग्रेजों से लड़ते हुए यहां पड़ाव डाला और यहीं वीरगति को प्राप्त हुई। इसी प्रकार यहाँ तात्या टोपे का भी स्मारक है।



60
गोपाक्षी

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

मुरैना

उत्तरी मध्य प्रदेश में स्थित मुरैना चंबल घाटी का प्रमुख जिला है। इस जिले से चंबल, कुंवारी, आसन और सांक नदियाँ बहती हैं। मुरैना का प्राचीन नाम मयूरवन है जो कि महाभारत काल के समय बहुत प्रसिद्ध था। इसी जिले का एक छोटा सा सांटा नामक गांव है, जिसमें जिले के सभी गांवों की अपेक्षाकृत अधिक मोर पाये जाते हैं। चम्बल नदी के बीहड़ों से घिरा यह भू-पटल जिसे हम आज मुरैना नाम से जानते हैं असल में कभी “पेंच” नाम से विख्यात था और यह पेंच नाम यहाँ पर लगी सरसों के तेल मील के कारण ग्रामीणों द्वारा दिया गया आम नाम था।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

सबलगढ़ का किला— मुरैना से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर सबलगढ़ नगर में एक पहाड़ी के शिखर पर स्थित यह किला मध्यकाल का बना हुआ है। इस किले की नींव तंवर/तोमर वंश ने रखी थी



जबकि करौली के महाराजा गोपाल सिंह ने इसे पूरा करवाया था। कुछ समय बाद सिकंदर लोधी ने इस किले को अपने नियंत्रण में ले लिया था लेकिन बाद में करौली के राजा ने मराठों की मदद से इस पर पुनः अधिकार कर लिया। किले के पीछे सिंधिया काल में बना एक बाँध है, जो यहाँ जलापूर्ति का साधन है।

चौंसठ योगिनी मंदिर — इस मंदिर को एकट्टसो महादेव मंदिर भी कहा जाता है। लगभग सौ फीट ऊँची एक अलग पहाड़ी के ऊपर खड़ा यह गोलाकार मंदिर नीचे खेती किए गए खेतों का शानदार दृश्य प्रस्तुत



करता है। इस मंदिर का नामकरण इसके हर कक्ष में शिवलिंग की उपस्थिति के कारण किया गया है। यह मंदिर मुरैना शहर के मितावली ग्राम के पास स्थित है। यहाँ पर प्राचीन मूर्तियाँ भी पाई गई थीं, जो ग्वालियर संग्रहालय में संग्रहित करके रखी गई हैं। इस मंदिर के डिजाइन के आधार पर ही हमारे संसद भवन को बनाया गया है। इस मंदिर का निर्माण महाराजा देवपाल द्वारा 1323 में कराया गया था। मंदिर से सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य अत्यंत मनोरम लगता है।



61
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

ककनमठ मंदिर — ककनमठ मंदिर मुरैना जिले में स्थित एक अद्भुत मंदिर है। यह मंदिर अद्भुत इसलिए



है, क्योंकि यह मंदिर बिना किसी भी सहारे के खड़ा है। इस मंदिर में किसी भी प्रकार के सीमेंट, चूने या चिपकाने वाले पदार्थ का इस्तेमाल नहीं किया गया है सिर्फ इसमें पत्थरों को संतुलित करके रखा गया है और यह मंदिर अभी तक खड़ा है। यह मंदिर भगवान शिव जी को समर्पित है। ककनमठ मंदिर मुरैना जिले के सिहोनिया नामक गाँव में है। यह मंदिर 100 फीट ऊँचा है। इस मंदिर की दीवारों पर नक्काशी की गई है। यह कहा जाता है कि इस मंदिर को 11 वीं शताब्दी में राजा कीर्ति राज ने बनवाया था। उनकी रानी का नाम काकनावती था इसलिए इस मंदिर को ककनमठ कहा जाता है।

बटेश्वर मंदिर — बटेश्वर मंदिर मुरैना शहर की प्राचीन धरोहर हैं। यहाँ पर आपको प्राचीन मंदिरों का एक पूरा समूह देखने के लिए मिलता है। यह मंदिर हजारों साल पुराने हैं। यहाँ पर 200 से भी ज्यादा मंदिर हैं, कुछ मंदिर तो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं तथापि लगभग सौ मंदिर अब भी सलामत हैं। इनमें से अधिकतर मंदिर भगवान शिवजी को समर्पित है। ये



मंदिर पूरी तरह पत्थर से बने हुए हैं और इन मंदिरों में नक्काशी की गई है, जो बहुत ही खूबसूरत है। यह मंदिर मुरैना जिले की पड़ावली गाँव के पास स्थित है। बटेश्वर मंदिर गुर्जर एवं प्रतिहार वास्तुकला में बनाए गए हैं।

कुंतलपुर बांध या कोतवाल बाँध — कुंतलपुर बांध या कोतवाल बांध मुरैना जिले में स्थित एक बांध है। यह



बांध आसन नदी पर बना हुआ है। यह बांध मुरैना शहर से करीब 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह बांध बहुत सुंदर है और बरसात के समय इसका दृश्य बहुत अच्छा होता है।



श्योपुर

श्योपुर जिला मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है। श्योपुर पूर्व में मध्यप्रदेश के शिवपुरी, पश्चिम में राजस्थान के कोटा, उत्तर में मुरैना, ग्वालियर एवं दक्षिण में राजस्थान के कोटा जिले से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि जयपुर राजघराने के सामंत गौड़ राजपूत के प्रमुख इंद्रसिंह द्वारा शहर और किले की स्थापना 1537 ई. में की गई थी। श्योपुर जिले को हिन्दु देवी-देवताओं के प्रति आस्था वाला जिला माना जाता है। यहाँ से प्रति वर्ष सावन के महीने में बहुत दूर-दूर जैसे कि गोवर्धन (मथुरा), कैलादेवी (करौली), श्रीजी (दिग्गीपुरी राजस्थान), त्रिनेग गणेश जी (सवाई माधोपुर) आदि जिलों में पदयात्रा जाती हैं। श्योपुर की कराहल तहसील में प्रदेश की सहरिया जनजाति निवास करती है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कुनो वन्यजीव अभ्यारण्य— कुनो वन्यजीव अभ्यारण्य मध्य प्रदेश के उत्तर-पश्चिम में श्योपुर जिले में स्थित है। इसकी स्थापना सन् 1981 को एक वन्य अभ्यारण्य के रूप में की गई थी जिसे सन् 2018 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया। प्रकृति की अद्भुत छटा से परिपूर्ण



यह राष्ट्रीय उद्यान श्योपुर जिले में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ जंगली जानवरों को उनके वास्तविक परिवेश में देख सकते हैं। हरे भरे जंगलों में स्वतंत्र जानवरों को विचरण करते देखना एक आनंदपूर्ण अनुभूति है।

श्योपुर का किला — सीप एवं कलवाल नदी के संगम पर बना यह किला प्रस्तर शिल्प का बेजोड़ नमूना है पुरातत्व संग्रहालय हेतु यहाँ 425 बेशकीमती मूर्तियों का भी संग्रह किया गया है। यहाँ स्थित गूजर महल



नरसिंह महल, दरबार हॉल, राजा इन्द्र सिंह व राजा किशोरदास की छतरी दर्शनीय हैं। किले के कुछ भवन राज्य संरक्षित घोषित हैं।

बंजारा डैम — एक किंवदंती के अनुसार सीप नदी पर स्थित बंजारा डैम लख्खी बंजारे द्वारा बनाया गया था। परन्तु इस डैम के निर्माण का वास्तविक प्रमाण सन् 1728 में राजा इन्द्रसिंह गौड़ द्वारा बनवाये जाने का मिलता है। बाद में जनकोजीराव सिंधिया के समय इस डैम की ऊँचाई बढ़ाई गयी जिसका शिलालेख बंजारा डैम की दीवार पर लगा हुआ है।



शिवपुरी

शिवपुरी मध्यप्रदेश का एक प्राचीन शहर और पवित्र स्थान है। जिसे पहले सिपरी के नाम से जाना जाता था। इस जिले का इतिहास मुगल काल से है। शिवपुरी के घने जंगल एक समय में शाही शिकार के मैदान थे। ज्यादातर जिला छोटी पहाड़ी पर स्थित है जो पर्णपाती जंगलों से ढका है। जहाँ ढलान सदा वनस्पति और चारों ओर अच्छे जंगलों के साथ सौम्य है। पौराणिक कथा के अनुसार, इस शहर का नाम भगवान शिव के नाम पर रखा गया है। 1804 तक यह शहर कछवाहा राजपूतों के स्वर्ग के रूप में जाना जाता रहा है। इसके बाद यहाँ सिंधिया राजवंश द्वारा शासन किया गया। इसके अलावा शिवपुरी, स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्व रखता है क्योंकि यह वही स्थान है जहाँ महान स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे जी को फांसी दी गई थी।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के प्रमुख दर्शनीय स्थल

माधव राष्ट्रीय उद्यान:— यह उद्यान शिवपुरी शहर के पास स्थित है और ऊपरी विंध्यन पहाड़ियों का एक



हिस्सा है। इसे 1958 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला। उद्यान के लिए दो प्रवेश स्थल हैं एक NH-25 (पुराना झाँसी रोड) पर स्थित है जो शिवपुरी शहर से लगभग 5 किलोमीटर दूर है। जबकि दूसरा NH-3 (आगरा-मुंबई रोड) पर शिवपुरी से ग्वालियर की ओर 7 किलोमीटर की दूरी पर है। उद्यान झीलों, जंगलों और घास के मैदानों से युक्त एक विविध पारिस्थितिकी तंत्र के साथ उपहार स्वरूप है। जंगल में नीलगाय, चिंकारा और हिरण जैसे चीतल, सांभर और सर्किंग हिरण जैसे मृग रहते हैं। तेंदुए, भेडिया, सियार, लोमड़ी, जंगली कुत्ता, सुअर, साही,

अजगर आदि जानवर भी इस उद्यान में देखे जाते हैं।

तात्या टोपे स्मारक :— भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मुख्य रूप से भाग लेने वाले सेनानियों में तात्या टोपे का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। तात्या टोपे भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के एक सेना नायक थे। इनका



वास्तविक नाम रामचन्द्र पांडुरंग येवलकर था लेकिन सब इनको प्यार से तात्या कहते थे। सन् 1857 की क्रांति में भारत को आजादी दिलाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जब झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, पेशवा राय साहब जैसे लोग इस दुनिया से विदा लेकर



चले गये। तब वह लगभग एक साल तक अंग्रेजों के विरुद्ध लगातार विद्रोह करते रहे। पारोन के जंगल में तात्या टोपे के साथ विश्वासघात हुआ। नरवर का राजा मानसिंह अंग्रेजों से मिल गया और उसकी गद्दारी के कारण तात्या टोपे 8 अप्रैल 1859 को सोते में पकड़ लिये गये। शिवपुरी में उन्हें तीन दिन बंद रखा गया। 18 अप्रैल को शाम पाँच बजे तात्या को अंग्रेज कंपनी की सुरक्षा में बाहर लाया गया और हजारों लोगों की उपस्थिति में खुले मैदान में फाँसी पर लटका दिया गया। उस महान योद्धा की याद में शिवपुरी में उनका स्मारक बनाया गया है। स्वर्गीय तात्या टोपे का स्मारक नव पीढ़ी को देशभक्ति की भावना से प्रेरित करता है।

नरवर का किला— शिवपुरी जिले में नरवर का प्राचीन किला काली सिंध के पूर्व में है जो शिवपुरी से करीब 41 किमी. की दूरी पर है। नरवर का किला मध्ययुगीन समय का है। महाभारत में वर्णित यह नगर राजा नल की राजधानी



बताया गया है। 12वीं शताब्दी तक इस नगर को 'नलपुर' कहा जाता था। यह किला लगभग 8 किलोमीटर के घेरे में बना हुआ है। नरवर दुर्ग के पूर्वी अंचल में पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर लंबवत् एक दूसरा पहाड़ है, जिसे हजीरा पहाड़ कहते हैं, क्योंकि इसके पश्चिमी भाग के शिखर पर दो कलात्मक हजीरे निर्मित हैं। विन्ध्य श्रेणी पर नलपुर दुर्ग जिसके दक्षिण-पश्चिम एवं उत्तर में सटी सिंध एवं पूर्व से अहीर नदी मानो प्रकृति ने चारों ओर से इसे नदियों की कश्धनी पहनाकर भूमितल पर ही प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान कर दी है।

छतरी — सुशोभित एवं जटिल रूप से अलंकृत संगमरमर छतरियों के लिए शिवपुरी प्रसिद्ध है जो सिंधिया शासकों द्वारा निर्मित हैं। छतरियाँ एक विस्तृत मुगल गार्डन में स्थापित हैं और सिंधिया शासकों को समर्पित हैं। इनमें से एक



छतरी माधव राव सिंधिया की है और दूसरी उनकी माँ महारानी विजया राजे सिंधिया की। छतरियाँ मुगल मंडप के साथ हिन्दू और इस्लामी वास्तुकला शैलियों का शानदार संलयन है।

पवा जल प्रपात :- यह जल प्रपात शिवपुरी जिले की पोहरी तहसील में स्थित है। इसकी दूरी शिवपुरी शहर से लगभग 40 किलोमीटर है। यह झरना एक बहुत ही सुन्दर झरना है। यहाँ भगवान शिव की भव्य मूर्ति है। पवा कुंड की



गहराई लगभग 500 फीट है। कुंड के चारों ओर की पहाड़ियाँ इस जगह को बेहद खूबसूरत एवं आकर्षक बनाती हैं। यह एक धार्मिक स्थल है। कहा जाता है कि इस पवित्र स्थान पर जो भी मन्त्र मांगी जाए वह अवश्य पूर्ण होती है।



अलीराजपुर

अलीराजपुर जिला पश्चिमी मध्यप्रदेश में स्थित है। इस जिले की सीमाएँ गुजरात व महाराष्ट्र राज्य की सीमाओं को छूती हैं। अलीराजपुर जिले में प्राथमिक रूप से भील, भिलाला, बारेला, मानकर, धाणक व कोटवाल जनजाति के लोगों की बहुलता है। जिले का नाम पूर्व रियासत की राजधानी पर रखा गया। आदिवासी बहुल समुदाय होने के कारण अलीराजपुर क्षेत्र पर 15वीं शताब्दी में आदिवासी राजाओं का शासन था। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, अलीराजपुर क्षेत्र को भारतीय संघ में समाहित कर लिया गया। 1 नवंबर, 1956 को मध्यप्रदेश के गठन के बाद अलीराजपुर झाबुआ जिले में आया। बाद में 17 मई, 2008 को अलीराजपुर को अलग जिला बना दिया और इस तरह एक नई प्रशासनिक इकाई अलीराजपुर का गठन किया गया।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कट्टीवाड़ा — कट्टीवाड़ा, जिला अलीराजपुर की एक तहसील है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। आदिवासी अंचल के चारों ओर पहाड़ियों



की आगोश में बसे कट्टीवाड़ा को कोई गुलमर्ग—सा खूबसूरत बताता है तो कोई मध्य प्रदेश की कश्मीर घाटी। इसके अलावा सर्वाधिक औसत वर्षा होने के कारण इसे चेरापूंजी भी कहा जाता है। बरसात के मौसम में यहाँ एक प्राकृतिक झरना शुरू हो जाता है और प्राकृतिक सुंदरता एक रमणीय तरीके से निकलती है, जो पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है। यह क्षेत्र विश्व की प्रसिद्ध आम प्रजाति “नूरजहाँ” के लिए भी जाना जाता है।

चन्द्रशेखर आज़ाद नगर — अलीराजपुर जिले की पांच तहसीलों में से एक भावरा, प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री चन्द्रशेखर आज़ाद की जन्मभूमि है। तहसील का नाम भावरा से बदलकर इसे चन्द्रशेखर आज़ाद नगर कर दिया गया है। शहर में मुख्य आकर्षण महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आज़ाद की झोंपड़ी (घर) है, जहां उन्होंने अपना बचपन बिताया और



फिर यहां से निकल कर उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चन्द्रशेखर आज़ाद नगर जिला मुख्यालय से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।



बड़वानी

बड़वानी भारत के मध्यप्रदेश राज्य में स्थित है। यह शहर नर्मदा नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। यह जिला मध्यप्रदेश के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। जिला, सतपुड़ा और विंध्याचल वन पर्वतमालाओं से घिरा हुआ है। यह जिला कपास के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। बड़वानी जिले की स्थापना 25 मई 1998 को हुई। पूर्व में यह जिला खरगोन (पश्चिम निमाड़) जिले का एक भाग था। आजादी से पहले बड़वानी शहर 'निमाड़ के पेरिस' के रूप में जाना जाता था। 1948 से पहले बड़वानी, राज्य की राजधानी था। यह छोटा-सा राज्य अपने चट्टानी इलाकों और कम उत्पादक भूमि के कारण अंग्रेज, मुगलों और मराठों के शासन से बचा रहा। शहर बड़वानी पूर्व में बड़नगर और सिद्ध नगर के नाम से भी जाना जाता था।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

बावनगजा— यह एक महत्वपूर्ण जैन तीर्थ केन्द्र है। यह स्थान मुख्यालय से 6 किलोमीटर दूरी पर है। यहाँ पहाड़ी पर 15वीं सदी के 11 मंदिर हैं साथ ही भगवान



आदिनाथ की दुनिया की सबसे बड़ी प्रतिमा है। ऐसा कहा जाता है कि जैन संत कुंभकर्ण और इन्द्रजीत ने इस स्थान से ही निर्वाण पाया था। भगवान ऋषभदेव की यह प्रतिमा सतपुड़ा की पहाड़ियों में पाई गई है जो 84 फीट की है। न केवल दार्शनिक वरन् इस प्रतिमा का अपना ऐतिहासिक महत्व भी है जो जैन धर्म एवं उसके इतिहास के बारे में बहुत कुछ बताता है।

बिजासन माता मंदिर — बड़वानी जिले में सेंधवा से 16 कि.मी. दूरी पर स्थित बिजासन माता का मंदिर अति प्राचीन बताया जाता है। इस क्षेत्र में यह मंदिर बहुत ही ज्यादा प्रसिद्ध है। यह मंदिर माता दुर्गा को समर्पित है।

ऐसी मान्यता है कि जो भी श्रद्धालु मन से कुछ माँगता है देवी दुर्गा उसकी मुराद अवश्य पूरी करती है। यही कारण है कि न केवल मध्य प्रदेश से बल्कि राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात और देश के अन्य कोनों से भी यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। नवरात्रि के समय इस मंदिर की शोभा देखते ही बनती है।



इसके अलावा यहाँ अंजड़, एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक स्थान है। वीरेश्वर महादेव और नागरी माता मंदिर महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। जिला मुख्यालय बड़वानी, व्यावसायिक रूप से प्रसिद्ध होने के साथ-साथ अपने पुराने स्मारकों के लिए भी प्रसिद्ध है। भंवरगढ़ में भंवरगढ़ या बोरगढ़ बीजासन का प्राचीन किला भी बेहद प्रसिद्ध है।



बुरहानपुर

भारत के राज्यों में मध्यप्रदेश में स्थित 14वीं शताब्दी में खानदेश के फ़ारुखी वंश के सुल्तान मलिक अहमद के पुत्र नसीर द्वारा बसाया गया था। अकबर ने 1599 ई. में बुरहानपुर पर अधिकार कर लिया। सन् 1631 में शाहजहाँ की प्रिय बेगम मुमताज़ की यहीं मृत्यु हुई थी। आइन-ए-अकबरी में बुरहानपुर का उल्लेख उद्यानों की नगरी के रूप में किया गया है, बुरहानपुर में अनेकों स्थापत्य कला की इमारतें आज भी अपने सुन्दर वैभव के लिए जानी जाती हैं।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कुंडी भंडारा— शुद्ध जल प्रदाय करने की दृष्टि से मुगल शासकों ने आठ जल प्रदाय प्रणालियों का निर्माण करवाया था। जिनसे विभिन्न समयों पर इस नगरी में



काफी मात्रा में जल प्रदाय किया जाता था। ये निर्माण कला के अद्वितीय नमूने हैं और इनकी गणना अत्यंत व्यय साध्य मुगल यांत्रिक कला की पटुता और कुशलता के शानदार अवशेषों में की जाती है। खूनी या कुंडी भंडारा का निर्माण मुगल बादशाह अकबर के शासन काल में अब्दुरहीम खानखाना द्वारा करवाया गया था। सतपुड़ा पहाड़ियों से ताप्ती नदी की ओर बहने वाले भूमिगत स्रोतों को तीन स्थानों पर रोका गया है, इन्हें मूल भण्डारा, सूखा भण्डारा और चिंताहरण जलाशय कहा जाता है। भूमिगत जल वाहिनियों के इन आठ संघों में से नालियों के रूप में दो संघ बहुत पहले ही

नष्ट कर दिए गए थे। अन्य छह संघों में कई कुएँ हैं, जो भूमिगत गैलरियों से संबद्ध हैं और जो इस प्रकार निर्मित हैं कि पास की पहाड़ियों से जल का रिसना घाटी के मध्य की ओर खींचा जा सके। इस प्रकार पर्याप्त जल संग्रहित होने पर वह नगर में या उसके निकटवर्ती स्थानों में इष्ट स्थान तक चिनाई पाइप में ले जाया जाता था। एक संघ से, जो मूल भण्डारा कहलाता है, से महल और नगर के मध्य भाग में जलपूर्ति की जाती थी, जो कई वायुकूपकों से युक्त लगभग 1300 सौ फुट सुरंग मार्ग से जाता था। जल एक पक्के जलाशय, जो जाली करंज कहलाता है, में छोड़ा जाता था और यहां से मिट्टी के और तराशे गए पत्थर के पाइपों के जरिए पानी नगर में विभिन्न करंजों और वाटर टॉवरों में ढलवां लोहे की पाइप लाइन डाली गई।

असीरगढ़ का किला — दुर्गम पहाड़ी पर स्थित असीरगढ़ का किला बुरहानपुर से 22 किलोमीटर और खंडवा से 48 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसे



“गेटवे टू सदरन इण्डिया” या “दक्षिण का द्वार” या “दक्खन का दरवाजा” कहा जाता है। मध्यकाल में इस दुर्गम एवं अभेद्य किले को जीते बिना दक्षिण भारत में कोई शक्ति प्रवेश नहीं कर सकती थी। इस किले को तीन अलग-अलग स्तर पर बनाया गया है। ऊपर वाला परकोटा असीरगढ़ कहलाता है और अन्य परकोटे कमरगढ़ और मलयगढ़ कहलाते हैं।

गुरुद्वारा — सिक्ख धर्म का महत्वपूर्ण तीर्थस्थल गुरुद्वारा एक महत्वपूर्ण स्थल है। प्रथम सिक्ख गुरु नानक देव जी एवं अंतिम सिक्ख गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के पवित्र चरण इस स्थल पर पड़े। यहाँ रखे हुए पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब पर गुरु नानक देव जी महाराज ने हस्ताक्षर भी किए थे। यहाँ गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के अस्त्र शस्त्र एवं गुरु ग्रंथ साहब के दर्शन भी होते हैं। यह गुरुद्वारा लगभग 400 वर्ष प्राचीन है।

शाही महल — ताप्ती नदी के तट पर स्थित शाही महल मूल रूप से फारुकी शासकों द्वारा बनाया गया था और शाहजहाँ द्वारा बसाया गया था, जब वह बुरहानपुर के गर्वनर थे। शाही किला में उसने अपने सिंहासन पर चढ़ने के पहले तीन वर्षों तक अपना दरबार स्थापित किया था। महल में मुख्य आकर्षण हमाम या शाही

स्नान है। यह विशेष रूप से शाहजहाँ की पत्नी, बेगम मुमताज़ महल के लिए बनाया गया था, ताकि वह खश, केसर और गुलाब की पंखुड़ियों के साथ सुगंधित पानी में एक शानदार स्नान का आनंद ले सके। इस महल ने मोहब्बत की मिसाल कहे जाने वाले मुमताज और शाहजहाँ के प्रेम को बड़े करीब से देखा। परन्तु अफसोस कि इस महल ने प्रेम के साथ ही मुमताज की मृत्यु भी देखी, जो अपनी चौदहवीं संतान को जन्म देते समय दुनिया को छोड़कर चली गई।

महल गुलआरा — महल गुलआरा बुरहानपुर से लगभग 21 किलोमीटर की दूरी पर, अमरावती रोड पर स्थित ग्राम सिंघखेड़ा से उत्तर की दिशा में हैं। जब



शाहजहाँ अपने पिता जहांगीर के कार्यकाल में शहर में बुरहानपुर आया तब ही उसे ‘गुलआरा’ नाम की गायिका से प्रेम हो गया था। ‘गुलआरा’ अत्यंत सुंदर होने के साथ अच्छी गायिका भी थी। उसकी इस गायन विशेषता से शाहजहाँ उस पर मुग्ध हो गया और उसने उससे विवाह कर अपनी बेगम बनाया और उसे ‘गुलआरा’ की उपाधि प्रदान की थी। शाहजहाँ ने करारा गाँव में उतावली नदी के किनारे दो सुंदर महलों का निर्माण कराया और इस गाँव के नाम को परिवर्तित कर बेगम के नाम से ‘महल गुलआरा’ कर दिया।



धार

धार मध्य प्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है, यह इंदौर डिवीजन का एक हिस्सा है। धार चारों तरफ से झीलों और पहाड़ियों से घिरा हुआ है और यहां विशाल ऐतिहासिक महत्व वाली कई पुरानी इमारतें भी हैं जो धार पर्यटन को अलग और खास बनाती हैं। परमारों ने 9वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक मालवा के समीपवर्ती विशाल क्षेत्रफल पर 400 वर्षों तक राज्य किया। वाक्यपति मुंज तथा भोजदेव इस राजवंश के प्रसिद्ध शासक थे। मुंज एक महान सेनापति, एक प्रख्यात कवि तथा कला एवं साहित्य का महान संरक्षक था। उसके दरबार में धनंजय, हलायुध, धनिक, नवसाहसांक चरित के लेखक पद्मगुप्त, अमितगति आदि जैसे कवि थे। उसने धार तथा माण्डू में मुंज सागर खुदवाया तथा अनेक स्थानों पर सुंदर मन्दिर बनवाये।

सन् 1305 ई. में धार तथा माण्डू पर अधिकार करते ही सम्पूर्ण मालवा अलाउद्दीन खिलजी के हाथों में आ गया। धार मुहम्मद द्वितीय के शासन काल तक दिल्ली के सुल्तानों के अधीन रहा। उस समय दिलावर खान धुरी मालवा का सूबेदार था। 1401 ई. में उसने शासन की बागडोर संभाली तथा स्वतंत्र मालवा पर राज्य करता रहा। बाद में मालवा पर शेरशाह का अधिकार हो गया तथा उसे शुजात खां के प्रभार में रखा गया। अकबर दक्षिण पर आक्रमण का संचालन करते समय सात दिन तक धार में रहा। वह कई बार माण्डू भी गया। माण्डू शहशाह जहांगीर का भी मनपसंद सैरगाह था।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

रूपमती महल— 365 मीटर ऊँची खड़ी चट्टान पर स्थित इस महल का निर्माण बाजबहादुर ने रानी



रूपमती के लिए कराया था। इसी के साथ ही सैनिकों के लिए मांडू की सुरक्षा व्यवस्था पर नजर रखने के बेहतर स्थान के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता था। कहा जाता है कि रानी रूपमती सुबह ऊठकर माँ नर्मदा के दर्शन करने के बाद ही अन्न-जल ग्रहण

करती थी। अतः रूपमती के नर्मदा दर्शन को सुलभ बनाने हेतु बाजबहादुर ने ऊँचाई पर स्थित इस महल का निर्माण कराया था।

हिंडोला महल — हिंडोला महल, मांडू की शाही इमारतों में एक है। इसे होशंगाशाह के शासनकाल के



दौरान बनाया गया था। इस महल का उपयोग मुख्य रूप से दरबार के रूप में किया जाता था जहाँ बैठकर



70
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

राजा अपनी प्रजा की समस्याओं को सुनते थे। हिंडोला महल का शाब्दिक अर्थ होता है— झूलती जगह। यह महल पुराने समय के राज्यों और शासन की भव्यता का प्रतीक है। हिंडोला महल के निर्माताओं ने ही वारंगल किले को इसकी प्रतिकृति के रूप में बनाया था। मालवा शैली की वास्तुकला वाले इस महल में बाहरी दीवारें 77 डिग्री के कोण पर झुकी हुई हैं जिसके कारण इसे हिंडोला महल कहा जाता है। हिंडोला महल, भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण चिन्ह है और इसकी वास्तुकला भी काफी विख्यात है। इतिहास और स्थापत्य कला में उत्साही लोगों के लिए यह स्थल बेहद खास है।

जहाज महल— इसका निर्माण गयासुद्दीन खिलजी के समय में किया गया था। जहाज महल अपनी सुन्दर महाराबों, मण्डपों आदि के कारण बहुत प्रसिद्ध है। इसमें



हिन्दू अलंकरणों का प्रयोग बड़े ही खास प्रकार से किया गया है। जहाजनुमा आकार में इस महल को दो मानव निर्मित तालाबों 'कपूर तालाब' एवं 'मुंजे तालाब' के बीच बनाया गया था। तालाब के जल में यह महल जहाज की तरह दिखाई देता है। इस महल की वास्तुकला में दो मंजिला इमारत, कई खंभे, मेहराब और खपरैल की छत भी बनी हुई है। यहां से झील का मनोरम दृश्य और

आसपास बने हुए गार्डन का नजारा बेहद दिलकश होता है।

बाघ गुफाएं— बाघ गुफाएं, धार से लगभग 97 किमी. की दूरी पर स्थित हैं बाघ गुफाओं में अजंता की गुफाओं के समान पेंटिंग और मूर्तियां रखी हुई हैं जो अलौकिक दृश्य प्रदान करती हैं। बाघ गुफाएं, नौ स्मारकों का एक समूह है जिन्हें चट्टानों को काटकर बनाया गया है।



यह गुफा, भित्ति चित्रों के लिए खासी प्रसिद्ध है, धार की गुफा पूरे भारत में चट्टानों पर की गई खुदाई का सबसे बड़ा उदाहरण है जिसे वास्तुकला का अद्भुत नमूना माना जाता है। अजंता गुफाओं की तरह, बाघ गुफाओं में भी एक धारा के तट में कारीगरों द्वारा खुदाई की गई है। यहां गुप्त काल के दौरान बुद्ध जीवन शैली का अर्क भी नजर आता है। यह गुफाएं विहार या मठों की तरह हैं जिनमें छोटे चैम्बर्स के अलावा एक प्रार्थना हॉल भी है। बिना किसी भ्रम के, यह जगह यहां जाने वाले पर्यटकों के लिए खास है। इतिहास प्रेमी और पुरातत्व प्रेमियों के लिए बाघ गुफाएं किसी सौगात से कम नहीं हैं।



इंदौर

मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी और “मिनी मुंबई” के नाम से मशहूर इंदौर शहर का इतिहास बहुत पुराना है। क्षिप्रा की सहायक नदी सरस्वती और कान्ह धाराओं पर स्थित इंदौर शहर मध्य प्रदेश का सबसे मशहूर शहर है। बताया जाता है कि सन् 1715 में स्थानीय जमींदारों ने इंदौर को नर्मदा नदी घाटी मार्ग पर एक व्यापारिक केंद्र के रूप में बसाया था। पहले इन्दौर का नाम इन्दुर था, लेकिन 1741 में बने इंद्रेश्वर महादेव मंदिर के चलते नाम बदलकर इंदौर पड़ गया। 18वीं सदी में होलकर राजवंश के मल्हार राव होलकर ने इस शहर को विकसित किया था। इंदौर मध्य प्रदेश का प्रमुख वाणिज्यिक और औद्योगिक केंद्र है और इसके आसपास पांच हजार से ज्यादा छोटे बड़े उद्योग स्थापित हैं। आईआईटी और आईआईएम जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों की स्थापना के साथ यह शहर एक शिक्षण स्थान के रूप में भी उभरा है। इंदौर देश का सबसे स्वच्छ शहर है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

राजवाड़ा— राजवाड़ा एक शानदार और ऐतिहासिक महल है जिसका निर्माण होलकरों ने 200 साल से भी पहले किया था। यह एक सात मंजिला संरचना है और शाही भव्यता और वास्तु कौशल का एक उत्कृष्ट



उदाहरण है। कजुरी बाजार की भीड़-भाड़ वाली सड़कों के बीच बसे और शहर के मुख्य चौक के सामने, राजवाड़ा महल में एक सुंदर बगीचा है, जिसमें रानी अहिल्या बाई की मूर्ति, एक कृत्रिम झरना और कुछ खूबसूरत फव्वारे हैं। राजवाड़ा महल इंदौर में सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों और सबसे पुरानी संरचनाओं में से एक है।

अन्नपूर्णा मंदिर— देवी अन्नपूर्णा को समर्पित यह अन्नपूर्णा मंदिर तीर्थ यात्राओं की जगह होने के अलावा पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र भी है। मंदिर परिसर में



शिव, हनुमान और कालभैरव के मंदिर भी हैं। मंदिर का प्रवेश द्वार हाथियों की चार मूर्तियों से सुशोभित है और मंदिर का स्थापत्य वैभव पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

रालामंडल वन्यजीव अभ्यारण— मध्य प्रदेश का सबसे पुराना अभ्यारण, रालामंडल वन्यजीव अभ्यारण



72
गोपाक्षी

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



है। हिरण, बाघ और पक्षियों की एक किस्म के लिए यह अभ्यारण स्वर्ग से कम नहीं है। वर्ष 1981 में स्थापित, रालामंडल वन्यजीव अभ्यारण मध्य प्रदेश के सबसे पुराने वन्यजीव अभ्यारणों में से एक है, जो विभिन्न प्रजातियों के जानवरों और पक्षियों का घर है। मौसम के सुहावने होने के साथ ही अक्टूबर से फरवरी तक के महीने यहां आने का सबसे अच्छा समय है।

पातालपानी जलप्रपात— चारों ओर से घने जंगलों से घिरे, इस जलप्रपात 'पातालपानी' की गर्जना वाली धाराएँ मानसून के दौरान एक अलौकिक दृश्य प्रस्तुत



करती हैं। ऐसा माना जाता है कि इस अथाह कुंड का तल पाताल तक पहुंचता है और इसलिए इसे पातालपानी नाम मिला है। पातालपानी इंदौर में महु में स्थित अपने झरने के लिए प्रसिद्ध है। पानी 150 फीट की ऊंचाई से एक कुंड में गिरता है, जिसकी गहराई अभी भी अज्ञात है यह एक बहुत ही लोकप्रिय पिकनिक स्थल और ट्रेकिंग के लिए एक उत्कृष्ट स्थल भी है। झरने के चारों ओर हरियाली और झरने की तीव्र आवाज इसे पूरी तरह से आश्चर्यजनक अनुभव बनाती है।

लाल बाग पैलेस— लाल बाग पैलेस निस्संदेह इंदौर में एक खूबसूरत महल है। लाल महल का निर्माण वर्ष 1886 में शुरू हुआ और यह 1921 में पूरा हुआ। महल की वास्तुकला यूरोपीय शैली से प्रभावित है और इसमें विभिन्न अवधि से संबंधित शैलियों का मिश्रण है। इस



प्रभावशाली महल के द्वार इंग्लैंड से लाए गए थे और वे बकिंघम पैलेस के द्वार की प्रतिकृति हैं। इसके अंदरूनी हिस्से के प्रत्येक इंच में गुणवत्तापूर्ण कलाकारी है। अतीत और वर्तमान की कलाकृतियों, चित्रों और मूर्तियों को यहां देखा जा सकता है। इंदौर के पर्यटन स्थलों में लाल महल अपनी अलग ही पहचान रखता है।

केंद्रीय संग्रहालय— इंदौर संग्रहालय को केंद्रीय संग्रहालय के नाम से भी जाना जाता है। जो लोग इंदौर



की संस्कृति और परंपरा की जड़ों को जानना चाहते हैं कि कैसे यहां की समृद्ध सभ्यता का विकास हुआ आदि, उन्हें इस संग्रहालय का भ्रमण करना चाहिए। यह संग्रहालय, परमार मूर्तियों के बारे में जानने के लिए सबसे अच्छा स्थान है, परमार मूर्तियों की उत्पत्ति इंदौर में ही हुई थी। इंदौर संग्रहालय में समृद्ध और विविध हिंदू और जैन धर्म की कई मूर्तियों को रखा गया है।



इस संग्रहालय में प्रागैतिहासिक काल की कलाकृतियों, सिक्कों का संग्रह, हथियार, पौराणिक नक्काशियों आदि का काफी उत्तम संग्रह है। यह संग्रहालय, इंदौर का इतिहास जानने के लिए सबसे अच्छा स्थल है।

काँच मंदिर— यह एक भव्य मंदिर है जो सफेद पत्थर से बना हुआ है। इस मंदिर को एक मध्ययुगीन हवेली के रूप में बनाया गया है जिसमें एक चंदवा बालकनी और शिकारा भी है। मंदिर का अंदरूनी हिस्सा पूरी तरह कांच से निर्मित है। काँच मंदिर एक जैन मंदिर है जिसे 20वीं सदी के मशहूर कपास व्यापारी हुकुमचंद ने

बनवाया था। मंदिर में काँच का शानदार काम हुआ है। मंदिर के अंदर दीवारें, छत, खंभे, फर्श, दरवाजे आदि सब कुछ काँच से तैयार किये गये हैं। मंदिर की आंतरिक संरचना में कई रंगों के काँच को लगाया गया है जो इमारत को शानदार बनाते हैं। मंदिर में काँच से बने झूमर और अन्य सामग्रियों से मंदिर की सुंदरता में चार चांद लग जाते हैं। मंदिर में भगवान महावीर और अन्य तीर्थकरों की मूर्तियाँ लगी हुई हैं। इस मंदिर में जैन श्रद्धालु और पर्यटक, दर्शन के लिए आते हैं।



झाबुआ

पश्चिमी मध्य प्रदेश में स्थित झाबुआ जिला गुजरात के दाहोद, राजस्थान के बांसवाड़ा और मध्य प्रदेश के धार व रतलाम व अलीराजपुर जिलों से घिरा है। 16वीं शताब्दी में स्थापित यह जिला बहादुर सागर झील के किनारे बसा हुआ है। झाबुआ मूलतः आदिवासी जिला है। यहां मुख्यतः भील और भील जनजाति की उपजातियाँ भिलाला व पटेलिया आदिवासी जातियां रहती हैं। यह जिला आदिवासी हस्तशिल्प खासकर बांस से बनी वस्तुओं, गुडियों, आभूषणों और अन्य बहुत सी वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है। हलमा, मातानुवन, पड़जी, जातर, सलावणी, नवाई व भीड़ा यहाँ की श्रेष्ठ परंपराएं हैं। माही व अनास यहां से बहने वाली प्रमुख नदी हैं। भगोर, देवाझिरी, देवलफलिया, बाबा देव समोई, पीपलखुंटा और हाथीपावा पहाड़ी यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। झाबुआ की रियासत ब्रिटिश राज के दौरान भोपलवार एजेंसी के अधीन मध्य भारत में एक प्रमुख रियासत थी। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, झाबुआ के अंतिम शासक ने 15 जून 1948 को भारतीय संघ में प्रवेश किया और झाबुआ नव निर्मित मध्य भारत राज्य का हिस्सा बन गया, जिसे 1956 में मध्य प्रदेश में मिला दिया गया।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

देवझिरी— देवझिरी, झाबुआ से 8 किलोमीटर उत्तर—पूर्व में अहमदाबाद—इंदौर हाईवे नंबर-2 पर सुनार नदी



पर स्थित है। जैसा कि गांव के नाम से पता चलता है कि भगवान शिव का एक प्राचीन मंदिर (देव, एक धाम) और झिरी एक बारहमासी बसंत है। झरने को एक कुंड में बनाया गया है। यहाँ एक समाधि भी है

हाट— बहुत समय पहले देश व दुनिया में संचार का

माध्यम नहीं हुआ करता था जैसे आज टेलीफोन व मोबाइल है उस समय यहां पर समाज ने एक व्यवस्था के रूप में सप्ताह में एक बार हाट लगाना शुरू किया। बाजार में अपना जरूरी समान खरीदना एवं आसपास के सभी गांव के लोग उसमें शामिल होते थे यहाँ एक दूसरे के गांव की जानकारी, सगे संबंधियों की जानकारी एवं सूचना मिल जाती थी अर्थात् उस समय सूचना का एक बहुत बड़ा केन्द्र हाट हुआ करती थी यह प्रत्येक 7 दिन में लगती थी यह भी सुना है कि झाबुआ के पास में भगोर एक रियासत थी। वहां के राजा ने सभी लोगों से होली से पहले अपनी प्रजा से मिलने के लिए यह हाट शुरू करवायी थी इसलिए धीरे धीरे इसका नाम 'भगोरिया हाट' हो गया।

भावरा— जोबट तहसील का यह गांव जोबट से 32 किमी. दूर जोबट—दोहड़ मार्ग पर स्थित है। इस गांव को महान देशभक्त और स्वतंत्रता सेनानी चन्द्रशेखर आजाद की जन्मस्थली माना जाता है।



देवल शिव मंदिर— झाबुआ से 32 किलोमीटर व रानापुर से 12 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम दिशा में स्थित यह एक पुरातन शिव मंदिर है। मंदिर पर विष्णु भगवान, गणेश जी व कई देवी देवताओं की मूर्तियां उकेरी हुई हैं और गर्भगृह में पंचमुखी शिवलिंग विराजित हैं। यहां की जलधारा तीनों मौसम में अपना निर्मल जल देती रहती है। आसपास के लोग इसे देवलफलिया शिव मंदिर के नाम से जानते हैं।

मोहनकोट यह छोटा-सा गांव झाबुआ जिले के पेटलावद से दक्षिण दिशा में 11 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। मोहनकोट के नजदीक दर्शनीय स्थल नन्देरी माता के मन्दिर के नाम से जाना जाता है जो कि एक छोटी सी घाटी में खुले मैदान में स्थित है, यहाँ पर चोरी नहीं होती है। यहां पर माता जी हमेशा सोने तथा चांदी के आभूषणों से सुसज्जित रहती हैं।



खंडवा

नर्मदा और ताप्ती नदी घाटी के मध्य बसे खंडवा की सीमाएं बैतूल, होशंगाबाद, बुरहानपुर, खरगोन और देवास से मिलती हैं। भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक ओंकारेश्वर यहां का लोकप्रिय और पवित्र दर्शनीय स्थल है। इसके अलावा घंटाघर, दादा धुनीवाले दरबार, हरसुद, मूंदी, सिद्धनाथ मंदिर और वीरखाला रुक यहाँ के अन्य लोकप्रिय स्थल हैं। विशाल बुनियादी ढांचों के अलावा यह शहर अद्भुत गायक किशोरकुमार का जन्मस्थान भी है।

नर्मदा/सहायक नदियों के किनारों में हुए अन्वेषणों से पता चलता है कि जिले के पुरापाषाण काल में भी यहां पर मानव प्रजाति अस्तित्वमान थी। कहा जाता है कि खंडवा के उत्तर-पश्चिम में लगभग 70 किलोमीटर की दूरी पर नर्मदा नदी के तट पर स्थित द्वीप ओंकार मांधाता को यदु परिवार के एक वंशज हैहय राजा महिषमंत ने जीत लिया था, जिसने इसे माहिष्मती नाम दिया था।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

ओंकारेश्वर — खंडवा जिले में स्थित ओंकारेश्वर नर्मदा नदी के बीच मांधाता/शिवपुरी नामक द्वीप पर स्थित है जो भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से



एक है। यह द्वीप हिन्दू पवित्र चिन्ह ओम के आकार में बना हुआ है।

ओंकारेश्वर का निर्माण स्वतः ही नर्मदा नदी से हुआ है जो भारत की पवित्रतम नदियों में से एक है। शास्त्र मान्यता यह भी है कि कोई भी तीर्थयात्री देश के भले ही सारे तीर्थ कर ले किन्तु जब तक वह ओंकारेश्वर आकर किए गए तीर्थों का जल लाकर यहाँ नहीं चढ़ाता उसके सारे तीर्थ अधूरे माने जाते हैं। ओंकारेश्वर तीर्थ क्षेत्र में चौबीस अवतार, माता घाट, सीता वाटिका, धावड़ी कुंड, मार्कण्डेय शिला, मार्कण्डेय सन्यास आश्रम,

अन्नपूर्णाश्रम, गायत्री माता मंदिर, विज्ञान शाला, बड़े हनुमान, खेड़ापति हनुमान, माता आनंदमयी आश्रम, ओंकार मठ, ऋणमुक्तेश्वर महादेव, सिद्धनाथ गौरी सोमनाथ, आड़े हनुमान, माता वैष्णोदेवी मंदिर, चाँद सूरज, दरवाजे, वीरखला, विष्णु मंदिर, ब्रह्मेश्वर मंदिर, सेगाँव के गजानन महाराज का मंदिर, काशी विश्वनाथ, नरसिंह टेकरी, कुबेरेश्वर महादेव, चन्द्रमोलेश्वर महादेव के मंदिर भी दर्शनीय हैं।

ममलेश्वर— ममलेश्वर भी ज्योतिर्लिंग है। ममलेश्वर मंदिर अहिल्याबाई का बनवाया हुआ है। यात्री चाहे तो पहले ममलेश्वर का दर्शन करके तब नर्मदा पार होकर ओंकारेश्वर जायें, किन्तु मान्यता पहले ओंकारेश्वर का दर्शन करके लौटते समय ममलेश्वर— दर्शन की ही है।

भगवान संभवनाथ मंदिर — सिद्धवरकूट स्थित भगवान संभवनाथ का यह मंदिर बारा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि जैन धर्म के तीसरे तीर्थंकर का यह मंदिर भूमि को खोदकर निकाला गया था। मुख्य मंदिर के अलावा अन्य मंदिर जिनमें भगवान चन्द्रप्रभु, अजीतनाथ, पार्श्वनाथ और संभवनाथ की मूर्तियाँ भी दर्शनीय हैं।

खरगोन

भारत के उत्तर व दक्षिण प्रदेशों को जोड़ने वाले प्राकृतिक मार्ग पर बसा खरगोन सदैव ही महत्वपूर्ण रहा है। इतिहास के विभिन्न कालखण्डों में यह क्षेत्र — महेश्वर के हैहय, मालवा के परमार, असीरगढ़ के अहीर, माण्डू के मुस्लिम शासक, मुगल तथा पेशवा व अन्य मराठा सरदारों — होल्कर, शिंदे, पवार — के साम्राज्य का हिस्सा रहा है। यहाँ एक पुराना किला और कई मकबरे व महल हैं। नदी के तट को पत्थर के तटबंध से पक्का कर दिया गया है और घाटों का निर्माण करके सुंदर बनाया गया है। खरगोन स्थित नवग्रह मंदिर प्रसिद्ध है। नवम्बर 1956 को मध्य प्रदेश राज्य के गठन के साथ ही यह जिला “पश्चिमी निमाड़” के रूप में अस्तित्व में आ गया था। कालांतर में प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण दिनांक 25 मई 1998 को “पश्चिम निमाड़” को दो जिलों — खरगोन जिला एवं बड़वानी जिला में विभाजित किया गया। ऐसा अनुमान है कि आर्य एवं अनार्य सभ्यताओं की मिश्रित भूमि होने के कारण यह क्षेत्र ‘निमार्य’ नाम से जाना जाने लगा जो कि कालांतर में अपभ्रंश होकर “निमार” एवं फिर “निमाड़” में परिवर्तित हो गया। एक अन्य मतानुसार यह नाम नीम के वृक्षों के कारण पड़ा। इसे प्राचीनकाल में “खरगुशन की नगरी” भी कहा जाता था।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

श्रीमंत बाजीराव पेशवा समाधि रावेरखेड़ी — महान पेशवा बाजीराव की समाधि रावेरखेड़ी में स्थित है। उत्तर भारत के लिए एक अभियान के समय उनकी मृत्यु



यहीं नर्मदा किनारे हो गई थी। रावेरखेड़ी के पास बकावां में नर्मदा के पत्थरों को तराश कर शिव-लिंग बनाए जाते हैं।

महेश्वर — यह शहर हैहयवंशी राजा सहस्रार्जुन, जिसने रावण को पराजित किया था, की राजधानी रहा



है। ऋषि जमदग्नि को प्रताड़ित करने के कारण उनके पुत्र भगवान परशुराम ने सहस्रार्जुन का वध किया था। यह शहर कालांतर में महान देवी अहिल्याबाई होल्कर की राजधानी भी रहा है। नर्मदा नदी के किनारे बसा यह शहर अपने बहुत सुंदर भव्य घाटों तथा महेश्वरी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। घाट पर अत्यंत कलात्मक मंदिर हैं, जिनमें से राजराजेश्वर मंदिर प्रमुख हैं। आदिगुरु शंकराचार्य तथा पंडित मण्डन मिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ यहीं हुआ था।



अहिल्या किला — मध्य प्रदेश के महेश्वर में 18वीं सदी में निर्मित होल्कर किला एक आश्चर्यजनक पर्यटक



आकर्षण है। नर्मदा नदी के सुन्दर तट पर स्थित यह किला अहिल्या किला के रूप में भी प्रसिद्ध है। अहिल्या किला मालवा की तत्कालीन रानी अहिल्याबाई होल्कर का निवास स्थान था। इस प्राचीन इमारत में भगवान शिव के विभिन्न अवतारों को समर्पित कई मंदिर हैं। यह किला रानी अहिल्याबाई होल्कर के शक्तिशाली शासक होने और अपने साम्राज्य की सुरक्षा के प्रति किए गए उपायों का प्रत्यक्ष गवाह है।

अपनी शानदार मराठाकालीन स्थापत्यकला के कारण पर्यटक आज भी इस किले को प्राथमिकता देते हैं।

नवग्रह मंदिर — संपूर्ण भारतवर्ष का एकमात्र सूर्यप्रधान नवग्रह मंदिर खरगोन में स्थित है। पश्चिम



निमाड़ मध्य प्रदेश के श्री नवग्रह मंदिर का संपूर्ण भारतवर्ष में अलग ऐतिहासिक महत्व है। यहां माता बगलामुखी देवी स्थापित हैं। यह स्थान पीतांबरा ग्रह शांति पीठ कहलाता है क्योंकि यहां नवग्रहों की शांति के लिए माता पीतांबरा की पूजा अर्चना एवं आराधना की जाती है। नवग्रह देवता को नगर के देवता व स्वामी के रूप में पूजा जाता है इसीलिए खरगोन को “नवग्रह की नगरी” कहते हैं।



बालाघाट

बालाघाट वैनगंगा नदी के किनारे सतपुड़ा पर्वतमाला के छोर पर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ की त्रिकोणीय सीमा पर बसा है। यह प्राकृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध जिला है। इस क्षेत्र का लगभग 50 प्रतिशत भाग जंगल है। यहाँ के लोग अधिकतर हिन्दी बोलते हैं, परन्तु यहाँ पोवारी, मरारी, लोधी आदि बोलियाँ भी प्रचलित हैं। यहाँ बैगा जनजाति पाई जाती है।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल



कान्हा राष्ट्रीय उद्यान — यह भारत का एक प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान है। मध्य प्रदेश अपने राष्ट्रीय पार्कों और जंगलों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता और वास्तुकला के लिए विख्यात कान्हा राष्ट्रीय उद्यान पर्यटकों के लिए हमेशा ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। कान्हा शब्द कनहार से बना है जिसका स्थानीय भाषा में अर्थ चिकनी मिट्टी है। यहाँ पाई जाने वाली मिट्टी के नाम पर ही इस स्थान का नाम कान्हा पड़ा। कान्हा जीव जन्तुओं के संरक्षण के लिए विख्यात है। यह अलग-अलग प्रजातियों के पशुओं का घर है। जीव जन्तुओं का यह पार्क 940 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। सन् 1968 में प्रोजेक्ट टाइगर के तहत

इस उद्यान का 917.53 वर्ग कि.मी. का क्षेत्र कान्हा व्याघ्र संरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया गया। वर्तमान में कान्हा क्षेत्र को दो अभ्यारण्यों में विभाजित किया गया है, हॉलन और बंजारा/कान्हा नेशनल पार्क 1 जून 1955 को बनाया गया था और 1973 में कान्हा टाइगर रिजर्व बनाया गया था। पार्क में रॉयल बंगाल टाइगर, भारतीय तेंदुओं, भालू, बारहसिंगा और भारतीय जंगली कुत्ते की महत्वपूर्ण आबादी है। रुडयार्ड किपलिंग के प्रसिद्ध उपन्यास “द जंगल बुक” में दर्शाया गया जंगल इस रिजर्व सहित जंगलों पर आधारित है। यह आधिकारिक रूप से शुभंकर, ‘भूरसिंह द बारासिंघा’ का परिचय कराने वाला भारत का पहला बाघ अभ्यारण्य है।



गांगुल्पारा बाँध एवं जल प्राप्त — गांगुल्पारा बांध और झरना बालाघाट से 14 किलोमीटर की दूरी पर है। ये प्राकृतिक सौंदर्य और भव्यता का एक अद्भुत मिश्रण है, जो दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करता



है। प्रकृति प्रेमी इस जल निकाय की सराहना करते हैं, जो घीसरी नाला के पानी के लिए भंडारण टैंक के रूप में भी काम करता है। गांगुल्पारा बांध बहुत सारी पहाड़ियों से घिरा हुआ है, बरसात में सुंदर तथा प्राकृतिक छोटे-छोटे झरने हर जगह बहते हैं जिससे यहाँ का दृश्य अत्यंत मनोहारी लगता है।

राजीव सागर बांध — राजीव सागर बांध बालाघाट में स्थित एक दर्शनीय स्थल है। यह बालाघाट शहर में बरसात के समय में घूमने की अच्छी



जगह है। बालाघाट से करीब 90 किलोमीटर दूर बावनथडी नदी पर बना होने के कारण राजीव सागर बांध मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित है।

धुटी डैम — धुटी बांध बालाघाट जिले की एक दर्शनीय जगह है। धुटी बांध पर बरसात के समय बहुत ही मनोरम दृश्य देखने के लिए मिलता है। जब धुटी बांध ओवरफ्लो होता है, तो बांध का पानी बांध के ऊपर से गिरता है, जो झरने की तरह लगता है। यह बांध अंग्रेजों के समय बनाया गया था। धुटी बांध बालाघाट से करीब 50 किलोमीटर दूर है। बांध के आसपास का नजारा भी बहुत शानदार है।

छिंदवाड़ा

छिंदवाड़ा जिला 1 नवंबर, 1956 को बनाया गया था। यह 'पहाड़ों की सतपुड़ा रेंज' के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है। यह जिला दक्षिण में नागपुर जिले (महाराष्ट्र राज्य में) के मैदानों, उत्तर में होशंगाबाद और नरसिंहपुर जिले, पश्चिम में बैतूल जिला और पूर्व में सिवनी जिले की सीमाओं से लगा हुआ है। छिंदवाड़ा जिले में अधिकांश जनजातीय आबादी है। आदिवासी समुदायों में गोंड, प्रधान, भारिया, कोरकू शामिल हैं। जिले में हिंदी, मराठी, गोंडी, उर्दू, कोरकू, मुसाई, पारवारी आदि भाषाओं/बोलियों का इस्तेमाल होता है। जिला पोला, भुजलिया, मेघनाथ, अखाड़ी, हरज्योति आदि सांस्कृतिक कार्यों/त्योहारों के लिए प्रसिद्ध हैं। पांडुरना का 'गोतम मेला' अद्वितीय और विश्व प्रसिद्ध मेला है।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल



पातालकोट— पातालकोट घाटी उत्तर-पश्चिम दिशा में छिंदवाड़ा से 78 किलोमीटर और उत्तर-पूर्व दिशा में तामिया से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। घाटी में 'दुधी' नदी बहती है। घाटी के अंदर स्थित गांवों तक पहुंचने के कई रास्ते हैं। चट्टानें ज्यादातर आर्कियन युग की हैं जो लगभग 2500 मिलियन वर्ष पुरानी हैं और इसमें ग्रेनाइट गनी, हरी स्किस्ट, मूल चट्टान, गोंडवाना तलछट के साथ क्वार्ट्ज समेकित बलुआ पत्थर, शैलियां और कार्बोनेशियास शैलियां शामिल हैं। सन् 2009 में 'सेंटर फॉर वानरी रिसर्च' और एचआरडी पोमा, जिला प्रशासन और जिला ओलंपिक एसोसिएशन के संयुक्त प्रयास के साथ शुरू हुआ जिसमें 3000 जनजातीय युवाओं को परामर्श, पैराग्लाइडिंग, रॉक क्लाइंबिंग, ट्रेकिंग जैसी साहसिक गतिविधियों में प्रशिक्षित किया गया था।



तामिया— मध्यप्रदेश के छिपे खजाने में से एक, तामिया एक सुरम्य वन गंतव्य है जो घने जंगल और पहाड़ों के सुंदर और सांस लेने वाले दृश्य पेश करता है। अनछुआ और अनदेखा, तामिया आज की तनाव भरी दुनिया से परे पूर्ण शांति का अनुभव करने के लिए एक आदर्श स्थान है। पहाड़ी की चोटी पर कुछ घर, खड़ी पहाड़ियां, विशाल हरियाली और गहरी घाटियों के मनोरम दृश्य मन को असीम सुख और शांति का अनुभव कराते हैं।



83

गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

डिंडोरी

डिंडोरी जिले की स्थापना सन् 1998 में मण्डला जिले को विभाजित करके की गई थी। डिंडोरी जिला जबलपुर संभाग के अंतर्गत आता है। जीवनदायिनी पवित्र माँ नर्मदा नदी भी डिंडोरी के बीच से बहती हैं। डिंडोरी जिले में घूमने योग्य कई पर्यटन स्थल हैं। डिंडोरी जिले की कुल जनसंख्या का 64% अनुसूचित जनजाति के लोग हैं। यहां की मुख्य जनजाति बैगा और गोंड है। बैगा जनजाति को राष्ट्रीय मानव का दर्जा प्राप्त है।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान — घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान डिंडोरी जिले में स्थित महत्वपूर्ण



पर्यटन स्थल है। घुघवा राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान डिंडोरी से 70 किलोमीटर दूर स्थित है। घुघवा में 6.5 करोड़ वर्ष पुराने पेड़-पौधों के जीवाश्म पाए गए हैं। राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान घुघवा मध्य प्रदेश का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान है जो 0.27 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। घुघवा उद्यान में पौधों के तनों, फल, फूल, बीज के अतिरिक्त डायनासौर के अंडे और कुछ समुद्री जीवों के जीवाश्म भी मिले हैं। इन जीवाश्मों में यूकेलिप्टस, नारियल और ताड़ के जीवाश्म प्रमुख हैं। घुघवा में जीवाश्मों की खोज सन् 1970 में डॉक्टर धर्मेन्द्र प्रसाद ने की थी। घुघवा में भी 18 पादप फूलों के 31 परिवारों

के पौधों के जीवाश्म खोजे जा चुके हैं। घुघवा को 05 मई 1983 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया।

रामगढ़— रामगढ़ डिंडोरी जिले का बहुत ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है। डिंडोरी से 23 किलोमीटर दूर अमरपुर विकास खंड के पास रानी अवन्ती बाई की कर्मभूमि और राजधानी रामगढ़ है। यहाँ अब रानी अवन्ती बाई के महल की दीवारों के कुछ अवशेष ही शेष बचे हुए हैं। अब रामगढ़ में इस महल के पास रानी अवन्ती बाई की मूर्ति स्थापित कर एक बड़ा पार्क बना दिया गया है। अंग्रेज रानी अवन्ती बाई से उनका राज्य हड़पना चाहते थे। 1857 की क्रांति में रानी अवन्ती बाई अंग्रेजों से युद्ध कर वीरगति को प्राप्त हुई। रामगढ़ में ही रानी अवन्ती बाई की समाधि है। रामगढ़ डिंडोरी जिले के अमरपुर ब्लाक के अंतर्गत आता है।



कपिलधारा जलप्रपात— कपिलधारा जलप्रपात डिंडोरी और अमरकंटक की सीमा पर स्थित है। कपिलधारा का एक छोर अमरकंटक की सीमा में आता है। और दूसरा छोर डिंडोरी जिले की सीमा के अंतर्गत आता है। कपिलधारा जलप्रपात माँ नर्मदा का पहला



जलप्रपात है। कपिल धारा जलप्रपात की ऊंचाई लगभग 100 फीट है। कपिलधारा जलप्रपात के पास ही कपिल मुनि का आश्रम है। जनश्रुति के अनुसार इस स्थान पर कपिल मुनि ने तपस्या की थी और उन्हीं के नाम पर इस स्थान का नाम कपिलधारा पड़ा।

हल्दी करेली — हल्दी करेली को डिंडोरी जिले का



मिनी गोवा कहा जाता है। हल्दी करेली डिंडोरी जिले के समनापुर विकास खंड के अंतर्गत आता है। हल्दी

करेली में बुडनेर नदी सुन्दर झरने बनाती है। झरने से गिरने के बाद नीचे रेत का बहुत ही बड़ा मैदान दिखाई देता है। इस स्थान की चट्टानें पीली और सिल्वर दिखाई देती हैं, जब इन चट्टानों पर सूरज की किरणें पड़ती हैं तब यहाँ का नजारा देखने लायक होता है। यह स्थान घने जंगलों से घिरा हुआ है। दूर दूर से लोग पिकनिक मनाने के लिए यहां आते हैं।

कुकरामठ (ऋण मुक्तेश्वर)— मंदिर कुकरामठ डिंडोरी जिले का महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। डिंडोरी से 15 किलोमीटर दूर कल्चुरी कालीन भगवान शिव का मंदिर है। कुकरामठ मंदिर का निर्माण 100 ईसवी के पूर्व माना जाता है। कहा जाता है कि इस मंदिर में पूजा पाठ करने से देव ऋण, पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है। इसी कारण इस मंदिर को ऋणमुक्तेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर के निर्माण से सम्बंधित कई मत प्रचलित हैं पहले मत के अनुसार तात्कालीन शंकराचार्य ने गुरुऋण से मुक्त होने के लिये कल्चुरी नरेश कोकल्यदेव के सहयोग से इस मंदिर का निर्माण करवाया था। एक अन्य मत के अनुसार इस स्थान पर एक कुत्ते ने अपने मालिक को ऋण से मुक्त करवाया और अपने प्राण त्याग दिये। कुत्ते के मालिक ने कुत्ते की याद में यहाँ कुत्ते की समाधि और मूर्ति का निर्माण करवाया। चूँकि कुत्ते को कुकर भी कहा जाता है इसलिये इस मंदिर को कुकरामठ भी कहा जाता है। माना जाता है कि इस स्थान पर 6 मंदिरों का समूह था परन्तु अब सिर्फ एक मंदिर ही बचा है। कुकरामठ मंदिर की देखभाल अब पुरातत्व विभाग कर रहा है।



जबलपुर

विंध्य पर्वत श्रृंखला में स्थित यह नगर पवित्र नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग-7 जबलपुर से गुजरता है जो वाराणसी को कन्याकुमारी से जोड़ता है।

पुराणों एवं किंवदंतियों के अनुसार जबलपुर का संबंध जाबालि ऋषि से है। जिनके बारे में कहा जाता है कि वे यहीं निवास करते थे। जबलपुर में एक पहाड़ी पर मदन महल है, जो लगभग 1100 ई. में राजा मदन सिंह द्वारा बनवाया गया एक पुराना गोंड महल है। इसके ठीक पश्चिम में एक गढ़ है, जो 14वीं शताब्दी के चार स्वतंत्र गोंड राज्यों का प्रमुख नगर था। भेड़ाघाट, ग्वारीघाट और जबलपुर से प्राप्त जीवाश्मों से संकेत मिलता है कि यह प्रागैतिहासिक काल के पुरापाषाण युग के मनुष्य का निवास स्थान था। मदन महल नगर में स्थित कई ताल और गोंड राजाओं के द्वारा बनवाए गये कई मंदिर इस स्थान की प्राचीन महिमा की जानकारी देते हैं। इस क्षेत्र में कई बौद्ध, हिन्दु और जैन भग्नावशेष भी मिलते हैं। ऐतिहासिक रूप से कल्युरी और गोंड राजवंशों का केन्द्र रहे, इस शहर ने एक सांस्कृतिक संस्कृति विकसित की जो मुगल और मराठा शासन से प्रभावित थी।

ऐतिहासिक (पुरातात्विक) सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

चौंसठ योगिनी मंदिर— चौंसठ योगिनी मंदिर जबलपुर का एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह मंदिर जबलपुर की ऐतिहासिक संपन्नता में एक और अध्याय जोड़ता है। प्रसिद्ध संगमरमर चट्टान के पास स्थित इस



मंदिर में देवी दुर्गा की 64 अनुषांगिकों की प्रतिमाएं हैं। इस मंदिर की विशेषता इसके बीच में स्थापित भगवान शिव की प्रतिमा है, जो कि देवियों की प्रतिमा से घिरी हुई है। इस मंदिर का निर्माण सन 1000 के आसपास कल्युरी वंश के शासकों ने करवाया था।

धुआंधार जलप्रपात — जबलपुर शहर से 25 किलोमीटर दूर स्थित यह जलप्रपात अपनी मनमोहक और नैसर्गिक सुंदरता के कारण जबलपुर ही नहीं, बल्कि पूरे मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। 10 मीटर की ऊँचाई से गिरने वाले इस प्रपात की छटा अनुपम है। इसकी उत्पत्ति नर्मदा नदी से होती है। यह सुरम्य प्रपात प्रसिद्ध संगमरमर की चट्टानों से निकलता है। यह प्रपात जब विशाल बड़ी धारा के साथ गिरता है तो पानी के गिरने की आवाज काफी दूर से सुनाई देती है। इस प्रपात के गिरने से उस स्थान पर कुहासा या धुआं सा बन जाता है। इसलिए इसे धुआंधार



86
गोवाद्रि

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



जलप्रपात कहा जाता है। सुंदरता के लिहाज से धुआंधार जलप्रपात एक असाधारण स्थल है, जिसके लिए पूरे साल बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आते हैं। जलप्रपात के सामने काफी बड़ा पथरीला खुला स्थान है।

मदन महल किला :- शहर के निकट एक पहाड़ी पर स्थित मदन महल किला राजा मदन सिंह द्वारा बनवाया



गया था। किले का संबंध राजा की माता रानी दुर्गावती से भी है। यह किला जो वर्तमान में खंडहर है, रानी दुर्गावती की आभा और उनके पूर्ण सुसज्जित प्रशासन की दास्तान सुनाता है। शाही परिवार के सुख कक्ष, वॉर रूम और छोटे जलाशय घूमने लायक हैं। मदन महल किला निश्चित रूप से भारत के प्राचीन स्मारकों में से एक है। यह किला उन शासकों के जीवन की गवाही के रूप में खड़ा है, जिन्होंने 11वीं शताब्दी में जबलपुर पर शासन किया था।

मार्बल रॉक्स (भेड़ाघाट) — जबलपुर के भेड़ाघाट स्थित संगमरमरी चट्टान अन्य किसी भी पर्यटन स्थलों



में सर्वाधिक भ्रमण किये जाने वाली जगह है। यह कहना गलत नहीं होगा कि जबलपुर और संगमरमरी चट्टान एक दूसरे के पर्यायवाची हो गये हैं। संगमरमरी चट्टान नर्मदा नदी के दोनों ओर करीब 100 फीट ऊँची है। भेड़ाघाट का वातावरण भी बेहद शांत रहता है। जब सूरज की रोशनी सफेद और मटमैले रंग की संगमरमरी चट्टानों पर पड़ती है, तो नदी में बनने वाला इसका प्रतिबिंब अद्भुत होता है। भेड़ाघाट और यहाँ की संगमरमरी चट्टानों की खूबसूरती उस समय चरम पर होती है जब चांद की रोशनी चट्टान और नदी पर एक साथ पड़ती है। जबलपुर की संगमरमरी की चट्टानें एक ऐसा पर्यटन स्थल है कि यदि ऐसे माहौल में नौका विहार किया जाय तो इस अनुभव को जीवन भर भुलाया नहीं जा सकता है।

पिसनहारी मढ़ियाजी मन्दिर—

जबलपुर जिले के ग्राम में पहाड़ी पर स्थित यह मन्दिर एक भक्त की अपने भगवान पर आस्था और इच्छा शक्ति



का प्रतीक है। इस मंदिर की स्थापना से एक रोचक तथ्य जुड़ा हुआ है। एक निर्धन महिला की इच्छा एक मन्दिर बनाने की हुई परन्तु महिला के पास धन नहीं था। अपनी इच्छा को पूरा करने के लिये महिला ने गेंहू पीसा और गेंहू पीसने से जो धन आया उसका संचय किया। महिला की इच्छा शक्ति और मेहनत रंग लाई और एक भव्य जिनालय का निर्माण वर्ष 1442 में किया गया। महिला को श्रमदेवी भी कहा जाता है। आज भी मन्दिर की शिखर पर उन चक्कियों के पाट रखे हुये हैं।



कटनी

कटनी जिला मध्यप्रदेश के उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। इस जिले में तीन बड़ी नदियां मुधवारा कटनी, छोटी महानदी और उमदर हैं। कटनी का नाम भी कटनी नदी के नाम पर रखा गया है। यह जिला उद्योग की नजर से मध्य प्रदेश का महत्वपूर्ण जिला है। जिसमें दाल मिल, चावल मिल, टायर रिमोलिडिंग, फर्टिलाइजर वर्क और सीमेंट फैक्ट्री बड़े पैमाने पर कार्यरत हैं। कटनी का संगमरमर न केवल देश बल्कि विदेशों में भी अति लोकप्रिय है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

विजयराघवगढ़ किला— यह किला कटनी शहर की विजयराघवगढ़ तहसील में स्थित एक प्राचीन किला है। इस आयताकार किले का निर्माण सन् 1826 में राजा बिसन सिंह के द्वारा करवाया गया था। यह महल



बलुआ पत्थर से बना हुआ है। यहाँ पर रंगमहल, ब्रम्हा चबूतरा, समाधि स्थल इत्यादि हैं उनकी बनावट बहुत ही आकर्षक है जो पर्यटकों को बहुत पसंद आती है। इस किले के एक किनारे पर एक दरबार उपलब्ध है, दूसरी तरफ एक खूबसूरत इमारत है, जिसे रंगमहल के नाम से जाना जाता है।

रूपनाथ मंदिर— रूपनाथ मंदिर एक लोकप्रसिद्ध तीर्थस्थल है। यहाँ पर भगवान शिव की पांच लिंग (पांच लिंगम) प्रतिमा स्थापित हैं, स्थानीय मान्यताओं के अनुसार जिसके दर्शन का बहुत महत्व है। यह कैमोर पर्वत के कोने में स्थित है, जहाँ राम कुंड, सीता कुंड,



और लक्ष्मण कुंड नामक तीन कुंड हैं, यहाँ पर पहाड़ियों का दृश्य अति मनोरम है जो बरसात के मौसम में छोटे-छोटे झरनों के निर्माण से और भी ज्यादा मनोरम हो जाता है।

कंकाली देवी मंदिर या तिगवा— तिगवा कटनी शहर की एक ऐतिहासिक जगह है। यहाँ बहुत सारी पत्थर की नक्काशी देखने के लिए मिलती है। यहाँ पर



कंकाली देवी का मंदिर भी है। हालाँकि, कंकाली देवी का मंदिर छोटा सा है तथापि यह धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। लगभग 5वीं शताब्दी में बना यह गुप्तकालीन मंदिर है। इसके सामने मंडप बना हुआ है और इसमें अलग-अलग कलाकृतियाँ देखने के लिए मिलती हैं। यहाँ पर विष्णु भगवान जी की प्रतिमाएँ दीवार पर उकेरी गई हैं। तिगवा कंकाली देवी मंदिर के दर्शन से जहाँ मन को आध्यात्मिक शांति का एहसास होता है वहीं दूसरी ओर इसके पत्थरों की नक्काशी गुप्तकालीन समय से रूबरू कराते हुए हमारे ऐतिहासिक ज्ञान को समृद्ध करती है।

घोघरा नर्सरी जलप्रपात — कटनी शहर में स्थित घोघरा नर्सरी जलप्रपात एक बेहद खूबसूरत जलप्रपात



है। यह झरना कटनी नदी पर बना हुआ एक अति

लोकप्रिय पिकनिक स्थल है। यहाँ झरने के पास ही एक शिव भगवान मंदिर भी है। यह झरना बरसात के समय देखने के लिए मिलता है।

जागृति उद्यान — जागृति उद्यान कटनी के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। प्रकृति के बीच इस उद्यान में पर्यटक आना खूब पसंद करते हैं। इस स्थल को



शहर का एक आरामदायक आशियाना भी कहा जा सकता है। रोज की भागदौड़ और प्रदूषण से दूर, प्रकृति की गोद में एक आत्मीय अनुभव के लिए यह स्थान एकदम सही पसंद है।



मंडला

सतपुड़ा पहाड़ियों में स्थित मध्य प्रदेश का आदिवासी जिला मण्डला का एक गौरवशाली इतिहास है, राज्य के पूर्व मध्य भाग में स्थित है। नर्मदा की सहायक बंजार नदी की घाटी में जिले का सबसे अधिक उपजाऊ भाग पड़ता है, जिसे 'हवेली' कहते हैं। हवेली के दक्षिण में बंजार की घाटी जंगलों से ढकी हुई है। यहाँ की सर्वप्रमुख इमारती पेड़ साल हैं। इसके अतिरिक्त बाँस, टीक और हरड़ अन्य उल्लेखनीय वृक्ष हैं। नदियों की घाटियों में धान, गेहूँ और तिलहन की उपज होती है। लाख उत्पादन, लकड़ी चीरना, पान उगाना, पशुपालन, चटाई और रस्सियों का निर्माण यहाँ के लोगों के उद्यम हैं। यहाँ के 60 प्रतिशत निवासी गोंड़ जनजाति के हैं। यहाँ मैंगनीज और धातु के निक्षेप हैं।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान — कान्हा राष्ट्रीय उद्यान न केवल मंडला का अपितु विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। विश्व में बाघों के संरक्षण के लिए जाना जाने



वाला कान्हा राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान है। इसका कुल क्षेत्रफल 1949 वर्ग किलोमीटर है जो मंडला और बालाघाट जिलों में फैला है। कान्हा को सन् 1933 में अभ्यारण्य और सन् 1955 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला और सन् 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व घोषित किया गया। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान बाघ के संरक्षण के अतिरिक्त लुप्तप्राय बारहसिंगा जिसे दलदली हिरण भी कहा जाता है के संरक्षण के लिए भी जाना जाता है। कान्हा पार्क में घूमने के लिए कान्हा संग्रहालय, बम्हनी दादर पॉइंट, श्रवण

ताल, लेपसी की कब्र और घास के बड़े-बड़े मैदान प्रमुख हैं। कान्हा में प्रवेश हेतु तीन गेट हैं, जिनके नाम यथा 1— कान्हा किसली गेट, 2— मुक्की गेट, 3—सरही गेट हैं।

सहस्रधारा— मंडला शहर के दर्शनीय पर्यटन स्थलों में सहस्र धारा प्रमुख है। सहस्र धारा मंडला शहर से 3 किलोमीटर दूर है। यहाँ पवित्र नर्मदा नदी की धारा कई धाराओं में विभक्त होकर छोटे-बड़े जलप्रपात बनाती है। यहाँ नर्मदा की धारा काले ग्रेनाइट और बेसाल्ट पत्थरों की चट्टानों के बीच से कल-कल बहती हुई अति मनोहारी लगती है। सहस्रधारा की चट्टानें लावा द्वारा निर्मित प्रतीत होती हैं। बरगी बाँध के भराव के कारण यहाँ धाराओं और जलप्रपातों की संख्या कम हो गई है। यह स्थान बरगी बाँध के भराव का आखिरी पॉइंट है। इस स्थान का पुराणों में भी उल्लेख मिलता है।



90
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



पौराणिक मान्यतानुसार इस स्थान पर हैहयवंशी राजा कार्तवीर अर्जुन, जिन्हें सहस्रबाहु के नाम से भी जाना जाता था, ने अपनी हजारों भुजाओं से माँ नर्मदा को रोकने का प्रयास किया था परन्तु माँ नर्मदा हजारों धाराओं में विभक्त हो गई और सहस्रबाहु उन्हें नहीं रोक सका। सहस्रधारा में दो अति प्राचीन शिव मंदिर हैं। शासन द्वारा इस स्थान को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। यहाँ के सुन्दर दृश्य को देखने के लिए वाच टावर बनाए गए हैं।

गरम पानी कुंड — गरम पानी कुंड मंडला का प्रमुख दर्शनीय पर्यटन स्थल और पिकनिक स्पॉट हैं। मंडला शहर से 18 किलोमीटर दूर ग्राम — बबेहा के पास मंडला — जबलपुर मार्ग के निकट स्थित यह स्थान



पवित्र नर्मदा नदी के किनारे पर स्थित है। माना जाता है कि इस स्थान पर परशुराम जी ने तपस्या की थी। इस कुंड में साल भर गर्म पानी रहता है। बरगी डेम के जलभराव के कारण यह कुंड पानी में डूब गया था। शासन द्वारा इस स्थान का पुनः जीर्णोद्धार कर कुंड को पुनः जीवित किया गया। माना जाता है कि इस कुंड में स्नान करने से सभी प्रकार के चर्म रोग ठीक हो जाते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इस कुंड के नीचे सल्फर की चट्टानें हो सकती हैं जिस कारण पानी हमेशा गर्म रहता है।

मंडला का किला— यह मंडला में घूमने के लिए



महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। हृदयशाह के पौत्र राजा नरेन्द्र शाह ने मंडला में पवित्र नर्मदा नदी और बंजर नदी के संगम/स्थल के पास एक किले का निर्माण करवाया। किले का निर्माण सन् 1691 से सन् 1731 के बीच माना जाता है। किले में 11 बुर्ज थे इनमें से अधिकांश बुर्ज या तो नष्ट हो गए या नष्ट होने के कगार पर हैं। महल अब जर्जर हो चला है इसके एक बुर्ज की मरम्मत म.प्र. पुरातत्व विभाग द्वारा करवाई गई है। महल के बीचों-बीच गोंड राजाओं द्वारा निर्मित राज-राजेश्वरी मंदिर है। मंदिर में 18 भुजाओं वाली माता दुर्गा की प्रतिमा है, आज भी यहाँ प्रतिदिन लोग पूजा अर्चना करते हैं।

अजगर दादर— मंडला जिले के अंजनिया के नजदीक ककैया गांव के नजदीक लगभग 2 एकड़ में बड़ी संख्या में छोटे-बड़े अजगर पाए जाते हैं इस स्थान को अजगर दादर कहा जाने लगा। अजगर कोल्ड ब्लडेड होते हैं, इस स्थान पर ठंडी के मौसम में बड़ी संख्या में अजगर धूप सेंकते हुए मिल जाते हैं, चूँकि अजगर जहरीला नहीं होता इसीलिए गाँव वाले भी इन्हें परेशान नहीं करते। यहाँ अजगर और इंसानों के बीच अजीब रिश्ता है, यहाँ ग्रामीण अजगरों की सुरक्षा को लेकर बेहद संवेदनशील हैं। माना जाता है कि सन् 1926 की बाढ़ में यह स्थान पोला हो गया था जिनमें तरह-तरह के जीवजंतु रहने लगे, इन्हीं पोले स्थानों को अजगरों ने भी अपना निवास बना लिया।



नरसिंहपुर

नरसिंहपुर जिला मध्य प्रदेश राज्य के लगभग मध्य भाग में स्थित है। नरसिंहपुर जिले की स्थिति इस समीकरण के अनुसार विशिष्ट मानी जाती हैं कि यह देश व राज्य दोनों के मध्य भाग में स्थित है। उत्तर में विंध्याचल और दक्षिण में सतपुड़ा की पहाड़ियों से घिरे नरसिंहपुर पर प्रकृति खूब मेहरबान रही है। इसकी उत्तरी सीमा पर विंध्याचल और दक्षिणी सीमा पर पूरी लंबाई में सतपुड़ा श्रृंखला फैली हुई है। उत्तरी भाग में नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। पवित्र नदी जिले की खूबसूरती में वृद्धि करती है। प्राचीन काल में यहां अनेक वंशों ने शासन किया था। महान वीरांगना रानी दुर्गावती के काल में यह स्थान काफी चर्चित रहा था। 18वीं शताब्दी में जाट सरदारों ने यहां भव्य मंदिर का निर्माण करवाया और भगवान नरसिंह की मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई। तब से यहां जिले का मुख्यालय बना और गड़रिया खेड़ा नाम का यह ग्राम नरसिंहपुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

चौगान या चौरागढ़ का किला— चौगान या चौरागढ़ का किला एक ऐतिहासिक किला है। यह किला घने जंगलों के बीच में स्थित है। यह किला खंडहर अवस्था



में हैं। चौरागढ़ का किला सतपुड़ा की पहाड़ियों पर बना हुआ है। यह किला पत्थर और चूने पत्थर से निर्मित है। किले के पास में एक तालाब बना हुआ है, जिसे रेवा कुंड कहा जाता है। यह कुंड काफी खूबसूरत है। यहां पर आपको एक मंदिर भी देखने के लिए मिलता है जो प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर नरसिंह भगवान को समर्पित है। चौरागढ़ किले का निर्माण गोंड शासक संग्राम शाह ने 5वीं शताब्दी में कराया था। यह किला गाडरवारा

रेलवे स्टेशन से लगभग 49 किलोमीटर दूर है। किंवदंती है कि इस किले में स्थित कुंड में पारस मणि है, जो लोहे को स्वर्ण में बदल देता है।

झोतेश्वर मंदिर— यह मंदिर नरसिंहपुर में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। जो गोटेगांव के पास स्थित है। यह मंदिर गोटेगांव से करीब 10 किलोमीटर दूर होगा। यहां



पर भव्य मंदिर देखने के लिए मिलता है, जो बहुत ही खूबसूरत है। मंदिर में माता राजराजेश्वरी की प्रतिमा विराजमान है। मंदिर की छत पर बहुत ही खूबसूरत नक्काशी की गयी है, जो देखने में बहुत ही आकर्षक लगती है। यह मंदिर एक पहाड़ी के ऊपर बना हुआ है और मंदिर में जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं।

हाथीनाला जलप्रपात —यह जलप्रपात नरसिंहपुर का प्राकृतिक जलप्रपात है। यह जलप्रपात घने जंगलों के बीच में स्थित है। इस जलप्रपात तक पहुँचने के लिए ट्रेकिंग करनी पड़ती है। यह जलप्रपात 5 स्तरों में नीचे



गिरता है, जो बहुत ही लुभावना होता है। यह जलप्रपात हाइवे रोड से करीब एक किलोमीटर दूर है। यह जलप्रपात प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है।

डमरू घाटी — यह घाटी नरसिंहपुर में स्थित एक धार्मिक स्थल है। डमरू घाटी एक प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर शिव भगवान को समर्पित है। यहां एक विशाल

शिवलिंग एवं शिव मूर्ति देखने के लिए मिलती है। शिवलिंग की ऊंचाई करीब 19 फीट है। यह मध्य प्रदेश का सबसे ऊंचा शिवलिंग है। यहां पर भगवान शिव जी की मूर्ति योग अवस्था में विराजमान है। यहां पर हनुमान जी की विशाल मूर्ति भी विराजमान है, जो खड़ी हुई अवस्था में है। यहां पर एक छोटा सा तालाब भी है। डमरू घाटी नरसिंहपुर में गाडरवारा के पास शक्कर



नदी के पास स्थित है। इसके अलावा टोनघाट(बर्हरा) एक प्राकृतिक दर्शनीय स्थल है जिसे छोटा धुआंधार के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास का समय यहाँ बिताया था। नरसिंह भगवान का मंदिर वैष्णव साधुओं द्वारा निर्मित है जिसमें वे सालिग्राम रूप में स्थित हैं। प्राचीन नरसिंह मंदिर को राज्य संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।



सिवनी

सिवनी जिले का गठन 1 नवम्बर 1956 में प्राथमिक रूप से जनजातीय बहुल जिले के रूप में किया गया। सिवनी जिले का नाम “सेओना” नामक वृक्ष के नाम पर किया गया। यह वृक्ष इस जिले में बहुतायत में पाया जाता है। इस वृक्ष का उपयोग ढोलक बनाने में किया जाता है। यह जिला सतपुड़ा पर्वत के उत्तर-दक्षिण में स्थित है। यह जिला इमारती लकड़ी का मुख्य स्रोत है। सागौन इस जिले में मुख्य रूप से पाया जाता है। सिवनी जिला मुख्यालय नागपुर-वाराणसी राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 7 और जबलपुर नागपुर के बीच स्थित है। एशिया का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध – ‘संजय सरोवर बांध’ छपारा (भीमगढ़, सिवनी) में बैनगंगा नदी पर बना है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

सिद्धघाट— सिद्धघाट तहसील मुख्यालय केवलारी से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर बैनगंगा नदी पर स्थित सिवनी जिले का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है, जो

बैनगंगा नदी के मध्य में एक सिद्धबाबा (शिवजी) का मंदिर है जो बड़ी-बड़ी चट्टानों के ऊपर स्थित है, जहां से बैनगंगा नदी का पहाड़-चट्टानों के मध्य नदी-जल



ग्राम पंचायत बिछुआ रैयत (गंगाटोला) अंतर्गत सिवनी-मंडला राज्यमार्ग से दांयी ओर लगभग 3 किलोमीटर अंदर की ओर स्थित है। सिद्धघाट में

का तीव्र प्रवाह एवं दोनों ओर के घने वन अद्भुत विहंगम दृश्य बनाते हैं। अपनी विशेष स्थलाकृति के कारण सिद्धघाट सिवनी का भेड़ाघाट भी कहलाता है।



श्री शिवधाम मठघोघरा लखनादौन— जिला मुख्यालय से जबलपुर रोड पर लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित विकासखंड लखनादौन है। लखनादौन मुख्यालय से पश्चिम दिशा में लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर ग्राम मठघोघरा है। यह प्रसिद्ध धार्मिक एवं पर्यटन स्थल है। इसमें दो पहाड़ियों के बीच में एक गहरी गुफा है, जिसमें बहुत ही प्राचीन भगवान शिव जी की मूर्ति एवं शिवलिंग स्थित है।

पेंच राष्ट्रीय उद्यान— सिवनी जिले में पेंच नेशनल पार्क सतपुड़ा रेंज के दक्षिणी क्षेत्रों में स्थित है, जो कि मध्य प्रदेश के सबसे दक्षिणी हिस्से में है। उद्यान में वाघ, तेंदुए, भेड़िये, जंगली भैंसें, हिरन, बारहसिंगा, मोर, काले हिरन आदि प्रसिद्ध 'द जंगल बुक', रुडयार्ड किपलिंग के किरदार 'मोगली' और गुस्सैल 'शेरखान' इस साहसिक स्थान से अभिन्न हैं। इस उद्यान का नाम पेंच नदी के नाम पर रखा गया है जो कि पार्क के बीचों-बीच से बहती है एवं पार्क को दो भागों में विभाजित करती है। इस पार्क को सन् 1983 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था। पेंच नेशनल पार्क में ग्राम कर्माझिरी और टुरिया, दो प्रवेश द्वारों से प्रवेश किया जा सकता है। पार्क हर साल अक्टूबर से जून तक पर्यटकों के लिए खुला रहता है।



95
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

अनूपपुर

अनूपपुर मध्य प्रदेश राज्य का एक पहाड़ी जिला है। जिले के एक तिहाई क्षेत्र में वन क्षेत्र शामिल है। जिसमें पाए जाने वाले मुख्य पेड़ साल अमला, टीक, सराई और शीशम इत्यादि हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह जिला पर्वत श्रेणियों एवं नदियों से आच्छादित है। पावन सलिल नर्मदा एवं सोन का उद्गम स्थल अमरकंटक इसी जिले में है। जिले में मैकाल पर्वत की श्रेणियां दक्षिण से पूर्व तक फैली हुई हैं।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

अमरकंटक— अमरकंटक मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले का पुष्पराजगढ़ तहसील में स्थित बहुत ही सुन्दर पवित्र और शान्त स्थान है। अमरकंटक में पवित्र नर्मदा नदी के साथ-साथ सोन नदी और जोहिला नदी का भी उद्गम स्थल है। माँ नर्मदा को भगवान शिव की पुत्री माना जाता है। अमरकंटक में घूमने के लिए कई धार्मिक और प्राकृतिक स्थल हैं।

माई की बगिया — नर्मदा उद्गम कुंड से 1 किलोमीटर की दूरी पर माई की बगिया नामक स्थान है, यहाँ सुन्दर फूलों और फलों के पेड़-पौधे लगे हैं। माई की बगिया में गुलबाकावली के पौधे पाये जाते हैं, जिससे नेत्र रोगों के लिए औषधि बनाई जाती है।

सोनमुड़ा — सोन नदी और भद्र नदी का उद्गम स्थल, ये दोनों नदियाँ अपने उद्गम स्थल से कुछ ही दूरी पर मिल जाती हैं और सोन-भद्र कहलाती हैं। सोनभद्र उद्गम स्थल से कुछ ही दूरी पर लगभग 100 फीट का झरना बनाती हैं।

कपिल धारा जलप्रपात — यह नर्मदा उद्गम स्थल से 6 किलोमीटर दूर है। यहाँ माँ नर्मदा अपना पहला जलप्रपात बनाती है। झरने की ऊँचाई 100 फीट है। यह स्थान कपिल मुनि की तपोभूमि रहा है। पास में ही कपिल मुनि का आश्रम और मंदिर भी है।

श्रीयंत्र महामेरु मंदिर — यह मंदिर नर्मदा कुंड से 1 किलोमीटर दूर स्थित है, यह घने जंगलों से घिरा है।



मंदिर की आकृति श्रीयंत्र जैसी है, इसका निर्माण भी विशेष मुहूर्त में किया गया है। यह बहुत ही सुन्दर मंदिर है।



सिलहरा (शिवलहरा) की गुफाएं — अनूपपुर जिले से 40 किलोमीटर दूर कोतमा तहसील के अंतर्गत शिवलहरा की गुफाएं स्थित हैं जिन्हें स्थानीय निवासी सिलहरा की गुफाएं भी कहते हैं। भालूमाड़ा से करीब 10



किलोमीटर दूर शिवलहरा गाँव से 2 किलोमीटर कच्चे रास्ते से जाना पड़ता है। अनूपपुर जिले के दारसागर ग्राम पंचायत में केवई नदी की जलधाराओं के किनारे शिवलहरा की पहाड़ियों के बीच दूसरी शताब्दी के नागवंशीय शासन काल की प्राचीन गुफाएं हैं। लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित गुफाओं के आगे पीछे सीढ़ियाँ, कुंड, स्नानागार, पूजा स्थल और पढ़ने-लिखने की पट्टिकाएं मिली हैं। गुफाओं में खूबसूरत पाषाण चक्र रखा है जो देखरेख के अभाव में खंडित हो गया है। शिवलहरा की गुफाओं के अन्दर मिट्टी के पात्र भी मिले हैं। गुफा के अन्दर भगवान शिव का पूजा स्थल और बरामदा भी है। गुफा की दीवार पर प्राचीन लिपि में शब्द लिखे हैं, जिन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। कुछ लोग इन्हें पाण्डवकालीन भी मानते हैं। उनके अनुसार पाण्डव अपने वनवास के दौरान कुछ समय के लिए इन गुफाओं में रुके थे। इन गुफाओं को पुरातत्व विभाग ने संरक्षित स्मारक घोषित किया है।

कोदर वाटरफॉल — इसे कन-कन फॉल भी कहा जाता है यह अनूपपुर जिले की पुष्पराजगढ़ तहसील के अंतर्गत आता है जो जोहिला नदी पर स्थित है। इस स्थान पर जोहिला नदी बहुत ही सुन्दर झरना बनाती है जिसमें नदी की जलधाराएं कई हिस्सों में बंट जाती है। यह झरना बरसात और ठंडी के मौसम में बहुत ही भव्य



दिखाई देता है। बारिश में यहाँ का दृश्य बहुत ही खूबसूरत होता है। बरसात में झरना नियाग्रा फॉल की तरह दिखलाई देता है, इसी कारण इसे मिनी नियाग्रा भी कहा जाता है।

स्वयंभू गणेश जी— अमरकंटक से 35 किलोमीटर दूर राजेन्द्रग्राम (पुष्पराजगढ़) तहसील मुख्यालय से 7 किलोमीटर दूर धरहरकला गाँव के पास जंगल में गणेश जी की प्राचीन प्रतिमा है, जो ऊँचाई में लगातार बढ़ रही है। कहा जाता है कि पहले प्रतिमा की ऊँचाई एक फुट थी, जो अब 11 फुट हो गई है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ भक्तों की माँगी गई हर मनोकामना पूरी होती है। इसीलिए यहाँ दूर-दूर से लोग दर्शन करने और मन्त माँगने आते हैं।



रीवा

रीवा शहर मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है जो विंध्य पठार के एक हिस्से का निर्माण करता है। यह पहले बघेल वंश की रियासत थी। यहाँ के निवासियों में गोंड एवं कोल ब्राह्मण, विभिन्न क्षत्रिय और वैश्य जाति के लोग भी शामिल हैं जो पहाड़ी भागों के साथ-साथ मुख्य नगर में रहते हैं। जिले में जंगलों की अधिकता है। रीवा के जंगलों में ही सफेद बाघ की नस्ल पाई गई है। यहाँ की कला और संस्कृति काफी समृद्ध थी, प्राचीन काल में इस भू-भाग में कलचुरी नरेशों का लगभग 12वीं शताब्दी तक आधिपत्य रहा। कलचुरी नरेशों ने सुंदर मंदिरों और मठों का निर्माण कराया, बाद में बघेल नरेशों के शासनकाल में भी कई खूबसूरत भवन, मंदिर आदि के निर्माण कार्य कराए गए। भूतपूर्व रीवा रियासत की स्थापना लगभग सन् 1400 में बघेल राजपूतों द्वारा की गई थी। यहाँ के रहन-सहन की झलकियाँ कई प्राचीन मूर्तियों में देखने को मिलती हैं। सन् 1912 ई. में यहाँ के स्थानीय शासक ने ब्रिटिश सत्ता से समझौता कर अपनी संप्रभुता अंग्रेजों को सौंप दी। यह शहर ब्रिटिश बघेलखंड एजेंसी की राजधानी भी रही है। यहाँ विश्व का सबसे पहला सफेद शेर 'मोहन' पाया गया था। रीवा जिले में बघेली एक प्रमुख भाषा है।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के प्रमुख दर्शनीय स्थल

पियावन धिनौची धाम — धिनौची धाम एक ऐसा स्थान है जहाँ एक नजर में, ही मन प्रफुल्लित हो उठता है। इसे पियावन के नाम से जाना जाता है। यह अतुलनीय ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल मध्य प्रदेश के रीवा जिले से 42 किलोमीटर दूर



सिरमौर की बरदहा घाटी में है। प्रकृति की अनुपम छटा के बीच यह धाम धरती से 200 फीट नीचे और लगभग 800 फीट चौड़ी प्रकृति की सुरम्य वादियों से घिरा हुआ

है। यहां प्राकृतिक झरने का श्वेत जल भगवान भोलेनाथ का 12 महीने निरंतर जलाभिषेक करता है। जिसे देखना अत्यंत रोमांचकारी है। यहां की खास बात जो इसे विशेष बनाती है वो है धरती से 200 फीट नीचे दो अद्भुत जलप्रपातों का संगम, जिसका आनंद जुलाई से सितंबर माह के मध्य लिया जा सकता है। साथ ही अति प्राचीन शिवलिंग और यहां पहाड़ियों में उकेरे गए प्राचीन शैल चित्र भी हैं। चट्टानों में उकेरे गए प्रागैतिहासिक शैल चित्र, जो इस क्षेत्र की गौरव गाथा भी बताते हैं। दो अद्भुत सर्पिलाकार चट्टानें अपने आप में अद्भुत हैं। इसके अलावा माँ पार्वती की साक्षात् दिव्य प्रतिमा भी मौजूद है जिसके दर्शन के लिए श्रद्धालु यहाँ आते हैं।

गोविंदगढ़ पैलेस — गोविंदगढ़ रीवा से करीब 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जहाँ पर बहुचर्चित गोविंदगढ़ का किला स्थित है। यह किला बहुत ही प्राचीन बताया जाता है। यह किला हालाँकि अब



खंडहर जैसा हो गया है किन्तु फिर भी इसकी छटा देखते ही बनती है। किले के पास ही एक बेहद खूबसूरत झील है जो इसकी छटा में चार चाँद लगा देती है। किले से गोविंदगढ़ झील का बहुत ही मनोरम दृश्य देखने के लिए मिलता है। गोविंदगढ़ किला रीवा महाराज की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी।

पूर्वा जलप्रपात — अत्यंत खूबसूरत पूर्वा जलप्रपात रीवा शहर से करीब 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित



एक पर्यटन स्थल है। बरसात के समय इस जलप्रपात में बहुत ज्यादा पानी रहता है, जो इसे बेहद मनभावन एवं आकर्षक बना देता है। यहाँ पर पानी दूध के समान लगता है और ऐसा लगता है जैसे दूध की धाराएं बह

रही हों। बरसात के समय यहां का क्षेत्र हरियाली से हरा भरा रहता है। चारों तरफ हरियाली देखने के लिए मिलती है। यह जलप्रपात तमसा नदी पर बना हुआ है। प्रकृति के अद्भुत दृश्य का अनुभव करने के लिए इस स्थान पर एक बार तो आना ही चाहिए।

सफेद बाघ की सफारी — मुकुंदपुर, सफेद बाघ की सफारी रीवा जिले का एक मुख्य पर्यटन आकर्षण है। मुकुंदपुर रीवा जिले से करीब 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां पर सफेद बाघ को देखा जा सकता है। सबसे पहले सफेद बाघ की खोज रीवा शहर के



महाराजा मातंड सिंह जूदेव द्वारा की गई थी और उन्होंने सफेद बाघ को संरक्षित भी किया था।



सतना

सतना जिला ऐतिहासिक पहलुओं में बेहद समृद्ध है। सतना जिले का इतिहास क्षेत्र के उस इतिहास का हिस्सा है जो कि बाघेलखंड के नाम से जाना जाता है, शुरुआती बौद्ध पुस्तकें, महाभारत आदि, बाघेलखण्ड मार्ग को हैहाया, कल्युरी या छेदी कबीले के शासकों से जोड़ते हैं। मध्य प्रदेश में मुंबई-हावडा रेल लाइन पर जबलपुर-इलाहाबाद के बीच (स्थित सतना तत्कालीन विन्ध्य प्रदेश का प्रवेश-द्वारा कहा जाता था, अर्थात रीवा, सीधी, पन्ना या छतरपुर आने वाले लोग सतना स्टेशन पर उतरते थे। जिस जगह सतना का रेल स्टेशन बना वहां पर रीवा की बड़ी रियासत के अलावा सोहवल, कोठी, नागौद, पन्ना, मैहर, जासो, बारुंधा, अजयगढ़, पालदेव, चौबेपुर, जैसे छोटे राज्य थे। इन पर नजर रखने की जरूरत होने पर ब्रिटिश सेना लाने के लिये सतना का रेलवे स्टेशन बना और फिर सन् 1863 के बाद जब स्टेशन बन गया तो सतना की बस्ती आकार रहने लगी जो समय के साथ वर्तमान में मध्य प्रदेश के एक महत्वपूर्ण जिले के रूप में प्रगतिशील है।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के प्रमुख दर्शनीय स्थल

माँ शारदा माता, मैहर— मैहर का शारदा माता का मंदिर सतना शहर का एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यह मंदिर पूरे भारत में प्रसिद्ध है। शारदा माता के दर्शन



करने के लिये पूरे भारतवर्ष से लोग आते हैं। इस मंदिर में नवरात्रि के समय बहुत ज्यादा भीड़ रहती है। सतना

जिला मुख्यालय से इसकी अनुमानित दूरी 40 किलोमीटर हैं। कहा जाता है कि यह मंदिर बेहद प्राचीन है एवं यह त्रिचूट पर्वत पर 600 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। इस पावन तीर्थस्थल तक पहुंचने के लिए 1001 सीढ़ियों पर चढ़ना होता है।

राम वन मंदिर "राम वन मंदिर सतना शहर की धार्मिक जगह है। राम वन मंदिर में आपको हनुमान जी की एक विशाल प्रतिमा देखने के लिए मिलती है, जो खड़ी हुई अवस्था में है। इस प्रतिमा की खास बात यह है, कि इस प्रतिमा की ऊंचाई हर साल बढ़ती है। इसी खासियत के कारण इस प्रतिमा को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। रामवन का नाम सुनते ही ऐसा लगता है कि यहां पर राम जी की प्रतिमा स्थापित होगी मगर ऐसा नहीं है। यहां पर हनुमान जी की प्रतिमा स्थापित है। राम वन मंदिर में पंचवटी देख सकते हैं, यहां पर राम जी ने स्वयं पांच पौधे लगवाए थे। इसलिए इस जगह को पंचवटी कहा जाता है। यहां पर आम, आंवला, बेल, बरगद और नीम के पेड़ देख सकते हैं। इसी वन में बहुचर्चित तुलसी



100
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

संग्रहालय स्थित है। यह पुरातत्व संग्रहालय है और सतना पर्यटन को काफी महत्व देता है। संग्रहालय को सन् 1977 में



स्थापित किया गया था। यह सतना शहर के गौरवशाली अतीत को प्रकट करता है।

शिव मंदिर, बिरसिंहपुर— इस क्षेत्र में भगवान शिव का एक प्रसिद्ध और पुराना मंदिर है। यह सतना से लगभग 35 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। शिव मंदिर की मूर्ति बहुत सुंदर है। लोग इस मंदिर में अपार विश्वास के साथ



आते हैं। प्रत्येक रविवार को मंदिर में एक विशेष आरती का आयोजन किया जाता है। महाशिवरात्रि के दिन यहां एक बड़ा मेला भी लगता है। इसे गेबीनाथ मंदिर के नाम

से भी जाना जाता है।



सरभंगा आश्रम—सरभंगा आश्रम सतना जिले के घने जंगलों के बीच में स्थित है। यह एक दर्शनीय स्थल है। इस जगह के बारे में कहा जाता है कि वनवास काल के दौरान भगवान राम इस स्थल पर आये थे। इस आश्रम में सरभंगा नामक मुनि रहते थे जिन्हें श्रीराम जी ने स्वयं उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर दर्शन दिए थे एवं दर्शन पश्चात मुनि ने अपनी इच्छा से अपना शरीर त्यागा था। इस तरह इस आश्रम को सरभंगा आश्रम के नाम से जाना जाता है। यहां पर राम, लक्ष्मण, और सीता जी के मंदिर के अलावा शिव मंदिर भी है और एक मनमोहक शीतल कुंड भी है जो पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

आल्हा का अखाड़ा एवं आल्हा का तालाब— यह अखाड़ा एवं तालाब सतना शहर में स्थित एक प्राचीन स्थल है। यह जगह मैहर में शारदा मंदिर से करीब 2 किलोमीटर दूर स्थित है। कहा जाता है कि आल्हा जी ने यहां तपस्या की थी, जिससे उन्हें अमर होने का वरदान मिला है। आल्हा मां शारदा के बहुत बड़े भक्त थे और सबसे पहली पूजा आल्हा के द्वारा ही की जाती थी। यहां पर एक छोटा सा शिव मंदिर भी है, जिसमें शिवलिंग विराजमान है। पास ही में एक मनभावन तालाब है जिसमें कमल के फूल देखे जा सकते हैं, जो बहुत खूबसूरत लगते हैं।



101
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

शहडोल

शहडोल शहर मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित हैं। शहडोल जिला मुख्यतः पहाड़ी जिला है। शहडोल अपने सुंदर तालाबों, वनों एवं प्राकृतिक संसाधनों के कारण जाना जाता है। शहडोल अपने खनिज संसाधनों में बहुत समृद्ध है। जिले में पाए जाने वाले खनिजों में कोयला, अग्नि मिट्टी, ऑचर्स और संगमरमर हैं। सोहागपुर कोयला क्षेत्र राज्य के राजस्व का एक प्रमुख हिस्सा है। जिले के आदिवासी पुरानी पारंपरिक विधि से खेती करना पसंद करते हैं।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

विराटेश्वर मंदिर — मंदिर का निर्माण 950 से 1050 के बीच कल्चुरी नरेश युवराज देव ने करवाया था। एक जनश्रुति के अनुसार यह महाभारत काल के राजा विराट



की नगरी है। महाभारत काल में पाण्डव यहाँ आये थे। मंदिर के पास ही बाणगंगा में पातालतोड़ अर्जुन कुंड है। कहा जाता है कि इस कुंड का निर्माण महाभारत काल में अर्जुन ने अपने तीर से किया था। मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। शिवलिंग के चारों ओर जलहरी बनी हुई है। मंदिर के प्रवेश द्वार के पास ही नंदी और सिंह की प्रतिमा है। मंदिर के बाहरी दीवारों पर कुछ स्थानों पर पुरुषों और महिलाओं की कामुक प्रतिमाएँ हैं जो देखने में खजुराहो के मंदिर की तरह ही हैं। वर्तमान में मंदिर का रखरखाव पुरातत्व विभाग कर रहा है और मंदिर को संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

सरफा डैम — यह डैम शहडोल जिला मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर दूर है। यह डैम सरफा नदी पर बना है। इस डैम के निर्माण का उद्देश्य शहडोल शहर को पानी की आपूर्ति करना है। डैम के पास बहुत ही सुन्दर



गार्डन बनाया गया है। डैम के पास का दृश्य बहुत ही मनमोहक है। सरफा डैम शहडोल जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल और पिकनिक स्पॉट में से एक है।

क्षीरसागर— यह स्थल शहडोल जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल और पिकनिक स्पॉट में से एक है। जो शहडोल जिला मुख्यालय से करीब 20 किलोमीटर दूर है। इस स्थान पर जोहिला नदी और मुढ़ना नदी का संगम है। जोहिला नदी पवित्र नर्मदा नदी और सोन नदी के बाद अमरकंटक से निकलने वाली तीसरी नदी है जबकि मुढ़ना नदी शहडोल की एक छोटी नदी है। चारों तरफ हरियाली से घिरा यह स्थान अनायास ही सैलानियों का मन मोह लेता है। इस स्थान पर संगम स्थल के पास रेत का विशाल मैदान है जो समुद्र के बीच (Beach) के समान दिखलाई देता है।



सीधी

सीधी को इसके प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक महत्व और सांस्कृतिक कला के लिए जाना जाता है। सीधी मध्यप्रदेश राज्य की उत्तर-पूर्वी सीमा में स्थित है। सीधी प्राकृतिक संसाधनों से भरा हुआ है, सोन नदी यहाँ से गुजरती है। यह राष्ट्रीय अभयारण्य भी है जो बगदरा में है और यहाँ कृष्णमृग का पाया जाना यह प्रमाणित करता है कि यह स्थान ऋषियों, मुनियों एवं तपस्वियों की तपोभूमि रहा है। सोन नदी में सोन घड़ियाल भी हैं। इसकी छवि गौरवशाली इतिहास और कला की है। अकबर के नौ रत्नों में से एक बीरबल और बाणभट्ट का जन्म यहीं हुआ माना जाता है। गोपद बनास तहसील क्षेत्र में घोघरा देवी का मंदिर है, जहाँ प्रतिवर्ष नवरात्रि में मेला लगता है। मऊवास और कथौली के बौद्ध स्तूप के अवशेष, जो यहाँ बौद्ध धर्म के विकसित होने के प्रमाण के रूप में मौजूद हैं।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

संजय राष्ट्रीय उद्यान— संजय राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना सन् 1981 में की गई थी। संजय राष्ट्रीय उद्यान भारत के मध्य प्रदेश राज्य में सीधी जिले में



स्थित है। इस उद्यान का विस्तार 466.657 वर्ग कि.मी. का है और यह संजय डुबरी टाइगर रिजर्व के अंतर्गत पड़ता है। जिसे सन् 2008 में बाघ आरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है। संजय टाइगर रिजर्व से ही सोन घड़ियाल अभयारण्य एवं बगदरा अभयारण्य संबद्ध हैं जो कि खासे आकर्षण का केंद्र हैं।

राष्ट्रीय उद्यान ज्यादातर साल जंगलों से बना है। उद्यान में बाघ, तेंदुआ, चीतल, सांवर, जंगली सूअर, नीलगाय, चिंकारा, सिवेट, साही, गोह और पक्षियों की लगभग 309 प्रजातियाँ हैं। सबसे आकर्षक पक्षियों में गोल्डन हुडेड ओरियल, रैकेट पूछ ड्रोंगो, भारतीय पित्त

रुफस—ट्रीपाड, लेसर एडजुटेन्ट, लाल सिर वाला गिद्ध, सॅनरस गिद्ध, भारतीय सफेद पूँछ वाला गिद्ध, मिस्त्र का गिद्ध, नाईटजार्स और कई अन्य प्रजातियाँ हैं।

सिंहावल एवं बघोर पुरापाषाण अवशेष क्षेत्र— पुरापाषाण काल की दृष्टि से यह जिला एक अलग ही महत्व रखता है। इस जिले के सिंहावल एवं बघोर क्षेत्र में खुदाई से उच्च पुरापाषाण काल (लगभग 40,000 वर्ष प्राचीन) से संबंधित अनेक औजारों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। सोन घाटी का यह क्षेत्र पुरातात्विक शोध के क्षेत्र में अपना अलग महत्व रखता है।

चंद्रेह शैव मंदिर व मठ— जिले के रामपुर नैकिन में चंद्रेह ग्राम में 972 ई. में निर्मित प्राचीन शैव मंदिर एवं मठ स्थित हैं। यह मंदिर चेदि शासकों के गुरु प्रबोध शिव, जो मत्त—मयूर नामक प्रसिद्ध शैव संप्रदाय से संबंधित थे, ने साधना व शैव सिद्धांत के प्रचार हेतु स्थापित किया। मंदिर से जुड़ी हुई संरचना बालुका पत्थर से निर्मित एक मठ है जिसमें इसके निर्माण काल से संबंधित दो प्राचीन संस्कृत शिलालेख लगे हैं। इस संप्रदाय द्वारा अनेक मंदिर स्थापित किए गए जिनमें कड़वाहा मंदिर, अशोकनगर व सुरवाया मंदिर, शिवपुरी प्रमुख हैं। चंद्रेह शैव मंदिर सोन एवं बनास नदी के संगम के निकट स्थित है व वर्तमान में भारतीय पुरातात्विक सर्वे द्वारा संधारित है।



सिंगरौली

सिंगरौली जिला मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित रीवा मंडल के अंतर्गत आता है। सिंगरौली मध्यप्रदेश राज्य का 50वाँ जिला है, जिसे 24 मई 2008 को सीधी जिले से विभाजित कर के बनाया गया, जिसमें मध्य प्रदेश के सीधी जिले के पूर्वी भाग और उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के आसपास के क्षेत्र शामिल हैं। जिला बघेलखण्ड के अन्तर्गत आता है। सिंगरौली का पूर्व नाम श्रृंगावली था जो श्रृंगी ऋषि के नाम पर रखा गया था। सिंगरौली कोयला उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ कोयले की मोटी परत पाई जाती है। यह मध्यप्रदेश की ऊर्जा राजधानी है। यहाँ लाल काली मिट्टी भी पाई जाती है। सिंगरौली जिले में भारत की सबसे बड़ी विद्युत संयंत्र कंपनी एन.टी.पी.सी. सन् 1975 में स्थापित की गई है, जिसके लिए जलापूर्ति रिहंद जलाशय से प्राप्त होती है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

रिहंद डैम — इसकी आधारशिला सन 1954 में देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के



द्वारा रखी गयी थी जो रेणु नदी पर स्थित है। इसे जीवनदायिनी भी कहा गया है। यहाँ वर्ष भर सैलानी घूमने आते हैं और प्रसन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त मुड़वानी डैम और चिल्काडाड झील भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

रसमांडा झील— यह मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमाओं पर स्थित एक प्राकृतिक झील है। यह झील जिला मुख्यालय से लगभग 40 किलोमीटर दूर है। यहाँ पहाड़ों से गिरता जल झरने के रूप में बहता हुआ पर्यटकों को बहुत लुभाता है। गिरते हुए पानी से चिकने और खूबसूरत बने पत्थर यहाँ की सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं और पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। झील में पानी का बहाव तेज रहता है और इसके किनारे पर लगे जामुन के पेड़ भी इसकी सुन्दरता को बढ़ा देते हैं।

माडा की गुफाएं — माडा की गुफाएं सातवीं शताब्दी की बनी प्रतीत होती हैं जिन्हें शायद राष्ट्रकूट के द्वारा बनवाया गया माना जाता है। ये गुफाएं चट्टानों को काटकर बनाई गयी हैं। विवाह माडा, शंकर — गणेश माडा, रावन माडा और जल जलिया माडा मुख्य गुफाएं हैं।



104
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

उमरिया

उमरिया जिला मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्व में स्थित है इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 4,548 वर्ग किलोमीटर है। लगभग 83% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। उमरिया पहले दक्षिण रीवा जिले का मुख्यालय था और उसके बाद बांधवगढ़ तहसील का मुख्यालय शहर था

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

शिकारगाह से बाघों का संरक्षण केन्द्र बना बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व— कभी बाघों के लिए दुनिया भर में शिकारगाह के रूप में जाना जाने वाला उमरिया जिले के बाँधवगढ़ का जंगल आज बाघों के संरक्षण का केंद्र बन चुका है। गर्भवती बाघिन के शिकार के बाद



यह स्थान अंतिम शासक महाराजा मार्टण्ड सिंह ने बाघ संरक्षण के लिए सरकार को दान में दे दिया था। गोली बाघिन के शरीर में लगी और डेढ़ मील आगे जाकर बाघिन की मौत हो गई। इस पूरे दृश्य को दिखाता ये शिलालेख इस बात की लिखित गवाही है कि आज के बाँधवगढ़ टाइगर रिजर्व का जंगल किसी जमाने में रीवा राजशाही की निजी संपत्ति और शिकारगाह हुआ करता था। किंवदंती है कि इस 108वीं बाघिन के शिकार के बाद जब उसका शव राजा के सामने लाया गया तो वह गर्भवती थी और उसके पेट में दो जीवित बच्चे थे जो कुछ ही देर में मौत के शिकार हो गये और महाराजा का मन शिकार से उठ गया। उन्होंने उसी

समय बंदूक छोड़कर शिकार त्याग दिया। बाद में महाराजा मार्टण्ड सिंह ने सन् 1967 में बाँधवगढ़ का पूरा जंगल बाघ सहित अन्य जीवों के संरक्षण की शर्त पर मध्य प्रदेश शासन को सौंप दिया। महाराजा के द्वारा उठाया गया यह कदम दुनिया के लिए मिसाल बन गया और बाद में बाघों के संरक्षण का सबसे बड़ा केंद्र बनकर सामने आया। मध्य प्रदेश को टाइगर स्टेट का दर्जा दिलाने में बाँधवगढ़ टाइगर रिजर्व की अहम भूमिका रही है।

माँ विरासिनी देवी मंदिर — जिले के जनपद मुख्यालय पाली स्थित मां विरासिनी देवी का मंदिर वर्ष भर श्रद्धालुओं की श्रद्धा का केंद्र रहता है लेकिन



नवरात्रि के दौरान बिरसिंहपुर पाली स्थित मंदिर में महिषासुर मर्दिनी रूप में विराजी मां विरासिनी मंदिर में महाअष्टमी के दिन देवी का विशेष श्रृंगार किया जाता है जो स्वर्ण जड़ित होती है। इस मंदिर का निर्माण 10वीं



शताब्दी में कल्चुरी राजाओं द्वारा किया गया था। पाली स्थित माँ विरासिनी मंदिर कटनी-शहडोल रेल एवं सड़क मार्ग पर पड़ता है। ऐसा माना जाता है कि श्रद्धालुओं द्वारा कलश पूजन एवं दीपक जलाने से उनकी मनोकामनाएं पूरी होती है।

माँ ज्वाला धाम उचेहरावाली- उमरिया जिले के नरौजाबाद रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर उत्तर में स्थित माँ ज्वाला उचेहराधाम शक्ति पीठ विराजमान है जो ना केवल मध्य प्रदेश बल्कि पूरे भारत वर्ष में अपनी विशेषताओं और दैवीय शक्ति के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान आदिकाल से घोड़क्षत्र नदी के तट पर घनघोर और विकराल जंगल के बीच विलुप्त अवस्था में मौजूद



था। इसी स्थान पर (अब से दो दशक पूर्व) माँ ज्वाला धाम मंदिर का पुनर्निर्माण उचेहरा के निवासियों द्वारा किया गया। महीने में एक बार पूर्णिमा के पश्चात पड़ने वाले मंगलवार या शनिवार को माँ ज्वाला की सवारी आती है जिसमें श्रद्धालु संतान प्राप्ति, रोग से ग्रस्त रोगी, नौकरी, व्यापार, शादी-विवाह व आर्थिक समस्या

से सम्बंधित अरदास करते हैं। प्रत्येक वर्ष जनवरी की पहली तारीख को माँ ज्वाला मंदिर की स्थापना का वार्षिक महोत्सव मनाया जाता है। इस दिन माँ ज्वाला की विशेष पूजा की जाती है तथा माँ ज्वाला की झांकी निकाली जाती है। माँ ज्वाला धाम में हिंदू सनातन धर्म के सभी धार्मिक पूजा और उत्सव जैसे वैशाखी, सावन सोमवारी, कृष्ण जन्म, गणपति पूजा, दीपावली, मकर संक्रांति, सरस्वती पूजन महाशिवरात्रि और होली आदि बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

मढ़ीबाग कल्चुरी कालीन मंदिर- सुरम्य विंध्य के पहाड़ों से सुसज्जित बांधवधरा उमरिया में बांधवगढ़ के अलावा भी पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। मढ़ीबाग का शिव मंदिर कल्चुरी कालीन स्थापत्य पर आधारित है। उमरिया में प्रकृति की गोद एवं एकांत में समय बिताने के लिए लोगों की जुबान पर पहला नाम मढ़ीबाग का आता है। धार्मिक स्थल मढ़ीबाग शिव मंदिर कल्चुरी कालीन है और खजुराहो की तर्ज पर विकसित है। जंगल के बीच में बने इस मंदिर में पहुंचने के बाद लोगों को तिलस्मी शांति का अनुभव होता है। बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण कल्चुरी नरेश कर्ण देव सिंह ने 10वीं शताब्दी में कराया था। वे शिवोपासक थे और इस पूरे क्षेत्र में उन्होंने इसी तर्ज पर कई अन्य मंदिरों का भी निर्माण कराया था।

राम-जानकी मंदिर- उमरिया सदियों से धार्मिक आस्था का केंद्र बिंदु रहा है। ऐतिहासिक किले के समीप स्थित राम जानकी मंदिर में सालाना कृष्ण जन्माष्टमी को विशाल मेले का आयोजन किया जाता है यहां सबसे पहले रीवा रियासत के वंशज पूजा अर्चना करते हैं।



छतरपुर

छतरपुर बांदा-सागर सड़क पर स्थित है। इसका नाम बुंदेला राजपूत नेता छत्रसाल के नाम पर रखा गया है, जो बुंदेलखंड की आजादी के संस्थापक हैं। उनके वंशजों द्वारा राज्य पर सन् 1785 तक शासन किया गया था। उसके बाद राजपूतों के परमार वंश ने छतरपुर पर अधिकार कर लिया था।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

खजुराहो — खजुराहो छतरपुर जिले में स्थित एक प्रमुख शहर है जो अपने प्राचीन एवं मध्यकालीन मंदिरों के लिए विश्वविख्यात है। खजुराहो को प्राचीन काल में 'खजूरपुरा' और 'खजूर वाहिका' के नाम से भी जाना जाता था। यहाँ बहुत बड़ी संख्या में प्राचीन हिन्दू और जैन मंदिर हैं। मंदिरों का शहर खजुराहो पूरे विश्व में मुड़े हुए पत्थरों से निर्मित मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। खजुराहो को इसके अलंकृत मंदिरों की वजह से जाना जाता है जो देश के सर्वोत्कृष्ट मध्यकालीन स्मारक हैं। भारत के अलावा दुनिया भर के आगन्तुक और पर्यटक प्रेम के इस अप्रतिम सौंदर्य के प्रतीक को देखने के लिए निरंतर आते रहते हैं। हिन्दू कला और संस्कृति को शिल्पियों ने इस शहर के पत्थरों पर मध्यकाल में उत्कीर्ण किया था। कवि चंदबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो'

के महोबा खंड में चन्देल की उत्पत्ति का वर्णन किया है। चन्द्रवर्मन ने तालाबों और उद्यानों से आच्छादित खजुराहो में 85 अद्वितीय मंदिरों का निर्माण करवाया।

कंदरिया महादेव मंदिर — कंदरिया महादेव मंदिर पश्चिमी समूह के मंदिरों में विशालतम है। यह अपनी भव्यता और संगीतमयता के कारण प्रसिद्ध है। इस विशाल मंदिर का निर्माण महान चन्देल राजा विद्याधर ने महमूद गजनवी पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में किया था। लगभग 1050 ईसवी में इस



मंदिर को बनवाया गया। यह एक शैव मंदिर है। तांत्रिक समुदाय को प्रसन्न करने के लिए इसका निर्माण किया गया था। कंदरिया महादेव मंदिर लगभग 107 फुट ऊँचा है। मकर तोरण इसकी मुख्य विशेषता है।



107
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

सूर्य (चित्रगुप्त) मंदिर— खजुराहो में एकमात्र सूर्य मंदिर है जिसका नाम चित्रगुप्त है। चित्रगुप्त मंदिर एक ही चबूतरे पर स्थित चौथा मंदिर है। इसका निर्माण भी चंदेल राजा विद्याधर के काल में हुआ था। इसमें



भगवान सूर्य की सात फुट ऊँची प्रतिमा कवच धारण किए हुए स्थित है। इसमें भगवान सूर्य सात घोड़ों पर सवार हैं। मंदिर की अन्य विशेषता यह है कि इसमें एक मूर्तिकार को काम करते हुए कुर्सी पर बैठा दिखाया गया है। इसके अलावा एक ग्यारह सिर वाली विष्णु की मूर्ति दक्षिण की दीवार पर स्थापित है।

छत्रसाल संग्रहालय— धुबेला झील के किनारे बना होने के कारण छत्रसाल संग्रहालय को धुबेला म्यूजियम के नाम से भी जाना जाता है। महाराजा छत्रसाल ने इसे अपने निवास स्थान के लिए बनाया था और इसे धुबेला महल के नाम से जाना जाता है। इस इमारत का निर्माण 18वीं शताब्दी में महाराजा छत्रसाल के द्वारा करवाया गया था। यह इमारत बुंदेला वास्तु कला में बनाई गई है। महाराजा छत्रसाल महल को 1955 में संग्रहालय में बदल दिया गया था।

महाराजा छत्रसाल म्यूजियम में इस संग्रहालय में गुप्त काल से लेकर वर्तमान काल तक नागर लिपि का विकास क्रम यहाँ देखा जा सकता है। उस संग्रहालय में बहुत सारी गैलरी देखने के लिए मिलती है। हर गैलरी में अलग-अलग वस्तुओं का संग्रह देखने के लिए मिलता है। यहाँ पर प्राचीन लिपियों की गैलरी, बौद्ध मूर्तियों की गैलरी, पुरानी मूर्तियों का भी संग्रह करके रखा गया है। यहाँ पर राजा के वस्त्र एवं उनके द्वारा उपयोग की गई बहुत सारी वस्तुओं का भी संग्रह करके रखा गया है। यहाँ गुप्त और कल्चुरी काल की यादें भी देखने को मिलती हैं। यहाँ उमा महेश्वर की मूर्ति, विष्णु भगवान जी की शेष शैया पर लेटी हुई मूर्ति, कापालिका की मूर्ति, नंदी भगवान जी की मूर्तियाँ अति



सुन्दर हैं। इसके अतिरिक्त सवाई सिंह का मकबरा, बिहारी जू का मंदिर और सूर्य मंदिर आदि स्थान भी दर्शनीय हैं।



दमोह

दमोह का इतिहास बहुत प्राचीन है। यहां पाषाण काल के अनेक उपकरण प्राप्त हुए हैं जो सिद्ध करते हैं कि प्रारंभिक मानव सभ्यता यहां फली-फूली थी। पांचवीं शताब्दी में यहां पाटलिपुत्र के गुप्त शासकों का शासन था। समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त और स्कन्दगुप्त ने इस क्षेत्र में अनेक स्मारकों का निर्माण करवाया। इसका सबूत जिले के विभिन्न स्थानों पर पाए जाने वाले शिलालेख, सिक्के, दुर्गा मंदिर व अन्य वस्तुएं हैं जिनका संबंध समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त, और स्कन्दगुप्त के शासन काल से था। 8वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के मध्य दमोह जिले का कुछ भाग चेदी साम्राज्य के अंतर्गत आता था। जिसमें कल्चुरी राजाओं का शासन था। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा नल की पत्नी दमयंती के नाम पर ही इसका नाम दमोह पड़ा। अकबर के साम्राज्य में यह मालवा सूबे का हिस्सा था। ऐतिहासिक नगर के आस-पास का इलाका पुरातत्व की दृष्टि से समृद्ध है, जहाँ छिटा एवं रॉड जैसे प्राचीन स्थल हैं।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कुण्डलपुर— कुण्डलपुर दमोह जिले का एक जैन तीर्थ स्थल है। यहां पर 63 बहुत प्राचीन जैन मंदिर हैं जो पहाड़ी पर बने हुए हैं। यह मंदिर कुण्डलपुर दमोह जिले से करीब 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पहाड़ी



पर बने मंदिरों में जाने के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं। मंदिर तक जाने के लिए पैदल सीढ़ियों से जाना पड़ता है। भक्त परिक्रमा करके इन सभी मंदिरों को घूम सकते हैं। इन मंदिरों में बड़े बाबा आदिनाथ का मंदिर सबसे प्रसिद्ध है।

सिंगौरगढ़ का किला— सिंगौरगढ़ का किला दमोह जिले के रानी दुर्गावती अभ्यारण के अंदर स्थित है। यह किला ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। दमोह के सिंग्रामपुर से 6 किलोमीटर दूर सतपुड़ा की पहाड़ियों पर यह क्षतिग्रस्त किला स्थित है। प्राचीन काल में इस किले का बहुत अधिक सामरिक महत्व था। कहा जाता है कि इस विशाल किले को राजा वेन बसोर और यहां शासन करने वाले गावे राजाओं ने बनवाया था। 15वीं शताब्दी में गोंड राजा दलशाह अपनी रानी दुर्गावती के साथ यहां रहते थे। किले के नजदीक ही एक झील है



109
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

जिसमें कमल पुष्पों के समूह झील के आकर्षण को और बढ़ा देते हैं। किले और आसपास का क्षेत्र पिकनिक के लिए एक उत्तम जगह है।

रानी दमयंती किला/रानी दमयंती पुरातात्विक संग्रहालय — यह किला दमोह में स्थित एक चर्चित पर्यटन स्थल है। यह किला अति प्राचीन है जो अब संग्रहालय में बदल दिया गया है। इस किले के बाहर खूबसूरत बगीचा किले के अंदर बहुत सारी मूर्तियों का



संग्रह देखने के लिए मिलता है। रानी दमयंती का किला मुख्य दमोह शहर में कोतवाली थाने के सामने स्थित है।

बांदकपुर भोले नाथ मंदिर / जागेश्वर धाम बांदकपुर में दमोह जिले में एक छोटा सा शहर है, जो भगवान शिव के प्रसिद्ध मंदिर—जागेश्वर धाम के लिए जाना जाता है। जागेश्वर धाम भगवान शिव और पार्वती माता को समर्पित है। यह मंदिर बहुत खूबसूरत है। इस

मंदिर में महाशिवरात्रि के समय बहुत बड़ा मेला लगता है। लोगों का कहना है कि महाशिवरात्रि के समय यहां पर दो अलग जगहों पर लगे झंडे आपस में मिलते हैं। बांदकपुर के शिव मंदिर के ऊपर लोगों की आस्था है। लोगों का मानना है, कि यहां पर जो भी लोग आते हैं, उनकी इच्छा जरूर पूरी होती है।

निदान कुण्ड— भैंसाघाट रेस्ट हाऊस से कुछ दूर भैंसा गांव से एक सड़क इस जलप्रपात के लिए जाती है।



यह जलप्रपात दमोह के सिंग्रामपुर गांव में है। मुख्य सड़क से 01 किलोमीटर की दूरी पर एक जलधारा 10 फिट की ऊंचाई से काली चट्टान से नीचे गिरती है। इसे निदान कुण्ड कहते हैं। जुलाई से अगस्त माह में इस जलप्रपात में पानी बहुतायत से होता है। अतः सामने से इसका नजारा अत्यन्त अद्भुत होता है।



निवाड़ी

निवाड़ी जिला टीकमगढ़ जिले का एक हिस्सा हुआ करता था और 1 अक्टूबर 2018 को इसे अलग कर एक नए जिले के रूप में बनाया गया था। यह राज्य का 52वां जिला बना। यह जनसंख्या और क्षेत्रफल दोनों के मामले में मध्य प्रदेश का सबसे छोटा जिला है। बेतवा नदी इस जिले से होकर गुजरती है। राष्ट्रीय राजमार्ग 39, राष्ट्रीय राजमार्ग 44 और राष्ट्रीय राजमार्ग 539 निवाड़ी से होकर गुजरता है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

ओरछा— बेतवा नदी के तट पर बसे ऐतिहासिक शहर ओरछा की स्थापना 16वीं शताब्दी में बुंदेला राजपूत प्रमुख रुद्र प्रताप ने की थी। यहां, बेतवा नदी सात धाराओं में विभाजित होती है, जिसे सतधारा भी कहा जाता है। किंवदंती है कि यह ओरछा के सात



तत्कालीन प्रमुखों के सम्मान में है। ओरछा का प्राचीन शहर समय के अनुसार थम गया है, इसके कई स्मारक आज भी अपनी मूल भव्यता को बरकरार रखे हुए हैं। यहाँ के मंदिर और महल भव्य और आकर्षक हैं यहाँ स्थित राम राजा मंदिर अति प्रसिद्ध है। इसके बारे में किंवदंती है कि इस मंदिर की प्रतिमा को मधुकर शाह बुन्देला के राज्यकाल (1554-92) के दौरान उनकी रानी गणेश कुंवर अयोध्या से लाई थीं। रानी गणेश कुंवर वर्तमान ग्वालियर जिले के करहिया गांव की परमार राजपूत थीं। चतुर्भुज मंदिर बनने से पहले रानी पुष्प नक्षत्र में अयोध्या से पैदल चलकर बाल स्वरूप भगवान राम (रामलला) को ओरछा लाई परंतु रात्रि हो जाने के कारण भगवान राम को कुछ समय के लिए

महल के भोजन कक्ष में स्थापित किया गया। लेकिन मंदिर बनने के बाद कोई भी मूर्ति को उसके स्थान से हिला नहीं पाया। इसे ईश्वर का चमत्कार मानते हुए महल को ही मंदिर का रूप दे दिया गया और इसका नाम रखा गया राम राजा मंदिर। आज इस महल के चारों ओर शहर बसा है और पुष्प नक्षत्र और राम नवमी पर यहां हजारों श्रद्धालु इकट्ठा होते हैं।

अछरूमाता मंदिर— वर्षों से अछरूमाता का यह मंदिर भक्तों की आस्था का केन्द्र रहा है। एक समय यहां माता की मढ़िया हुआ करती थी। समय के साथ हुए बदलाव के चलते अब यहां विशाल मंदिर और धर्मशालाएं बन चुकी हैं। बुंदेलखण्ड की देवी प्रतिमाओं में अछरूमाता के दर्शनों का विशेष पुण्य लाभ मिलता है। ऐसी मान्यता है कि यहां आने वाले भक्तों की हर मनोकामना पूरी होती है। नवरात्रि के आरंभ होते ही मेला लग जाता है और हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां दर्शनों के लिए आते हैं। माता के चमत्कारों की कहानियाँ क्षेत्र के हजारों बुजुर्गों की जुबान पर आज भी सुनने के लिए मिलती हैं।



पन्ना

पन्ना मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है। यह एक ऐतिहासिक नगर है जिसका उल्लेख विष्णु पुराण और पद्मपुराण में किलकिल प्रदेश से आता है। यह भूमि वाकाटक वंश की उत्पत्ति स्थल है। नागवंश की कुलदेवी पद्मावती किलकिला नदी के किनारे स्थित हैं, जिसके कारण इसका नाम पदमा और बाद में परना झरना और फिर समय के साथ पन्ना हुआ। महाभारत कालीन विराट नगर की पहचान यहां के बरहटा से की जाती है। स्थानीय मान्यता के अनुसार यह क्षेत्र राजा दधीचि की राजधानी थी। यह जिला सुरम्य पर्वत मालाओं के मध्य बसा है जो पूरी दुनिया में उज्ज्वल हीरों की खदानों के लिए जाना जाता है। पन्ना जिला मुख्यालय “मंदिरों के नगर” के रूप में प्रसिद्ध है। यह प्रकृति प्रदत्त सम्पदा, वन एवं खनिज के साथ पूरे वैभव से परिपूर्ण है। यहां की रत्नगर्भा धरती अनेकों ऋषि मुनियों की तपोभूमि एवं वीर योद्धाओं की कर्मस्थली रही है। पाण्डवों की गुफाओं के द्वापर काल के अवशेष आज भी यहां शेष हैं।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

श्री बलदेव जी मंदिर — बलदेव जी का मंदिर पन्ना शहर में स्थित एक धार्मिक स्थल है। यह मंदिर श्री कृष्ण जी के बड़े भाई बलदाऊ जी को समर्पित है। यह मंदिर खूबसूरती से बनाया गया है और बहुत बड़ा है।



यह मंदिर 1933 में राजा रूद्र प्रताप सिंह के द्वारा बनवाया गया था। यह मंदिर रोमन वास्तुकला में बना हुआ है और मंदिर में काले रंग की बलदाऊ भगवान की प्रतिमा देखने के लिए मिलती है। मंदिर में बड़े स्तम्भों के साथ महा मंडप नामक एक बड़ा हॉल है और इसे एक उभरे हुए मंच पर बनाया गया है ताकि मुख्य द्वार के बाहर से भी दर्शन प्राप्त किया जा सके।

पांडव फॉल— पन्ना से 14 किलोमीटर और खजुराहो से 34 किलोमीटर की दूरी पर, पांडव जलप्रपात मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंदर स्थित एक शांत झरना है। पांडव जलप्रपात पन्ना के दर्शनीय झरनों में से एक है। पांडव जलप्रपात मध्य प्रदेश में केन नदी की सहायक नदी द्वारा गिराया गया बारहमासी झरना है। गिरता हुआ झरना लगभग 30 मीटर की ऊंचाई से एक दिल के आकार के पूल में



गिरता है। हरे-भरे जंगलों से घिरे, शानदार पांडव फॉल्स की शांति, पवित्रता और रहस्यपूर्ण वातावरण



स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों को आकर्षित करती है। यहां अनदेखी कुछ प्राचीन गुफाएं हैं। माना जाता है कि महाभारत के पांडवों ने अपने निर्वासन का कुछ समय यहां बिताया था।

पन्ना टाइगर रिजर्व— पन्ना भारत का बाइसवां बाघ अभ्यारण है और मध्य प्रदेश का पाँचवां। रिजर्व विंध्य रेंज में स्थित है और यह राज्य के उत्तर में पन्ना और छतरपुर जिलों में फैला हुआ है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान



1981 में बनाया गया था। इसे 1994 में भारत सरकार द्वारा टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था। राष्ट्रीय उद्यान में 1975 में बनाए गए पूर्व गंगऊ वन्यजीव अभ्यारण के क्षेत्र शामिल हैं। इस अभ्यारण में वर्तमान उत्तर और दक्षिण के क्षेत्रीय वन शामिल हैं। पन्ना जिले में पार्क के आरक्षित वन और छतरपुर की ओर कुछ संरक्षित जंगल, अतीत में पन्ना, छतरपुर और बिजावर रियासतों के तत्कालीन शासकों के शिकारगाह थे।

श्री जुगल किशोर जी मंदिर— श्री जुगल किशोर मंदिर पन्ना शहर में स्थित है। इस मंदिर में श्री कृष्ण जी और राधा जी की मूर्ति विराजमान है। यह मंदिर बहुत ही खूबसूरती से बुंदेला वास्तु कला में बनाया गया है। इस मंदिर का निर्माण पन्ना के चौथे बुंदेला राजा हिंदूपत सिंह ने अपने शासनकाल के दौरान करवाया था। किंवदंतियों के अनुसार, इस मंदिर के गर्भगृह में रखी गई मूर्ति को ओरछा के रास्ते वृंदावन से लाया



गया है। स्वामी के आभूषण और पोशाक बुंदेलखंडी शैली को दर्शाते हैं। मंदिर में बुंदेला मंदिरों की सभी स्थापत्य विशेषताएं हैं, जिसमें एक नट मंडप, भोग मंडप और प्रदक्षिणा मार्ग शामिल हैं।

अजयगढ़ किला— अजयगढ़ का किला पन्ना जिले में स्थित एक प्राचीन किला है। यह एक तिकोनी पहाड़ी पर बना हुआ है। अजय गढ़ के किले तक सीढ़ियों से



आना जाना पड़ता है। यह किला जंगल में स्थित है। अजय गढ़ किले के गेट में नक्काशी की गई है, जो बहुत सुंदर है। किले के अंदर रंग महल देखने के लिए मिलता है। रंग महल के पास में ही 2 तालाब हैं। इन तालाबों को गंगा और जमुना के नाम से जाना जाता है। यह महल बुंदेला शासकों के द्वारा बनाया गया था। इस महल को कोई भी जीत नहीं सकता है, इसलिए इस महल को अजय गढ़ किले के नाम से जाना जाता है।



सागर

विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं के बीच और मध्य प्रदेश के उत्तर मध्य में स्थित आज का सागर जिला और इसके आस-पास का यह संपूर्ण क्षेत्र आमतौर पर बुंदेलखंड के रूप में जाना जाता है। सागर का इतिहास सन् 1660 से आरंभ होता है, जब हुसैनशाह ने तालाब के किनारे स्थित वर्तमान किले के स्थान पर एक छोटे किले का निर्माण करवा कर उस के पास परकोटा नाम का गांव बसाया था। निहालशाह के वंशज ऊदनशाह द्वारा बसाया गया वही छोटा सा गांव आज सागर के नाम से जाना जाता है। वर्तमान किला और उसके अंदर एक बस्ती का निर्माण पेशवा के एक अधिकारी गोविंदराव पंडित ने कराया था। माना जाता है कि यहाँ का नाम "सागर" शहर के एक विशाल सरोवर के किनारे बसने के कारण पड़ा। सागर जिले में स्थित एरण कस्बे से प्राप्त कई प्राचीन और ऐतिहासिक व पुरातात्विक अवशेषों से यह ज्ञात होता है कि ईसा से भी पहले यह स्थान आबाद हुआ करता था। एरण के बारे में प्रमुख तौर पर प्राप्त जानकारी से यह सिद्ध होता है कि गुप्तकाल के दौरान यहां बहुत ही महत्वपूर्ण और वैभवशाली नगर हुआ करता था। जिले में मुख्य रूप से हिन्दी भाषा बोली जाती है। सागर के लोगों को नृत्य और गायन कला विरासत में मिली है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

लाखा बंजारा झील या सागर झील— सागर झील नगर के दक्षिणी-पूर्वी भाग की पहाड़ियों के मध्य स्थित है, जो पश्चिमी पार्श्व में दक्षिणी-उत्तरी पहाड़ियों के पठार में एक छोटा-सा बाँध बनाकर तैयार की गई थी।



वर्तमान में तालाब (झील) के चारों ओर की पहाड़ियों के बस्ती बस चुकी है। वैसे सम्पूर्ण नगर झील के चारों ओर की पहाड़ियों, टौरियों पर बसा हुआ है। प्रत्येक मुहल्ला टौरी (टौरियों) पर बसा होने से टौरी नाम-शनीचरी टौरी, इतवारी टौरी, बुधवारी टौरी, परकोटा आदि से जाना जाता रहा है। ऊँची-नीची टौरियों की चढ़ाईयाँ

चढ़ते-उतरते मुहल्ला दर मुहल्ला आते-जाते रहे हैं। इस झील का मनोरम दृश्य देखते ही बनता है और इसी कारण से यह पर्यटकों की पसंदीदा जगह है।

खिमलासा का किला— अपने समृद्ध गौरवमयी इतिहास को समेटे खिमलासा के किले में प्रवेश द्वार से लेकर अंदर के सभी भवन— मंदिर, मस्जिद, बावड़ी आज भी काफी आकर्षक एवं दर्शनीय हैं। उल्लेखों के मुताबिक यह नगर पहले क्षेमोल्लास के नाम से जाना जाता था। फिर धीरे-धीरे कमलासा और फिर खिमलासा हो गया। कमलासा नाम के पीछे वजह यह



114
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

रही कि यहां कमल के फूलों की खेती अत्याधिक मात्रा में हुआ करती थी। खिमलासा की संरचना कमल के फूल की तरह है। चारो तरफ किले की दीवार से घिरी हुई बस्ती ऊपर से देखने पर कमल के फूल के समान प्रतीत होती है। समृद्ध इतिहास, पुरातात्विक साक्ष्यों को सहेजे मूक किले के दरवाजे, प्राचीन तोप, इमारतें शिलालेख, कलाकृतियां, चाहरदीवारी, बुर्जे, बावड़ी, कुंड, शीश महल पुरातात्विक स्मृतियां खंडहर के रूप में आज संरक्षण की राह देख रहे हैं।

नौरादेही संरक्षित वन और अभ्यारण— अपनी जैव विविधता के कारण नौरादेही वन्य जीव अभ्यारण्य का स्थान सबसे अलग है। नौरादेही अभ्यारण्य की स्थापना सन् 1975 में की गई थी। सागर, दमोह और नरसिंहपुर जिलों में फैले इस अभ्यारण्य में ट्रेकिंग, एडवेंचर और वाइल्ड सफारी का आनंद लिया जा सकता है। यह करीब 1200 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है। इस अभ्यारण्य में वन्यजीवों की भरमार है, जिनमें तेंदुआ मुख्य है। एक समय यहां कई बाघ भी पाए जाते थे लेकिन उचित संरक्षण नहीं मिलने के कारण अब वे लुप्त प्राय हो चुके हैं। तेंदुआ भी इसी हथ्र की ओर अग्रसर है। चिंकारा, हिरन, नीलगाय, सियार, भेड़िया, जंगली कुत्ता, रीछ, मगर, सांभर, चीतल तथा कई अन्य वन्य जीव इस क्षेत्र में पाए जाते हैं।

राहतगढ़ जलप्रपात— राहतगढ़ जलप्रपात या भालकुंड जलप्रपात सागर शहर में स्थित एक दर्शनीय स्थल है। यह खूबसूरत झरना है। यह झरना सागर जिले के राहतगढ़ नगर में जंगलों के बीच में स्थित है। झरने तक पहुंचने का कच्चा रास्ता है। झरना बहुत



खूबसूरत लगता है। बरसात में चट्टानों से बहता हुआ पानी बहुत ही मनोरम दिखता है।

राहतगढ़ का किला— राहतगढ़ का किला सागर शहर में स्थित एक प्राचीन ऐतिहासिक किला है। यहाँ से राहतगढ़ नगर का बहुत ही खूबसूरत दृश्य देखने के लिए मिलता है। यह किला अब खंडहर अवस्था में है। इस किले में एक बहुत ही मनोरम कुंड है जिसका पानी



बहुत स्वच्छ एवं निर्मल है जिसमें विविध प्रकार की मछलियाँ देखने को मिलती हैं। यह कुंड काफी गहरा है। इस किले में एक रंग महल भी है जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। यहां पर एक फांसी घर भी है, जहाँ पर लोगों को फांसी दी जाती थी।



टीकमगढ़

टीकमगढ़ ज़िला सागर संभाग के अन्तर्गत आता है। शहर का मूल नाम टिहरी था। सन् 1783 में ओरछा के शासक विक्रमाजीत ने अपनी राजधानी को ओरछा से टिहरी स्थानांतरित कर दिया और इसका नाम बदलकर टीकमगढ़ (टीकम भगवान कृष्ण के नामों में से एक) रखा। इस जिले में मुख्यतः हिन्दी बोली जाती है। इसके अतिरिक्त भारिया, जो एक द्रविड़ भाषा है, भी बोली जाती है। टीकमगढ़ में कुछ दर्शनीय स्थल हैं जो हमें टीकमगढ़ आने के लिए आमंत्रण देते हैं।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कुंडेश्वर— टीकमगढ़ शहर के दक्षिण में जमदार नदी के किनारे स्थित यह स्थान कुंडदेव महादेव मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि शिवलिंग प्राकृतिक रूप से एक कुंड से निकला है और ऐसी भी मान्यता है कि यह शिवलिंग प्रतिवर्ष एक चावल के दाने



के बराबर बढ़ता है। इसके दक्षिण में सुंदर पिकनिक स्थल है जिसे 'बैरीघर' के नाम से जाना जाता है और 'उषा वाटर फॉल' के नाम से जाना जाने वाला एक सुंदर झरना भी है। कुंडेश्वर गांव में ऐकरोलॉजिकल म्यूजियम और विनोबा संस्थान भी है।

अहार जी — बल्देवगढ़ तहसील का एक गाँव, अहार



टीकमगढ़—छतरपुर मार्ग के किनारे स्थित एक पुराना गाँव है, जो कभी एक महत्वपूर्ण जैन केन्द्र था। कई खंडहर, पुरानी छवियाँ और मंदिर यहाँ स्थित हैं। गाँव में तीन पुराने जैन मंदिर हैं, जिनमें से एक मंदिर में शांतिनाथ की एक छवि है, जो करीब 20 फीट ऊँची है।

पपोरा जी — टीकमगढ़ शहर के एक पुराने गाँव में यह एक प्रसिद्ध जैन तीर्थस्थल है जहाँ बड़ी संख्या में जैन श्रद्धालु दर्शनों के लिए आते हैं। गाँव में 108 पुराने जैन मंदिर हैं। चौबीस तीर्थकरों के प्रसिद्ध जैन मंदिर भक्तों



116
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

की आस्था का मुख्य आकर्षण है। यहाँ प्रतिवर्ष एक जैन मेला कार्तिका सुदी पूर्णिमा के महीने में ट्रस्ट द्वारा प्रबंधित किया जाता है।



बल्देवगढ़ — बल्देवगढ़ नगर टीकमगढ़ छतरपुर सड़क पर टीकमगढ़ से 26 किलोमीटर दूर स्थित है। खूबसूरत ग्वाल सागर कुंड के ऊपर बना पत्थर का यह विशाल किला यहाँ का मुख्य आकर्षण है। किले में प्रवेश

हेतु सात द्वार बनाए गए थे, जो सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत मजबूत थे। एक पुरानी और विशाल बंदूक आज भी किले में देखी जा सकती है। यहाँ पर एक बड़ी तोप भी है, जिसका नाम गर्भगिरावनी तोप थी, क्योंकि कहा जाता है कि युद्ध के समय जब यह तोप चलती थी, तब इसके वेग से गर्भवती माताओं के गर्भ गिर जाते थे। कुछ अन्य छोटी तोपें इनके ऐतिहासिक महत्व एवं सुरक्षा को देखते हुए भोपाल के म्यूजियम में पहुँचा दी गई हैं। किले के दक्षिणी छोर पर तालाब के तट पर खंडहर होते हुए हिस्से में अत्यंत प्राचीन बलदेव जी का मंदिर है जिनके नाम से उसका नाम बल्देवगढ़ पड़ा। किले के ऊपरी हिस्से में सात मढ़ियाँ बनी हुई हैं, जिनसे झाँकने पर चारों ओर का नजारा लिया जा सकता है। यहाँ से चार किलोमीटर दूर टीकमगढ़ रोड पर विंध्यवासिनी देवी मंदिर भी बल्देवगढ़ का लोकप्रिय मंदिर है।



117
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

आगर मालवा

आगर मालवा जिले का क्रमबद्ध इतिहास 4000 वर्ष पूर्व के पुरातत्वीय अवशेष मिलने के साथ आरम्भ होता है। आगर की स्थापना राजा आगरिया भील ने लगभग 2072 वर्ष पहले की थी। राजा आगरिया भील के समय आगर का स्वर्णिम इतिहास था, यह क्षेत्र हर प्रकार से विकसित था। आगर नगर का इतिहास प्रागैतिहासिक काल के आरम्भ से शुरू होता है। यहाँ लाल घाटी तथा समीपवर्ती क्षेत्र में गोलाश्म, मध्यप्रदेश व उत्तर-पूर्वाश्म उपकरण प्राप्त होते हैं। परमार काल में इस क्षेत्र का महत्व अक्षुण्य व रेखांकनीय रहा है, जिसके प्रमाण में यहाँ से प्राप्त परमारकालीन प्रतिमाएँ हैं। परमार काल में इसका सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्व था।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

बैजनाथ महादेव मंदिर— विश्व के शिव मंदिरों में आगर का बाबा बैजनाथ महादेव मंदिर एकमात्र ऐसा



मंदिर है, जिसका जीर्णोधार वहाँ की चमत्कारिक गाथाओं से प्रभावित हो अंग्रेज शासनकाल में अंग्रेज कर्नल मार्टिन ने 131 वर्ष पूर्व करवाया था। तभी से निरंतर मंदिर में विकास कार्य प्रगति पर हैं। मालवा क्षेत्र में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जो बैजनाथ महादेव मंदिर की चमत्कारी घटनाओं और पौराणिक

इतिहास की जानकारी न रखता हो। नगर के उत्तर में लगभग 4 किलोमीटर दूर स्थित यह मंदिर प्राचीन और विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ नगर ही नहीं आस पास के ग्रामीण अंचलों सहित महानगरों से भी श्रद्धालु बड़ी संख्या में आते हैं। मंदिर परिसर में 130 वर्षों से प्रतिवर्ष दो बार क्रमशः चैत्र और कार्तिक में पारंपरिक रूप से मेला भी लगता है।

पंच देहरिया महादेव मंदिर— क्षेत्र के पश्चिम में स्थित पंच देहरिया महादेव मंदिर स्थानीय स्तर पर अति लोकप्रिय है। कहा जाता है नगर से 10 किलोमीटर दूर विध्यांचल पर्वत श्रृंखला पर पांडवों द्वारा स्थापित प्राचीन पंच देहरिया महादेव मंदिर स्थित है। श्रावण मास के दौरान यहाँ दूर-दूर से साधु संत आकर तपस्या करते हैं। यह घटोत्कच की जन्म स्थली होने के कारण हजारों श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। इस मंदिर का महा शिवपुराण में भी उल्लेख है। प्रतिवर्ष धार्मिक संगठनों द्वारा यहाँ पर अन्नकूट, भंडारा, भजन संध्या, जैसे धार्मिक आयोजन किये जाते हैं।



देवास

देवास एक महत्वपूर्ण जिला है। यह इन्दौर से लगभग 35 कि.मी. उत्तर में स्थित है। एक मान्यता के अनुसार देवास का नाम, यहाँ पहाड़ी पर देवी वासिनी के स्थित होने के कारण देवास पड़ा था, जिसे स्थानीय भाषा में टेकरी कहा जाता है। इस टेकरी पर देवी तुलजा भवानी, देवी चामुंडा एवं देवी कालिका मंदिर स्थित हैं जो विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार देवास शब्द का निर्माण दो शब्दों यथा “देव” और “वास” के मेल से बना है, जिसका अर्थ है देवों का वास, अर्थात् देवों के वास होने के कारण इस स्थान का नाम देवास पड़ा। वर्तमान में जिला मुख्यालय एक प्रमुख औद्योगिक शहर है जहाँ छोटी बड़ी कई औद्योगिक इकाइयां स्थित हैं।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

देवास वाली माता जी का मंदिर— देवास में स्थित माता मंदिर को देवास माता मंदिर कहा जाता है। टेकरी पर स्थित माँ भवानी का यह मंदिर बेहद प्रसिद्ध है, यहां मंदिर में दो देवी विराजमान है जिनमें एक को तुलजा



भवानी और दूसरी को चामुंडा देवी के नाम से जाना जाता है। तुलजा भवानी को छोटी मां और चामुंडा देवी को बड़ी मां भी कहा जाता है। यहां के स्थानीय लोगों का कहना है कि बड़ी मां और छोटी मां के बीच

बहनों का रिश्ता था। एक बार दोनों के बीच किसी बात पर लड़ाई हो गई थी। विवाद के चलते दोनों बहनें अपना स्थान छोड़ कर जाने लगीं। बताया जाता है कि बड़ी मां क्रोधित होकर पाताल में समाने लगीं और छोटी टेकरी छोड़कर जाने लगीं। दोनों माताओं को क्रोधित देखकर हनुमान जी और भैरोबाबा ने उनसे क्रोध शांत

करने की विनती की लेकिन तब तक बड़ी देवी का आधा शरीर पाताल में समा चुका था और वो ऐसी ही स्थिति में टेकरी पर रुक गई। देवास माता मंदिर को 52 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। बताया जाता है कि देश के अन्य शक्तिपीठों पर माता के शरीर के भाग गिरे थे लेकिन यहाँ टेकरी पर माता का रुधिर गिरा था, जिसके कारण मां चामुंडा देवी यहां पर प्रकट हुई थीं।

मीठा तालाब — मीठा तालाब देवास में घूमने की सबसे अच्छी जगह है। यह तालाब बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है। इस तालाब के पास में एक बाग भी बना हुआ है। यह बाग मध्य प्रदेश पर्यटन की तरफ से प्रबंधित किया जाता है। यह बाग बहुत सुंदर है।



पुष्पगिरी तीर्थ देवास— पुष्पगिरी तीर्थ देवास जिले के पास में स्थित एक मुख्य पर्यटन स्थल है। यह जैन धार्मिक स्थल है। पुष्पगिरी जैन तीर्थ देवास से करीब 20 किलोमीटर दूर है। यह जैन तीर्थ देवास भोपाल राजमार्ग में स्थित है। यहां पर पारसनाथ भगवान जी का मंदिर और पदम प्रभु जैन मंदिर है। यह मंदिर और पारसनाथ भगवान और पदम प्रभु की मूर्तियाँ बहुत ही सुंदर लगती हैं। इन मंदिरों में पत्थरों पर बहुत ही सुंदर कारीगरी की गई है।

कावड़िया हिल्स— कावड़िया पहाड़ी देवास जिले में स्थित एक अद्भुत स्थल है। यहां पर हेक्सागोनल शेप की बहुत सारी चट्टाने देखने के लिये मिलती हैं जो प्राकृतिक रूप से बनी हुई है और बहुत ही सुंदर लगती

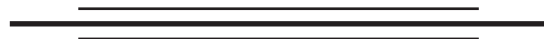


हैं। यह चट्टानें पूरी पहाड़ी पर फैली हुई हैं। कावड़िया हिल्स देवास जिले में पोटलागांव से 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। वस्तुतः ये ज्वालामुखी विस्फोट से निर्मित हुयी हैं। इन पथरीले स्तम्भों से धातुओं के समान ध्वनि भी निकलती है।

पवार छतरी— पवार छतरी देवास शहर का एक ऐतिहासिक स्थल है। यह जगह देवास शहर में मीठा



तालाब के पास में स्थित है। यहां पर प्राचीन छतरियां देखने के लिए मिलती हैं। यह छतरी बहुत सुंदर लगती है। ये छतरियां मराठा स्थापत्य का सुन्दर नमूना है। छतरियों का बाहरी स्वरूप भव्य है परन्तु, भीतरी हिस्से में बहुत कारीगरी की गई है। ये छतरियां पूर्व शासकों के कला प्रेमी स्वरूप को प्रदर्शित करती है।



120
गोवाद्रि

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

मंदसौर

पुरातात्विक और ऐतिहासिक विरासत को संजोए उत्तरी मध्य प्रदेश का मंदसौर एक खूबसूरत प्राचीन शहर है, जो अपनी ऐतिहासिक धरोहरों के साथ अपनी प्राकृतिक खूबसूरती के लिए भी जाना जाता है। मंदसौर मालवा के पठार पर स्थित है। लगभग 5530 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला यह जिला ऐतिहासिक भ्रमण के लिए एक खास विकल्प है। अतीत पर नजर डालें तो पता चलता है कि इस शहर को पहले दशपुर के नाम से संबोधित किया जाता था, जो पहले ग्वालियर रियासत का हिस्सा था। भारत में इस जिले में अफीम का सबसे बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के प्रमुख दर्शनीय स्थल

पशुपतिनाथ मंदिर— शिवाना नदी के तट पर स्थित पशुपतिनाथ मंदिर मंदसौर के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह मंदिर मंदसौर जिले का प्रमुख आकर्षण है। संभवतः पूरे विश्व की एकमात्र अष्टमुखी भगवान शिव की प्रतिमा वाला पशुपतिनाथ मंदिर मंदसौर जिले की पहचान है। इस मंदिर में विशेष शिवलिंग की पूजा की जाती है, जिसमें भगवान शिव के आठ मुख हैं। प्रतिमा के चार मुख शिव के बाल्यकाल, युवावस्था, अधेड़ावस्था



एवं वृद्धावस्था को प्रदर्शित करते हैं। यह हिन्दू वास्तुकला का आम रूप है, जहां मंदिर की चारों दिशाओं में चार दरवाजे हैं। मंदिर का प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा की ओर खुलता है। यह एक प्रसिद्ध मंदिर है जहां दर्शन के लिए दूरदराज से श्रद्धालुओं और पर्यटकों का आगमन होता है। ऐसा माना जाता है कि भगवान

पशुपतिनाथ की यह मूर्ति शिवना नदी से ही निकली है।

मंदसौर का किला— मंदसौर का प्राचीन किला ऐतिहासिक रूप से काफी महत्व रखता है। इस किले को बहुत से लोग अलाउद्दीन खिलजी का किला मानते हैं, किन्तु वास्तव में इस किले का निर्माण हुशंगशाह



गौरी ने अपने राज्य की सुरक्षा के दृष्टिकोण से करवाया था। इस किले में कुल 12 दरवाजे हैं जो इसकी शान में चार चांद लगा देते हैं। वर्तमान में यह किला एक खंडहर के रूप में यहां मौजूद है।

धर्मराजेश्वर मंदिर— यह मंदिर मंदसौर से 105 किलोमीटर दूर सीतामऊ तहसील में स्थित है। यह बाबा भोलेनाथ का काफी प्राचीन मंदिर है। लोगों का कहना है कि यहां मूर्ति साल भर में 1 इंच बढ़ती है। इस



मंदिर की देखभाल मध्य प्रदेश सरकार द्वारा की जा रही है। इस मंदिर का निर्माण तकरीबन उस समय किया गया था जिस समय महाभारत के पांडवों का



अज्ञातवास चल रहा था। यह मंदिर पूर्ण रूप से एक बड़ी सी चट्टान को काटकर बनाया गया है। इस मंदिर में भगवान शिव शिवलिंग रूप में विराजमान है। यहां पर बौद्ध धर्म के भी कई चिन्ह देखने को मिलते हैं, इसलिए उन्हें बौद्ध गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर जमीन की तल में बना हुआ है। लोगों का मानना है कि इस गुफा और मंदिर का निर्माण भीम ने करवाया था और उन्होंने अपना अज्ञातवास का कुछ समय यहीं व्यतीत किया था।

हिंगलाजगढ़ किला भानपुरा — हिंगलाजगढ़ किला एक प्राचीन किला है और मंदसौर का एक मुख्य पर्यटन



स्थल है यह किला घने जंगलों के बीच में मंदसौर जिले के भानपुर तहसील के नवाली गांव के पास स्थित है। यह किला अपनी मूर्तिकला और हिंगलाज माता मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। इस किले में विभिन्न विधियों की कलात्मक मूर्तियाँ उपलब्ध है। यह किला मंदसौर शहर से 165 किमी. और भानपुरा शहर से 26 किमी. दूर स्थित है। इस किले में अलग-अलग राजाओं ने राज किया है। यहां पर हिंगलाज माता का मंदिर, राम मंदिर और शिव मंदिर देखने के लिए मिल जाएंगे, जो होलकर शासन के दौरान बनाए गए थे।

तेलिया तालाब— यह तालाब मंदसौर के प्राकृतिक आकर्षणों में से एक है। अपने शांतिप्रिय माहौल के साथ यह मंदसौर के सबसे आरामदायक स्थलों में गिना जाता है। यह स्थल पारिवारिक भ्रमण के लिए काफी खास है। पार्क के पास एक हिंदू मंदिर भी स्थित है, इस मंदिर के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं के साथ-साथ पर्यटक भी आते हैं। सुबह और शाम का समय यहां काफी खास होता है। प्रकृति का कुछ अलग अनुभव करने के लिए यहां की सैर का आनंद लिया जा सकता है।

नटनागर शोध संस्थान— मंदसौर जिले की सीतामऊ तहसील स्थित “श्री नटनागर शोध संस्थान” नगर के “ज्ञान के तीर्थ” अर्थात् महत्वपूर्ण शोध केन्द्र के रूप में देश भर में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इसकी स्थापना सन् 1974 में हुई थी।

इसके अतिरिक्त सौधवी में यशोधर्मन के स्तंभलेख एवं मुख्यतः मालवी शैली में चित्रित भित्ति चित्र अत्यंत मोहक एवं आकर्षक हैं और इन्हीं भित्तिचित्रों की महत्ता के कारण मंदसौर को “कलातीर्थ” भी कहा जाता है।



नीमच

नीमच को 31 मई 1998 में मध्य प्रदेश का स्वतंत्र जिला घोषित किया गया था। प्रारंभ में यह मंदसौर जिले का हिस्सा था। ब्रिटिश शासन के दौरान यहां एक छावनी स्थापित की गई थी। आजादी के बाद छावनी को भारत की पैरा मिलिट्री सेना की छावनी में परिवर्तित कर दिया गया और इस प्रकार ये आज केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की जन्मस्थली के रूप में भी जाना जाता है। मंदसौर के समान यहां भी बड़े पैमाने पर अफीम का उत्पादन होता है। नीमच को आज हम जिस नाम से जानते हैं वो नाम अंग्रेजी की ही देन है, उत्तर भारत की महत्वपूर्ण सैन्य छावनी होने के कारण अंग्रेजों ने इसे NIMACH यानी नॉर्थ इंडिया माउन्टेड आर्टिलरी एंड कैवेलरी हेडक्वार्टर्स नाम दिया था। स्वतंत्रता पाने के बाद भारत सरकार ने इस नाम में स्पेलिंग को छोड़ अन्य कोई बदलाव नहीं किया।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के प्रमुख दर्शनीय स्थल

गांधी सागर बांध— गांधी सागर बांध नीमच जिले के पास स्थित एक महत्वपूर्ण आकर्षण स्थल है। गांधी सागर बांध चंबल नदी पर बना हुआ सबसे बड़ा बांध है और चंबल नदी मध्य प्रदेश की महत्वपूर्ण नदी है। यह बांध बहुत सुंदर एवं विशाल है। गांधी सागर बांध चंबल घाटी परियोजना के अंतर्गत आता है। यह बांध मध्य प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर बनाया गया है। इस बांध के पानी और बिजली का बंटवारा आधा-आधा दोनों राज्यों में होता है। यहां पर हाइड्रो पावर प्लांट भी



बनाया गया है, जिससे 115 मेगावट बिजली बनाई जाती है। इस बांध का निर्माण 1953 में शुरू हुआ था और 1960 में पूर्ण हुआ था। बरसात के समय गांधी सागर बांध पानी से पूरी तरह भरा होता है। इस बांध में 19 गेट हैं। यह गेट बरसात के समय खोले जाते हैं, जिससे अपार जल राशि निकलती है। इस दृश्य को

देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग बरसात के समय यहां पर आते हैं। इस बांध का उद्घाटन सन् 1960 में प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया था।

भादवा माता मंदिर — यह मंदिर एक अत्यंत पवित्र स्थान है जो पूरे राज्य में प्रसिद्ध है। इस मंदिर पर स्थानीय लोगों की बहुत मान्यता है। यहाँ साप्ताहिक या धार्मिक छुट्टियों पर भारी भीड़ होती है। स्थानीय लोगों में भादवा माता के प्रति बहुत आस्था है क्योंकि उनका मानना है कि मंदिर क्षेत्र में स्थित कुएं के जल से स्नान



करने से लकवा और पोलियो जैसे कष्टकारी रोगों से छुटकारा मिल जाता है। इस मंदिर का प्रमुख त्योहार नवरात्रि है। उस समय पुजारी माता की मूर्ति को सुंदर कपड़ों और गहनों से सजाते हैं।



123
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

रतलाम

रतलाम जिला मध्य प्रदेश की पश्चिमी सीमा पर मालवा के पठार पर स्थित है। रतलाम के पहले राजा महाराजा रतन सिंह थे। महाराजा रतनसिंह और उनके पुत्र रामसिंह के नामों के संयोग से शहर का नाम रतनराम हुआ, जो बाद में अपभ्रंशों के रूप में बदलते हुए क्रमशः रतराम और फिर रतलाम के रूप में जाना जाने लगा। यह नगर सेव, सोना, सट्टा, मावा, साड़ी तथा समोसा, कचौरी, दाल बाटी के लिए प्रसिद्ध है। रतलाम की सबसे ज्यादा प्रसिद्ध रतलामी सेव है, जिसका पुराना नाम भीलड़ी सेव था, सेव की खोज भील जनजाति ने की थी।

सीमावर्ती जिला होने के कारण जिले की संस्कृति में राजस्थान, गुजरात तथा मालवा की लोक संस्कृति का संगम दिखाई देता है। रतलाम जिला विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण है।

ऐतिहासिक / पुरातात्विक / सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

कालिका माता मंदिर — यह मंदिर मुख्य रतलाम शहर में स्थित है। कालिका माता मंदिर रतलाम शहर का एक प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर में नवरात्रि के समय



10 दिन का मेला आयोजित किया जाता है, जिसमें शहर के लोग आते हैं। नवरात्रि में यहां पर गरबे का आयोजन होता है। यह मंदिर बहुत प्राचीन है और कहा जाता है कि इस मंदिर का संबंध राजघराने से रहा है।

धोलावाड़ बांध — धोलावाड़ बांध रतलाम में स्थित प्रमुख आकर्षणों में से एक है, जो रतलाम के पश्चिम की ओर 25 किलोमीटर दूर है। यह बांध सरोज सरोवर बांध के रूप में भी जाना जाता है। धोलावाड़ बांध, रावटी



शहर से सड़क मार्ग से 6 किलोमीटर दूर है। निर्मल वातावरण के बीच बांध स्थापित किया गया है और आगंतुक को शांत वातावरण प्रस्तुत करता है जो बेहद मनभावन है। धोलावाड़ बांध का दौरा करते समय क्षितिज पर सूर्य की स्थापना के दृश्य का आनंद लेने के लिए सूर्यास्त तक रुकना पड़ता है यह दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है।

कीर्ति स्तंभ— यह स्तंभ रतलाम के सैलाना में स्थित है। इस स्तंभ का निर्माण तत्कालीन नरेश जसवंत सिंह द्वारा 1859 से 1919 के बीच करवाया गया था। स्तंभ में ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं। इस स्तंभ के ऊपर जाकर चारों तरफ का खूबसूरत नजारा देखकर



124
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



आनंदित हो सकते हैं। यह कीर्ति स्तंभ पत्थर व चूना से बना हुआ है। इसके ऊपर से आसपास का नज़ारा बहुत ही मनोरम दिखाई पड़ता है एवं पर्यटकों को एक आश्चर्यजनक सुकून की अनुभूति होती है।

कैक्टस गार्डन — कैक्टस गार्डन रतलाम शहर का एक प्रमुख आकर्षण है। यहां कैक्टस की अनेकों प्रजातियाँ देखने के लिए मिलती हैं। रतलाम शहर से करीब 22 किलोमीटर दूर सैलाना में स्थित यह गार्डन



एशिया का सबसे बड़ा कैक्टस गार्डन है। यहाँ पर एक राजमहल भी देखने के लिए मिलता है। इस गार्डन में कैक्टस के जो प्लांट लगे हैं, उन्हें बाहर से लाया गया है। इनमें से कुछ प्रजाति भारतीय हैं। यह कैक्टस गार्डन

बहुत प्राचीन है और इस कैक्टस गार्डन की स्थापना यहाँ के राजा दिग्विजय सिंह द्वारा की गई थी।

श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर— श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर मध्य प्रदेश और राजस्थान के बार्डर पर स्थित है। यह मंदिर बहुत खूबसूरत और बहुत भव्य है। यह जैन तीर्थ स्थल है। यहाँ पर 23वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की बहुत ही भव्य मूर्ति हैं। यह



मूर्ति प्राचीन (लगभग 2800 साल पुरानी) है। यह मंदिर सफेद संगमरमर से बना हुआ है और बहुत भव्य लगता है। मंदिर का प्रवेश द्वार भी बहुत खूबसूरत है।



125
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

शाजापुर

शाजापुर जिला पश्चिम में उज्जैन, दक्षिण में देवास और सीहोर, पूर्व में राजगढ़ तथा उत्तर में राजस्थान के झालावाड़ जिले से घिरा हुआ है। शाजापुर उज्जैन संभाग में आता है। ऐसा माना जाता है कि मुगल बादशाह शाहजहां सन् 1640 में यहां ठहरा था, जिसके कारण इस जगह का नाम शाहजहांपुर रखा गया था किन्तु, समय के साथ इसका नाम शाहजहांपुर से शाजापुर हो गया। यह जिला पांडवकालीन युग से जुड़ा है। पांडवों ने अज्ञातवास का कुछ समय पांडुखोरा में भी बिताया था। यह स्थल शहर के लालघाटी के समीप ही लगा हुआ है। यहां प्राचीन शिव मंदिर है। प्राकृतिक सुंदरता से अच्छादित यह स्थल अत्यंत रमणीय है।

ऐतिहासिक/पुरातात्विक/सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

पार्श्वनाथ मंदिर— यह मंदिर भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। इस मंदिर का क्षेत्रफल जैन समुदाय के दो पंथ दिगंबर एवं श्वेताम्बर तथा वैष्णवी देवी के मंदिरों के क्षेत्रफल के आधे के बराबर है। मुख्य मंदिर में पार्श्वनाथ



की अलौकिक प्रतिमा स्थित है, जिसके दर्शन मात्र से मन को अपार शांति की अनुभूति होती है। इस मंदिर का जैन समुदाय के दोनों पंथों यथा श्वेताम्बर और दिगम्बर, के लिए महत्व है। यह जैन तीर्थ स्थल करीब 2000 साल पुराना है। यह कहा जाता है कि इस मंदिर के क्षेत्र में चोरी अंशभव है।

बगलामुखी का प्राचीन मंदिर— प्राचीन तंत्र ग्रंथों में दस महाविद्याओं का उल्लेख मिलता है। उनमें से एक है बगलामुखी। मां भगवती बगलामुखी का महत्व समस्त देवियों में सबसे विशिष्ट है। विश्व में इनके सिर्फ तीन ही महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिर हैं, जिन्हें सिद्धपीठ कहा जाता है। उनमें से एक है शाजापुर के नलखेड़ा में स्थित 'मां बगलामुखी मंदिर।' द्वापर युगीन यह मंदिर अत्यंत चमत्कारिक है। यहां देशभर से शैव और शाक्त



मार्गी साधु—संत तांत्रिक अनुष्ठान के लिए आते रहते हैं। बगलामुखी माता मूलतः तंत्र की देवी है, इसलिए



126
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

यहां पर तांत्रिक अनुष्ठानों का महत्व अधिक है। इस मंदिर की स्थापना महाभारत में विजय पाने के लिए भगवान कृष्ण के निर्देश पर महाराजा युधिष्ठिर ने की थी। मान्यता यह भी है कि यहां की बगलामुखी प्रतिमा स्वयंभू है। यह बहुत ही प्राचीन मंदिर है। सन् 1815 में इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया था। इस मंदिर में लोग अपनी मनोकामना पूरी करने या किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के लिए यज्ञ, हवन और पूजन-पाठ कराते हैं।

पुरातत्व संग्रहालय— शाजापुर जिला पुरातत्व संग्रहालय मूलतः शाजापुर मुख्यालय पर स्थित है। इसकी स्थापना मध्य प्रदेश पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग तथा जिला पुरातत्व संघ

शाजापुर के संयुक्त तत्वाधान में की गई थी। इस संग्रहालय का लोकार्पण प्रसिद्ध पुरातत्वविद माननीय डॉ. हरिहर निवास त्रिवेदी द्वारा गाँधी जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 1990 को किया गया था। तब इस जिले का क्षेत्रफल काफी व्यापक था और इसमें वर्तमान आगर जिले का बड़ा भाग भी सम्मिलित था। इस संग्रहालय में इस जिले के विभिन्न स्थलों में पाई गई मूर्तियाँ एवं शिलालेखों के साथ साथ इस क्षेत्र से प्राप्त प्राचीन मुद्राओं, हस्तलिखित ग्रंथों सहित आदिवासी संस्कृति एवं कला के सुन्दर अवशेष प्रदर्शित किये गए हैं, जो आज भी इस क्षेत्र की सम्पूर्ण उन्नत संस्कृति का गौरवगान करते हैं।



127
गोवाद्रि

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

उज्जैन

उज्जैन (उज्जयिनी) क्षिप्रा नदी और मालवा के पठार पर स्थित है। कर्क रेखा उज्जैन से ही गुजरती है, जिसके केन्द्र के रूप में कर्कराजेश्वर मंदिर विद्यमान है। उज्जयिनी की ऐतिहासिकता का प्रमाण 600 वर्ष पूर्व मिलता है। तत्कालीन समय में भारत में जो सोलह जनपद थे उनमें अवंति जनपद भी एक था। अवंति उत्तर एवं दक्षिण दो भागों में विभक्त थी। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैन थी इसीलिए इसे अवंतिका भी कहते हैं।

ऐतिहासिक (पुरातात्विक) सांस्कृतिक महत्व के दर्शनीय स्थल

श्री महाकालेश्वर मंदिर — श्री महाकालेश्वर भारत में बारह प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों में से एक हैं। महाकालेश्वर की मूर्ति दक्षिणमुखी है जो एक अनूठी विशेषता है। कहा जाता है कि ब्राह्मण की तपस्या से खुश होकर भगवान



शिव धरती फाड़ कर महाकाल के रूप में यहां प्रकट हुए थे और राक्षस का वध करके नगर की रक्षा की थी। नगर के सभी भक्तों ने भगवान शिव से उसी स्थान पर हमेशा रहने की प्रार्थना की। भक्तों के प्रार्थना करने पर भगवान शिव अवंतिका में ही महाकाल ज्योतिर्लिंग के रूप में वहीं स्थापित हो गये। महाकाल मंदिर के ऊपर गर्भगृह में ओंकारेश्वर शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित है। गर्भगृह के पश्चिम, उत्तर और पूर्व में गणेश, पार्वती और कार्तिकेय के चित्र स्थापित हैं। दक्षिण में नंदी की प्रतिमा

है। तीसरी मंजिल पर नागचंद्रेश्वर की मूर्ति केवल नागपंचमी के दिन दर्शन के लिए खुली होती है। सामान्यतया सूर्यग्रहण एवं चंद्रग्रहण के समय सारे मंदिर बंद कर दिए जाते हैं परन्तु, महाकाल का मंदिर कभी बंद नहीं होता क्योंकि वो स्वयं कालों के काल माने जाते हैं। माना जाता है कि (अवंतिका) उज्जैन के राजा महाकाल हैं। इसलिए यह धारणा भी है कि जो भी राजा या मंत्री उज्जैन में रात्रि को विश्राम करता है उसे इसका खामियाजा उठाना पड़ता है। इसी डर के चलते कोई भी सत्ताधारी मंत्री/राजा यहाँ रात नहीं गुजारते।

जंतर मंतर— उज्जैन की वेधशाला (जंतर मंतर) क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। जिसका निर्माण ग्रहों का गणित जानने के उद्देश्य से लगभग 300 साल पहले जयपुर के राजा जयसिंह ने करवाया था। वेधशाला को



128
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

जंतर-मंतर तथा यंत्रमहल के नाम से भी जाना जाता है। उज्जैन की वेधशाला में पहले सम्राट यंत्र, नाड़ीवल्लय यंत्र, भित्ति यंत्र, दिगंश यंत्र चार प्रमुख यंत्र थे। तथा बाद में शंकु यंत्र लगाया गया। सूर्य घड़ी से मिलने वाले स्थानीय समय को एक सारणी द्वारा स्टैंडर्ड समय में सम्राट यंत्र द्वारा बदला जाता है। ग्रह नक्षत्रों के दिगंश प्राप्त करने के लिए वेधशाला में दिगंश यंत्र का उपयोग किया जाता है। यह ऐतिहासिक वेधशाला ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जंतर मंतर, महान परिश्रम का परिणाम है जिसने न सिर्फ पुराने समय में खगोलविदों के लिए अनुसंधान केंद्र के रूप में कार्य किया बल्कि, यह आज भी अपने खगोलीय और साथ ही पर्यटन उद्देश्य के लिए कार्य करता है।

भर्तृहरि गुफाएँ — ये गुफाएँ मध्य प्रदेश में उज्जैन शहर के पास शिप्रा नदी के किनारे स्थित हैं। इन गुफाओं के अंदर जाने पर एक अद्भुत अनुभव का अहसास होता है। इस गुफा का नाम महान राजा



विक्रमादित्य के बड़े भाई भर्तृहरि के नाम पर रखा गया है। यह जगह भर्तृहरि की योग पद्धतियों के कारण प्रसिद्ध हुई। यह जगह मध्य प्रदेश पर्यटन मंत्रालय के द्वारा एक सुंदर स्थल माना जाता है।

काल भैरव— काल भैरव मंदिर आज के उज्जैन नगर में स्थित प्राचीन अवंतिका नगरी के क्षेत्र में स्थित है। यह स्थल शिव के उपासकों के कापालिक सम्प्रदाय से



संबंधित है। मंदिर के अंदर काल भैरव की विशाल प्रतिमा है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण प्राचीन काल में राजा भद्रसेन ने कराया था। पुराणों में वर्णित अष्ट भैरव में काल भैरव का स्थान है। भैरवनाथ को उनके मुख से लगा कर मदिरा पिलाई जाती है और ये मदिरा कहाँ जाती है ये आज तक शोध का विषय है परन्तु कहा जाता है कि भैरव नाथ को मदिरापान कराने से भक्त की मनोकामना पूर्ण होती है।

मंगलनाथ मंदिर— पुराणों के अनुसार उज्जैन नगरी को मंगल की जननी कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति जिनकी कुंडली में मंगल दोष रहता है, वे अपने अनिष्ट ग्रहों की शांति के लिए यहाँ पूजा-पाठ करवाने आते हैं। यूँ तो देश में मंगल भगवान के कई मंदिर हैं, लेकिन उज्जैन इनका जन्मस्थान होने के कारण यहाँ की पूजा को



खास महत्व दिया जाता है। कहा जाता है कि यह मंदिर सदियों पुराना है।



वर्ष 2020-2021 में कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों की सूची				
स.क्र.	नाम	स्थाई क्र.	पद	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	श्रीमती लक्ष्मीबाई	10054	एम.टी.एस.	30.04.2020
2.	श्रीमती सुशीला जी नायर	5500	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2020
3.	राम सेवक सिंह	5467	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.06.2020
4.	राजेश कुमार भान	10245	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.09.2020
वर्ष 2020-2021 में कार्यालय में नियुक्त कार्मिकों की सूची				
स.क्र.	नाम	स्थाई क्र.	पद	पदस्थापना
1.	सुश्री साक्षी	11451	लेखापरीक्षक	18.06.2020
2.	अनमोल बघेल	11452	लेखापरीक्षक	19.06.2020
3.	अंकित कुमार गुप्ता	11453	लेखापरीक्षक	22.06.2020
4.	अरविंद कुमार यादव	11454	लेखापरीक्षक	22.06.2020
5.	उदभव कुमार शर्मा	11455	लेखापरीक्षक	23.06.2020
6.	विष्णु मीणा	11456	लेखापरीक्षक	25.06.2020
7.	सुश्री बुलबुल गर्ग	11457	लेखापरीक्षक	01.07.2020
8.	मधाना शिवशंकर रेड्डी	11458	लेखापरीक्षक	01.07.2020
9.	रोहित कुमार	11459	लेखापरीक्षक	03.07.2020
10.	राहुल रंजन	11460	लेखापरीक्षक	03.07.2020
11.	मोहित कुमार	11461	लेखापरीक्षक	03.07.2020
12.	राम प्रकाश मीणा	11462	लेखापरीक्षक	24.08.2020
13.	देवी सिंह मीणा	11463	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	17.08.2020
14.	राहुल झा	11464	लिपिक	15.12.2020
15.	ललित गौड़	11465	लेखापरीक्षक	30.12.2020
वर्ष 2020-21 में कार्य के दौरान असामयिक मृत्यु				
स.क्र.	नाम	स्थाई क्र.	पद	असामयिक मृत्यु दिनांक
1.	महेन्द्र कुमार मीणा	11447	डाटा एंट्री ऑपरेटर (ग्रेड-अ)	26.06.2020
2.	शैलेश कुमार त्रिपाठी	6838	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	29.03.2021

130
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21

आपके अभिमत आपके पत्र...



महोदय,

पत्र क्रमांक: प्रशासन/हिंदी कक्ष/श्रेय/1297, दिनांक 28.01.2021 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका (श्रेय) के 24वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय हैं। विशेष रूप से श्री प्रफुल्ल त्रिपाठी जी द्वारा लिखा गया लेख “सफल जीवन हेतु चार व्यक्तिगत संपदायें” अत्यंत ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के संपादन मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं

भवदीय— वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग, 2 गवर्नमेण्ट प्लेस (पश्चिम बंगाल) कोलकाता-700 001

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र सं. 1251 दिनांक 25.01.2021 के द्वारा, आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका (श्रेय) के 24वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च-स्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री अभिषेक त्रिपाठी का लेख ‘मानवीय परिवर्तन—एक कटाक्ष’, सुश्री आत्मा श्रीवास्तव का लेख ‘मांडु’ बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

श्री भरत प्रताप सिंह सिकरवार की कहानी ‘पत्नी का प्रेम’, सुश्री सुरेश अरोरा की कहानी ‘तारों की छांव में दुर्ग विजय’, सुश्री अनामिका त्रिपाठी की कहानी ‘समझ’ व मनोज मधुकर कस्तूर की कहानी ‘किन्नर’ विशेष रूप से पठनीय हैं। इसके अतिरिक्त सुश्री अर्चना मानव की कविता ‘मानव हूं मानव पर कविता लिखती हूं’, श्री मनोज मधुकर कस्तूर की कविता ‘वो मरती हुई इंसानियत’ व श्री मोहन चन्द्र गुप्ता की कविता ‘पूजा के बारह फूल’ प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया— हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020

131
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'श्रेय' के 24वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका हिंदी के प्रचार में महती भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित की गई सुश्री दीक्षा चौहान की कविता 'घर पे मेरे', सुश्री अर्चना मानव का लेख 'आत्म मंथन', श्री अभिषेक त्रिपाठी का लेख 'मानवीय परिवर्तन—एक कटाक्ष' एवं श्री दीपक देवलिया की कविता 'कृति-4' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

**भवदीय— कल्याण अधिकारी/राजभाषा कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) राजस्थान, जयपुर**

मान्यवार,

सादर नमस्कार।

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन पत्रिका "श्रेय" 24वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।

राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार को समर्पित आपकी पत्रिका में विविध बहुरंगी सामग्रियों का समावेश किया गया है, जो कि अत्यंत उपयोगी, रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार की दिशा में किया गया यह प्रयास निश्चित ही अत्यंत सराहनीय है। प्रकाशित रचनाओं से रचनाकारों के उत्साह एवं मनोबल में अभिवृद्धि होगी एवं सृजनधर्मिता को प्रोत्साहन भी मिलेगा। पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका "श्रेय" हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन की दिशा में सकारात्मक परिणामदायक सिद्ध होगी।

आगामी प्रकाशनों के लिए हार्दिक मंगलकामनाएं।

**भवदीय— सहायक प्रबंधक (संपर्क एवं प्रशासन—राजभाषा)
भिलाई इस्पात संयंत्र**

महोदय

आपके कार्यालय की पत्रिका "श्रेय" के 24वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए बहुत धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ मनमोहक है। पत्रिका की रचनाओं का संकलन प्रशंसनीय है। कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका में चार चाँद लगा रहे हैं। पत्रिका की समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर 'आत्ममंथन', 'किन्नर — एक अभिशाप', 'वो मरती हुई इंसानियत' एवं 'साहब का सत्य से साक्षत्कार' रचनाएं अत्यंत सराहनीय हैं।

पत्रिका की प्रगति की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

**भवदीय— वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा—1) का कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर**

132
गोपाक्षी

**रजत जयंती विशेषांक
2020-21**



महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका “श्रेय” के 24वें अंक की प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है। तद हेतु धन्यवाद। इस अंक में समाविष्ट रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सारी रचनाएँ बहुत पसंद आई हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

**भवदीया— वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-II), ओडिशा, भुवनेश्वर**

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ‘श्रेय’ के 24वें अंक की प्राप्ति हुई है, धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मन को लुभाने वाली हैं। भरत प्रताप सिंह सिकरवार की ‘पत्नी का प्रेम’, श्री हरिओम कुमार की ‘बेटियों का हो कल और आज’, श्री पारस कुमार की ‘अज्ञात शक्ति’ एवं कु. दीक्षा चौहान की ‘घर पे मेरे’ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक को हार्दिक शुभकामनाएं।

**भवदीय— हिन्दी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका “श्रेय” के 24वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ—ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाले हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत—बहुत शुभकामनाएं।

**भवदीय— वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा-II, पश्चिम बंगाल**

133
गोपाद्री

**रजत जयंती विशेषांक
2020-21**



महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका “श्रेय” का चौबीसवाँ अंक (24वाँ) प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ रोचक, उत्कृष्ट और सरल भाषा में हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका में संकलित चित्र और इसकी साज सज्जा भी आकर्षक है। पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय— हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

महोदय/महोदया,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी वार्षिक पत्रिका “श्रेय” के चौबीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का अंक बहुत ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सारगर्भित, उच्च स्तरीय एवं बेमिसाल हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं वो हैं — “सफल जीवन हेतु चार व्यक्तिगत संपदाएँ”, “पत्नी का प्रेम”, “मानव हूँ मानव पर कविता लिखती हूँ”, “जो उत्कृष्ट नहीं है, ईश्वर तक नहीं पहुँच सकता”, एवं “अधूरे खाब हों पूरे” आदि।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हुए कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच भी उपलब्ध करवा रही है। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका “श्रेय” राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका “श्रेय” निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

भवदीय— वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित राजभाषा ‘श्रेय’ के 24वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। आवरण पृष्ठ बहुत सुंदर एवं आकर्षक है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री शाहमीर खान (जल महोत्सव), श्रीमती अर्चना मानव (आत्ममंथन), श्री मनोज मधुकर कस्तूर (वो मरती हुई इंसानियत), श्रीमती सुदेश अरोरा (तारों की छांव में दुर्ग विजय) एवं श्रीमती अनामिका त्रिपाठी (समझ) आदि की रचनाएं काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय— वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी
कार्या. महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम उ.प्र., इलाहाबाद

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका ‘श्रेय’ के 24 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय— वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

134
गोपाद्री

रजत जयंती विशेषांक
2020-21



महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “श्रेय” के 24वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा एवं छायाचित्र अत्यंत सुंदर एवं आकर्षक हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषतः श्री मनोज मधुकर कस्तूर की कहानी ‘किन्नर—एक अभिशाप’, आकाश सिंह की कहानी ‘साहब का सत्य से साक्षात्कार’, हरिओम कुमार की कविता ‘बेटियों का हो कल और आज’ तथा अलका जैन “शरर” की कविता ‘अधूरे ख्वाब हो पूरे’ सराहनीय एवं उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

**भवदीय— वरिष्ठ लेखा अधिकारी प्रशासन
कार्या. प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)—द्वितीय, मध्य प्रदेश
लेखा भवन, झांसी रोड, ग्वालियर— 474002**

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्रांक प्रशासन/हिंदी कक्ष/श्रेय/जावक—1249 दिनांक 25/01/2021 के द्वारा हिंदी पत्रिका ‘श्रेय’ के 24वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज—सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। सुश्री दीक्षा चौहान की रचना ‘घर पे मेरे’, श्रीमती अर्चना मानव की रचना “मानव हूँ, मानव पर कविता लिखती हूँ” एवं श्री मोहन चंद्र गुप्ता की रचना ‘पूजा के बारह फूल’ काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

**भवदीय— वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, बिहार, पटना**

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका “श्रेय” के 24वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज—सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार—प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

**भवदीय— वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर**

135
गोपाद्री

**रजत जयंती विशेषांक
2020-21**



महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'श्रेय' का 24 वाँ अंक प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। श्री धनंजय कुमार द्वारा लिखित आलेख "हिंदी लेखन की सामान्य भ्रांतियाँ/गलतियाँ", सुश्री अर्चना मानव द्वारा लिखित रचना "आत्ममंथन" तथा श्रीमती अनामिका त्रिपाठी द्वारा लिखित रचना "समझ" अत्यधिक प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

**भवदीय— हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक) तमिलनाडु, चैन्नई-18**

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "श्रेय" के 24वाँ अंक प्राप्त हुआ। तद हेतु धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यन्त सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं विशेष रूप से आशुलिपिक सुश्री अर्चना मानव की "मानव हूँ मानव पर कविता लिखती हूँ", श्री अमरेश कुमार (स0लेखा0परि0अधिकारी) की "सहकारी संस्थाएं—उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली", श्रीमती सुरेश अरोरा(माताश्री विनय अरोरा) "तारों की छांव में दुर्ग विजय" आदि बेहद सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

**भवदीय— वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ हिंदी प्रकोष्ठ
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय**



136
गोपाद्री

**रजत जयंती विशेषांक
2020-21**



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

—प्रशस्ति पत्र—

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2019-20 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश का कार्यालय ग्वालियर को तृतीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर

दिनांक— 21.12.2020

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर
एवं प्रधान महालेखाकार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

—प्रशस्ति पत्र—

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2019-20 में विभागीय हिन्दी पत्रिका का वर्ष में एक पत्रिका प्रकाशित करने वाले कार्यालयों में 'श्रेय' के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश का कार्यालय, ग्वालियर को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर

दिनांक— 21.12.2020

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर
एवं प्रधान महालेखाकार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

कार्यालयीन पत्रिका में उत्कृष्ट गद्य लेखन हेतु निम्नलिखित
रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया।

गद्य			
क्र.	नाम	रचना	पुरस्कार
1	अर्चना मानव	आत्ममंथन	प्रथम
2	आकाश सिंह	साहब का सत्य से साक्षात्कार	द्वितीय
3	अभिषेक त्रिपाठी	मानवीय परिवर्तन-एक कटाक्ष	तृतीय



कार्यालयीन पत्रिका में उत्कृष्ट पद्य लेखन हेतु निम्नलिखित
रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया।

पद्य			
क्र.	नाम	रचना	पुरस्कार
1	हरिओम कुमार	बेटियों का हो 'कल' और 'आज'	प्रथम
2	दीपक देवलिया	कृति- 4	द्वितीय
3	दीक्षा चौहान	घर पे मेरे	तृतीय



स्वतंत्रता दिवस



स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर कार्मिकों को संबोधित करते हुये प्रधान महालेखाकार महोदय।



स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर रोशनी से जगमगाता कार्यालय भवन



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पौधा रोपण कार्यक्रम का एक दृश्य



कार्यालय में जिम का उद्घाटन करते हुए प्रधान महालेखाकार श्री डी. साहू।

स्वच्छता पखवाड़ा



ए.पी.एल. क्रिकेट टूर्नामेंट 2021 के विजेता



कार्यालयीन पत्रिका के 24वें अंक का विमोचन



महिला दिवस 2020



कु. पल्लवी प्रसन्नन द्वारा महिला दिवस पर सांस्कृतिक प्रस्तुति



डॉ. भूमिका तिवारी, महिला दिवस पर सम्बोधित करती हुई





स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर
माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय श्री डी. साहू
राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए



ग्वालियर किला